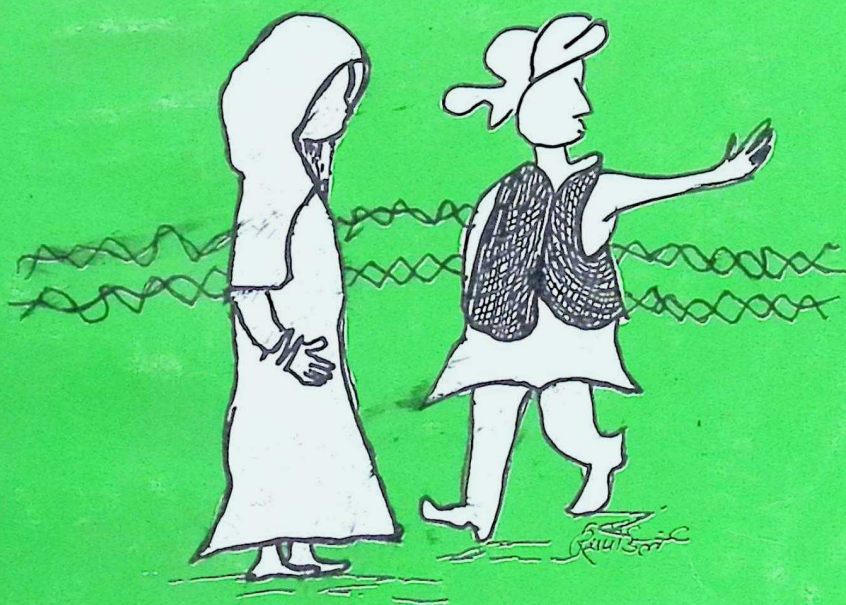


मल्लकालीन मैथिली नाटक

डा.चन्देश्वर शाह



नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान



मल्लकालीन मैथिली नाटक

लेखक

डा० चन्देश्वर शाह

प्रकाशकः

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान

कमलादी, काठमाडौं ।

प्रकाशक :-

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान

कमलादी, काठमाडौं ।

प्रथम संस्करण:- ११०० प्रति

वि. सं. २०५५

मूल्य रु. ४७।-

आवरण चित्र:- रमेश पौडेल

मुद्रक : न्यू फाउण्डेन्स प्रिन्टर्स

काठमाडौं ।

प्रकाशकीय

नेपाल अधिराज्य भनेको विभिन्न वर्ण, जातजातिसमूहको साझा फूलबारी भएर रहेको छ । यहाँ विभिन्न रङ्गका मनोहारी फूलहरू ढकमक्क भएर फुलेझैँ गरी काव्य, साहित्य, संस्कृति, कलाका वर्गचामा पनि विभिन्न भावधारा, विभिन्न वैचारिक दार्शनिक चिन्तनधारा बोकेका काव्य-साहित्यले कलाका सुन्दर फूलहरू फुलेका छन् । यिनै विभिन्न भावधारा र चिन्तनधारा लिएर काव्य-साहित्यसाधनामा लागेका कवि साहित्यकारहरूले आफ्ना-आफ्ना ठाउँबाट आफ्नै शैली, आफ्नै अभिव्यक्तिको सुवास फैलाएर अनेकतामा पनि एकताको रङ्ग घोलेर नेपाली काव्य-साहित्य-कलाका रसिक पाठकलाई परितृप्ति दिने प्रयास गरिरहेका छन् ।

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको मूल उद्देश्य पनि यस्तै विभिन्न रङ्ग र रूपका सांस्कृतिक एकता र वास्ना लिएर फुलेका राष्ट्रभाषा नेपाली र अरू राष्ट्रिय भाषाका काव्य-कलाकुसुमलाई चुनेर यसको रस र वास्ना देशभित्र र बाहिर फैलाउँदै देशको साहित्य, कला, संस्कृतिको भण्डारलाई समृद्ध तुल्याउनु रहेको छ साथै यसैमाफत साहित्यका प्रबुद्ध र रसिक पाठकहरूलाई परितृप्ति पनि तुल्याउनु रहेको छ ।

वर्तमान प्रजातान्त्रिक अभ्यासका परिप्रेक्ष्यमा त राष्ट्रका विविध कला, संस्कृति र साहित्यलाई राष्ट्रको अक्षुण्णता राखी अखण्ड, सुदृढ, शान्त र सुन्दर नेपालका रूपमा यहाँका विविध सामाजिक परम्परा र संस्कृति मात्र होइन विविध राष्ट्रिय भाषा र राष्ट्रिय चिन्तनधारालाई पनि निष्पक्षरूपमा एक सूत्रमा गाँस्ने प्रयत्न गर्नु पनि यसको कर्तव्यक्षेत्रभित्र पर्न आउँछ । यिनै उद्देश्यहरूको परिपूर्ति गर्ने क्रममा परिषद्ले आजपर्यन्त नेपाली वाङ्मयलाई आफ्नो क्षमताले भेटेसम्म प्रकाशित गर्दै आएको छ र अब पनि गर्दै जानेछ ।

यसै अभिलषित उद्देश्यको परिपूर्तिका लागि प्रस्तुत ग्रन्थका लेखक मैथिली भाषा साहित्यका समीक्षक डा. चन्देश्वर शाहद्वारा मैथिली भाषामै तयार गरिएको 'मल्लकालीन मैथिली नाटक' शीर्षक अनुसन्धानात्मक ग्रन्थ

पाठक समक्ष ल्याएका छौं । यसो गर्न पाउँदा हामीलाई सन्तोषका साथ खुशी पनि लागेको छ । प्रस्तुत ग्रन्थले राष्ट्रिय भाषा मैथिली साहित्यमा नाटक विधाको ऐतिहासिक विकास क्रमको परिप्रेक्ष्यमा मल्लकालीन मैथिली नाटकको स्वरूप र स्थितिलाई केलाएर देखाउने प्रयत्न गरेको छ । राष्ट्रभाषा नेपालीका साथै विविध राष्ट्रिय भाषाका साहित्यप्रति चाख राख्ने नेपाली र अन्य भाषाभाषी पाठकका साथै मैथिली भाषाभाषी एउटा ठूलो संख्याको पाठकको ज्ञान पिपाशा परितृप्त गर्न किंचित मात्रामा नै भए पनि यो सक्षम हुनेछ भन्ने आशा र विश्वास लिएका छौं । अस्तु ।

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान
कमलादी

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

पृष्ठ संख्या

विषय प्रवेश—

... १-२२

नाटकक परिभाषा—

... २

नाटकक महत्त्व—

... ४

नाटकक स्वरूप—

५

नाट्य-नृत्य तथा नृत्यमे पारस्परिक भिन्नता—

... ६

नाटकक उत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न मत—

... ८

भरतक मत—

... ८

आख्यान (सम्वाद) सँ नाटकक उत्पत्ति—

... ९

वैदिक कर्मसँ नाटकक उत्पत्ति—

... ९

नाचसँ नाटकक उत्पत्ति—

... १०

पुतली नाचसँ नाटकक उत्पत्ति—

... १०

छाया नाटकसँ नाटकक उत्पत्ति—

... ११

मृतक वीर पूजासँ नाटकक उत्पत्ति—

... १२

विष्णु कृष्ण सम्प्रदायसँ नाटक उत्पत्ति—

... १२

इन्द्रध्वजोत्सवसँ नाटकक उत्पत्ति—

... १३

यूनानी नाटकसँ भारतीय नाटकक उत्पत्ति—

... १३

निष्कर्ष—

... १४

नाटकक भेद-प्रभेद—

... १४

मैथिली नाटकक प्रादुर्भाव—

... १५

मैथिली नाट्य साहित्यक वर्गीकरण—

... १८

द्वितीय अध्याय

मल्लकालीन मैथिली नाटकक पृष्ठभूमि—

... २३-४२

लक्षित मल्लवंश—	... २४
मल्लवंशक परिचय—	... २६
राजनैतिक पृष्ठभूमि—	... २७
सामाजिक पृष्ठभूमि—	... ३०
आर्थिक पृष्ठभूमि—	... ३२
साहित्यिक पृष्ठभूमि—	... ३४
धार्मिक पृष्ठभूमि—	... ३५
सांस्कृतिक पृष्ठभूमि—	... ३६
भाषिक पृष्ठभूमि—	... ३७
नेपालमे मैथिली भाषाक विकास—	... ३८
मध्ययुगमे नेपाल विद्वानक केन्द्र—	... ३९
मल्लकालीन समाजमे नेवारी एवं मैथिलीक सम्बन्ध—	... ४०
मल्लकालीन मैथिली नाट्य केन्द्र—	... ४२

तृतीय अध्याय

मल्लकालीन मैथिली नाटकक विवरण—

... ४३-१०२

भक्तपुरमे रचित नाटक—	... ४४
काठमाण्डूमे रचित नाटक—	... ६२
ललितपुरमे रचित नाटक—	... ६६
बनेपामे रचित नाटक—	... १०१

चतुर्थ अध्याय

मल्लकालीन मैथिली नाटकक रचना शिल्प—

... १०३-१३६

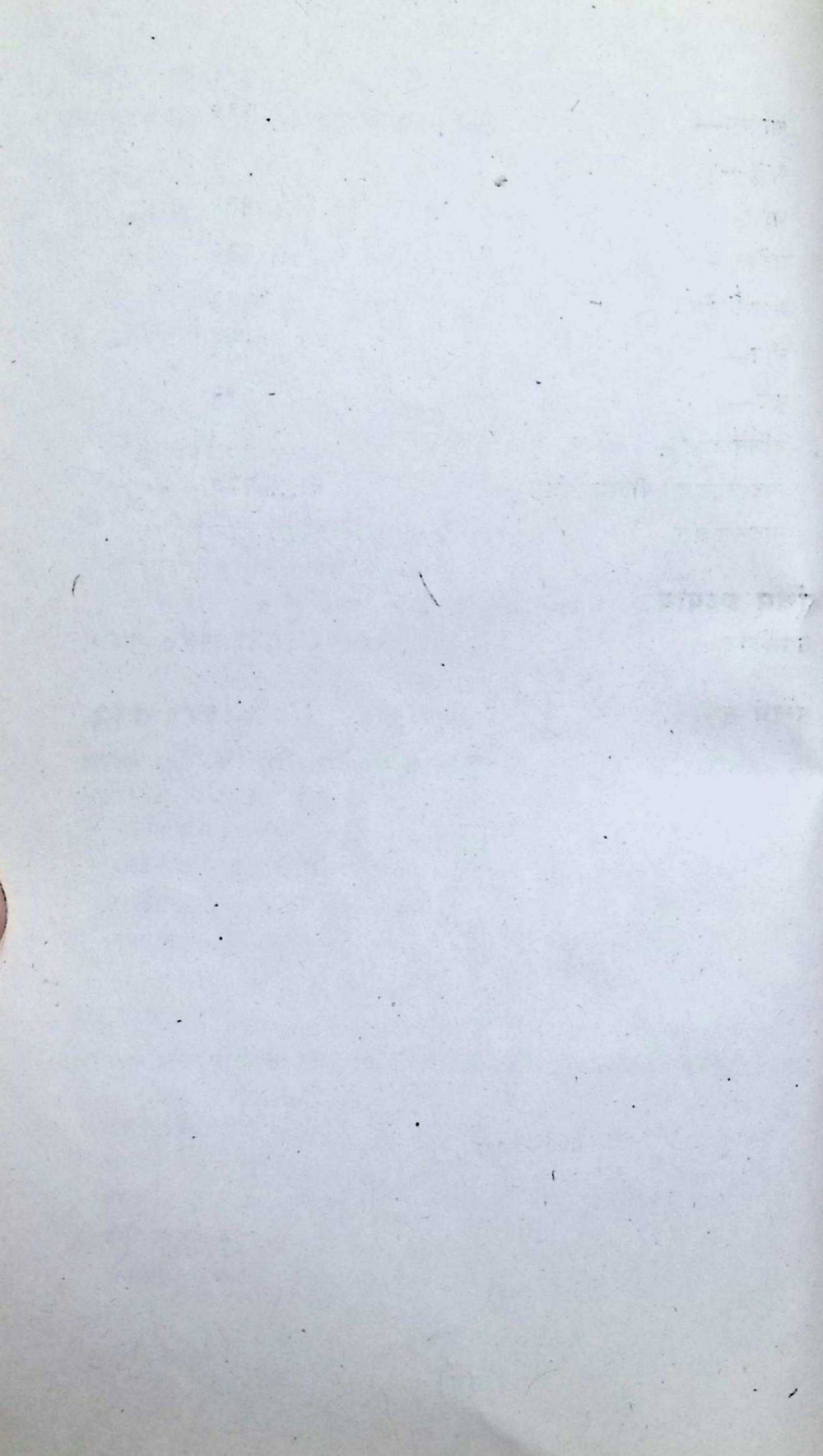
कथावस्तु—	... १०४
रस—	... १०८
पात्र —	... १०९
अभिनेयता—	... ११३
कथोपकथन—	... ११३

आरम्भ—	... ११७
अङ्क—	... १२१
भाषा—	... १२२
उद्देश्य—	... १२६
मन्त्र-निर्देश—	... १२६
गीत—	... १२६
गद्य—	... १३२
वर्जित दृश्य—	... १३७
नाटककार ओ गीतकार भिन्न—	... १३७
नाटकक अंत—	... १३८

पंचम् अध्याय

उपसंहार—	... १४०-१४७
सन्दर्भ सूची—	... १४८-१५१





प्रथम अध्याय

विषय प्रवेश

सामाजिक प्राणी होयवाक कारणे मनुष्यक आत्माभिव्यक्तिमे ओकर सामाजिकताक भावना रहव स्वभाविक थिक । इएह भावाभिव्यक्ति साहित्यक श्रोत आ साहित्यक शाब्दिक व्युत्पत्ति सहितस्य भाव साहित्य अछि । सहित शब्दके दू अर्थमे लेल जा सकैत अछि- १) सहित अर्थात् साथ रहव २) सहित-हितेन सः सहितं अर्थात् जे हितकारी अछि । वास्तवमे एहि दुनूमे कोनो तात्विक अन्तर नहि अछि । अतः जे रचना मानव हितक दृष्टिकोणसँ लिखल गेल अछि सएह साहित्य थिक । साहित्य व्यापक अर्थमे वाङ्मय आ संकुचित अर्थमे काव्यक रूढ अर्थ देवामे समर्थ होइत अछि ।

मनुष्य स्वभावहिसँ सौंदर्य प्रिय भेलाक कारणे विभिन्न कलाक आविष्कार कयलक । काव्यकलाके मनुष्यक सौंदर्यप्रियताक प्रमाण मानल जाइत अछि । साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ काव्य कलाके दू वर्गमे विभाजित कयलनि—श्रव्य काव्य एवं दृश्य काव्य । श्रव्य काव्यक रसास्वादन श्रवणक माध्यमसँ होइत अछि आ दृश्य काव्यक रसास्वादन नेत्रक माध्यमसँ । दुनू प्रकारक काव्यक उद्देश्य समान होइतहुँ उद्देश्य-प्राप्तिक माध्यम भिन्न होइत अछि । माध्यमक भिन्नतासँ प्रभावकारिता पर असर पडैत अछि । श्रव्य काव्यमे जीवनसँ सम्पर्क परोक्ष रूपेँ होइत अछि आ इएह सम्पर्क दृश्य काव्यमे प्रत्यक्ष होइत अछि । दृश्य काव्यमे सम्पूर्ण घटना अपना रङ्गमे उपस्थित होइत अछि जे

1. दशरथ झा एवं गुरुप्रसाद कपूर, हिन्दी नाटक की रूपरेखा, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली, १९६२ ई., "अपनी बात" सँ ।

2. उएह, पृष्ठ- १

3. प्रेमशङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्च, मैथिली अकादमी, पटना, पृष्ठ- १

अधिक प्रभावकारिताक सामर्थ्य रखैछ । दोसर बात ई अछि जे श्रव्य काव्यक प्रत्यक्ष रसास्वादन विद्वतवर्ग मात्र कए सकैत छथि मुदा दृश्य काव्यक रसास्वादनमे की विद्वतवर्ग की अपठ सभक लेल समान होइत अछि । एही कारणसँ दृश्य काव्य श्रव्य काव्यक अपेक्षा अधिक प्रभावकारी मानल जाइत अछि ।

नाटकक परिभाषा

खेतक सीमांकन जकाँ विषय वस्तुकेँ परिभाषित करब कठिन कार्य थिक । जमीनक सीमांकन ओकर क्षेत्रफलसँ मात्र सम्बन्ध रखैछ मुदा विषय वस्तुक सीमांकन ओकर बहुआयामिक प्रकृतिकेँ सम्पूर्ण रूपेँ एक परिधिमे रखबाक प्रयास थिक जे विषय वस्तुक प्रकृतिक विशालताक कारणेँ असम्भव नहिओ त कठिन अवश्य होइत अछि । तथापि विषय वस्तुसँ परिचित होयबाक लेल ओकर परिभाषा सेहो ओहिना आवश्यक होइत अछि आ इएह कारण थिक जे एकेटा वस्तुकेँ विभिन्न विद्वान् विभिन्न तरहें परिभाषिक करैत छथि । नाटककेँ सेहो विभिन्न विद्वानलोकनि विभिन्न तरहें परिभाषित कयलनि अछि ।

नाटक विषयक सबसँ प्राचीन ग्रन्थ भरत मुनिक नाट्यशास्त्र उपलब्ध होइत अछि । एहि ग्रन्थमे नाटकक परिभाषा दैत कहल गेल अछि जे ई पंचम वेद सम्पूर्ण त्रैलोक्यक भावक अनुकरण थिक^१ ।

दशरूपककार धनंजय नाटककेँ परिभाषित करैत कहैत छथि जे अवस्थाक अनुकरण नाटक थिक^२ ।

मन्दारमन्द चम्पूमे एकरा आओर स्पष्ट करवाक प्रयास करैत कहल गेल अछि जे नाटक धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित तथा धीर प्रशान्त नायक नायिका वा अन्यान्य पात्रद्वारा अवस्थाक अनुकरण थिक, ई रस पर आधारित रहैछ^३ ।

अभिनव भारतीमे कहल गेल अछि जे “नाट्य” शब्द नमनार्थक “नट”

१. त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्

— नाट्यशास्त्र, अध्याय १, श्लोक १०७ ।

२. अवस्थानुकृतिर्नाट्यं रूपं दृश्यतयोच्यते ।

रूपकं तत्समारोपाद् दशधैव रसाश्रयम् ॥

— दशरूपक, प्रथम प्रकाश, श्लोक ७ ।

३. धीरोदात्ताद्यवस्थानुकृतिर्नाट्यं रसाश्रयम् ।

— मन्दारमन्द चम्पू, पृ. ५६ ।

शब्दसे बनल अछि । नाटकमे पात 'स्व' भावकेँ त्यागि 'पर' प्रभावकेँ ग्रहण करैत अछि, रूप धारण करैत अछि, अतः ओ नाटक अथवा रूपक थिक^१ ।

साहित्य दर्पणकार विश्वनाथक अनुसार दर्शकक समक्ष रङ्गमञ्च पर अभिनय कए देखाओल गेला पर नाटकक सृजनशीलता सम्पूर्णता प्राप्त करैत अछि^२ ।

भारतेन्दुक कथन छँन्हि जे दृश्य काव्यक नाम रूपक अछि । रूपकमे नाटक सभसेँ प्रमुख अछि^३ ।

गुलाब रायक अनुसार दोसराक अनुकरणमे एक तरहक आत्माभिव्यक्ति भऽ जाइत अछि^४ ।

डा. दशरथ ओझा कहैत छथि जे नाट्य कलाक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि । नाटकमे उत्तम, मध्यम आओर अधम सभ श्रेणीक व्यक्तिक कर्म संश्रय पवैत अछि^५ ।

पाश्चात्य विद्वानलोकनि सेहो नाटकक विभिन्न परिभाषा देलनि अछि ।

ब्रान्डर मैथ्युज लिखैत छथि जे नाटक दृश्य काव्य अछि, जे कथात्मक रूपमे किछु पात्रद्वारा दर्शकक सम्मुख रङ्गमञ्च पर प्रदर्शनक लेल होइत अछि^६ ।

1. नटं नताविति नमनं स्वभावः त्यगेन प्रह्वीभाव लक्षणम् ।

— अभिनव भारती, भाग ३, पृ. ८० ।

2. दृश्य श्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्

दृश्यं तत्राभितेयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम्

भवेदभिनयोऽवस्थानुकारः

— साहित्य दर्पण, षष्ठ परिच्छेद, पृ.— ३१६ ।

3. भारतेन्दु, भारतेन्दु ग्रन्थावली, भाग- १, पृ. ७१५ ।

4. गुलाब राय, काव्य का रूप, पृ.— २४ ।

5. डा. दशरथ ओझा, हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास, पृ. ३६ ।

6. "We approach nearer to a satisfactory definition when that a drama is a story in dialogue shown in we say action before an audience".

— Brander Matthews, A study of Drama; Page- 92

अरस्तुक अनुसार नाटकक मूलमे समस्त मुख्य प्रवृत्ति अनुकरण अछि ।

निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे नाटक निश्चित उद्देश्य प्राप्तिक लेल वार्तालापक शैलीमे निश्चित पात्रसभद्वारा दर्शक समक्ष प्रस्तुत कएल गेल विशेष घटना वा अवस्थाक रसात्मक अनुकरण थिक ।

नाटकक महत्त्व

मानव जीवनक मङ्गल हेतु नाटकमे अनेक तत्त्वक समावेश कएल गेल अछि । नाटक सिद्धान्तके कर्ममे अनुवाद करैत अछि^१ । कतहु धर्म, कतहु विनोद, कतहु काम, कतहु रहस्य, कतहु शम आ कतहु वधक प्रदर्शन एहिमे होइत अछि । धार्मिक लोकक लेल धर्म, कामोपसेवीक लेल शृङ्गार, दुर्विनीतक हेतु संयम, विनीतक हेतु दमन-त्रिद्या, शूर आ अभिमानीक हेतु उत्साह, नपुंसकक हेतु धैर्य देनिहार, अज्ञानीकेँ ज्ञान देनिहार तथा विद्वत वर्गकेँ विद्वता प्रदान कयनिहार एक मात्र नाटक होइत अछि^२ । नाटक दुःख पीडितक हेतु धैर्य, अर्थोपजीवीक हेतु अर्थ तथा उद्विग्न चित्तकेँ धैर्य प्रदान करैछ । नाना प्रकारक भाव एवं अवस्थासँ परिपूर्ण लोक नृतक सजातीय अनुकरणे रूप नाटक होइछ^३ ।

एहि प्रकारेँ नाटक सुख-साधन, मनोविनोद तथा दुःखी व्यक्ति हेतु विश्रान्तिदायक होइछ^४ । वस्तुतः नाटक दिश्व जीवनक एहन दिशाल रङ्गवेदिका थिक जाहि पर कोन एहन ज्ञान, कोन एहन विद्या, कोन एहन कला आ कोन एहन योग वा कर्म अछि जकर नाटकमे प्रदर्शन नहि होइछ^५ । अतएव नाटकक महत्ता मनोरंजनक कारणेँ अछि । नाटक नै केवल सामान्यजनक मनोरंजनक विषय होइछ, प्रत्युत देव-दानव एवं राजा आदिक मनोरंजन ई

1. हमारी परिभाषा के अनुसार त्रासदी ऐसे कार्य की अनुकृति है, जो समस्त सम्पूर्ण हो ।

-- डा० नगेन्द्र और महेन्द्र चतुर्वेदी (अनु.), अरस्तु का काव्यशास्त्र, पृष्ठ - २२

2. हरि मेहता, वापस भियतनाम, सस्ता साहित्य भण्डार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८३ ई, "भूमिका" सँ ।
3. मनमोहन घोष (सं), नाट्य शास्त्र, मनीषा ग्रन्थालय, कलकत्ता, प्रथम संस्करण, १९६७ ई, अध्याय - १, श्लोक १०८-९, पृ - १० ।
4. उएह, श्लोक ११४, पृ. १५
5. मनमोहन घोष (सं), नाट्य शास्त्र, अध्याय-१, श्लोक ११६, पृष्ठ-१५ ।
6. उएह, श्लोक १२०, पृष्ठ - १५

समान रूपे करैछ । एहि प्रकारे नाट्याचार्य विभिन्न पक्षक वास्तविक विवेचनक पश्चात् नाटकक महत्ता प्रमाणित कयलनि ।

संस्कृत नाट्य साहित्यक महान व्यक्तित्व महाकवि कालिदास कहैत छथि जे नाटक जन साधारणक विभिन्न रुचिक मनोरंजन करैछ¹ । भवभूति नाटकके भव्यताक प्रतीक कहलनि² । धनंजयक अनुसार नाटक अलौकिक आनन्दसँ प्रवण अछि । एकर उद्देश्य सहृदयके अलौकिक आनन्द रूप रसक आस्वादन कराएव अछि³ । नाटकक अन्तरगत अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष एहि चतुर्वर्गक प्रतिपादन सँ प्रेरित भए आचार्य नन्दिकेश्वर अभिनय दर्पणक प्रस्तावनानामे चतुर्वर्गक अतिरिक्त ओहिमे कीर्ति, वाग्मिता, सौभाग्य, वैवध्य, उदारता, स्थिरता, धैर्य एवं समृद्धिक प्राप्ति इत्यादिक उल्लेख कयलनि⁴ ।

नाट्याचार्य भरत कहैत छथि जे जीवनक समग्र चित्रक प्रस्तुतीकरण नाटक मध्य सुगमतापूर्वक होइछ⁵ । एहि परिप्रेक्ष्यमे ई स्वतः प्रमाणित भऽ जाइत अछि जे नाटकक महत्त्व हमरा समक लेल सर्वाधिक अछि ।

नाटकक स्वरूप

“अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्” अवस्थाक अनुकरण नाटक कहबैछ । प्रथात काव्य शास्त्रक अनुसार धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित आ धीरप्रशान्त नायक तथा ओही अनुरूपक नायिकाक आंगिक वाचिक आहार्य तथा सात्विक अभिनयक द्वारा विभिन्न अवस्थाक अनुकरण नाटक थिक । प्रो० दशरथ झा एवं प्रो० गुरु प्रसाद कपूर सेहो एहि बात सँ सहमत छथि । हुनका सभक कहव छैन्हि जे जीवनक विभिन्न (विषम तथा सम) परिस्थितिक मनोरम अनुकरण नाटक

1. राम प्रताप त्रिपाठी (सं), मालविकाग्निमित्रम्, कालिदास ग्रन्थावली, द्वितीय खण्ड, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद, वि. सं. २०२२, पृष्ठ - २५५ ।
2. रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर (टी), मालती-माधव, मुम्बा पुरवर्ति राजकीय ग्रन्थशालाधिकारिणी, प्रथम संस्करण, पृ. १६ ।
3. भोला शङ्कर व्यास (सं), हिन्दी दशरूपक, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, १९६७ ई, पृष्ठ - ३ ।
4. वाचस्पति गेरोला, भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनय दर्पण, संवर्तिका प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९६७ ई, पृ. - १९२ ।
5. उएह, पृष्ठ - २ ।

थिक¹। मानू, कौनहु मंचपर गौरी स्वयंवर नाटक भऽ रहल अछि आ एक पात्र महादेवक अभिनय कऽ रहल अछि। ओहि पात्रक चालि-ढालि, आलाप-प्रलाप, वेश-भूषा, रोमान्च आदि हु-वहु महादेव जकाँ छैक जाहिसँ ओ पात्र दर्शकक नजरिमे सर्वथा महादेव भऽ गेल अछि। पात्रक इएह अभिनयात्मक अनुकरण नाटक थिक।

इएह नाटक दृश्य होयबाक कारणे^२ रूप कहबैछ। नाटक श्रव्य त होइतहि अछि संगहि रङ्गमंचपर अभिनित भऽ दृश्यो होइत अछि। जेना लाल पियर रङ्ग नजरि सँ देखैबाक कारणे^३ रूप कहबैत अछि तहिना नाटक सेहो देखैबला वस्तु होयबाक कारणे^४ रूप कहबैत अछि।

इएह नाट्य-रूप रूपक सेहो कहल जाइत अछि। अनुकारक पात्रपर अनुकार्य नायकक आरोप कयलाक कारण रूपक नाम देल जाइत छैक। जेना काव्यमे मुखर चन्द्रक आरोप कएला सँ मुखचन्द्रमे रूपक अलङ्कार मानल जाइत अछि तहिना नाट्यमे राम, कृष्ण, महादेव आदि नायकक अवस्थाक आरोप कएल जाइत छैक ते^५ नाट्य रूपके^६ रूपक सेहो कहल जाइत छैक। नाटक, रूप ओ रूपक तीनू शब्दसँ एकहि अर्थ होइत अछि यद्यपि तीनूक प्रवृत्ति-निमित्त^७ भिन्न भिन्न अछि जेना इन्द्र, शक्र तथा पुरन्दर एहि तीनू शब्दसँ एके अर्थ बुझल जाइत अछि किन्तु परम ऐश्वर्यशाली होयबाक कारणे^८ शक्र तथा पुरके^९ विदीर्ण करबाक कारणे^{१०} पुरन्दर कहल जाइत अछि। तहिना धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित, धीरप्रशान्त अवस्थाक अनुकरणक कारणे^{११} नाट्य वा नाटक, दृश्य होयबाक कारणे^{१२} रूप तथा राम, कृष्ण, महादेव आदिक आरोप होयबाक कारणे^{१३} रूपक कहबैछ।

नाट्य नृत्य तथा नृत्तमे पारस्परिक भिन्नता

नाट्य तथा नृत्यमे अभिनयक साम्य रहितहुँ परस्पर किछु भिन्नता अछि।

- १) नाटक पूर्णतः रसाश्रित होइत अछि आ नृत्य मात्र भावाश्रित।
- २) नाटक भावक चरम सीमा थिक आ नृत्यमे गात्रविक्षेपादिसँ भावाभिव्यञ्जना मात्र होइत अछि।
- ३) नाटक शब्दक निष्पत्ति “नट्” धातुसँ भेल अछि जकर अर्थ अवस्पन्दन

1. दशरथ ज्ञा एवं गुरु प्रसाद कपूर, हिन्दी नाटक की रूपरेखा, पृष्ठ - “अपनी बात” सँ।

2. जाहि कारणे^३ अर्थ विशेषमे शब्द-विशेषक प्रयोग होइत अछि ओ ओहि

अर्थात् अल्प चंचलता अछि आ नृत्य शब्दक निष्पत्ति नृत् धातु सँ भेल अछि जकर अर्थ थिक गात्रविक्षेप ।

४) नाटकमे सात्विक अभिनयक प्रधानता होइत अछि आ नृत्यमे आङ्गिक अभिनयक ।

५) नाटकक अभिनेताकेँ नट कहल जाइत अछि आ नृत्य कयनिहारकेँ नर्तक ।

६) नाटकमे संवाद रहैत अछि मुदा नृत्यमे संवाद नहि होइत अछि ।

७) नाटकमे विभिन्न अवस्थाक अनुकरणक प्रधानता होइत अछि मुदा नृत्यमे अनुकरण नहि होइत अछि ।

८) नाटकमे वाचिक अभिनय होइत अछि आ नृत्यमे पदार्थरूप अभिनय ।

नाटक आओर नृत्यमे जहिना परस्पर भिन्नता अछि, तहिना नृत्य आओर नृत्तमे सेहो भिन्नता अछि । यद्यपि एहि दुनू शब्दक निष्पत्ति एकहि धातु “नृत्” सँ भेल अछि । पुनः एहि दुहुँक दू भेद होइछ — मधुर आ उद्धत । मधुर लास्य कहबैछ ओ उद्धत ताण्डव । ई दुहुँ प्रकारक नृत्य आ नृत्त नाटकादिरूपकमे उपकारी होइत अछि^१ । तथापि नृत्य आ नृत्तमे रहल अन्तर एहि प्रकार अछि --

१) शास्त्रीय पद्धतिसँ युक्त पदार्थाभिनय अङ्गविक्षेप नृत्य कहल जाइत अछि । शास्त्रीय भेलाक कारणेँ लोक एकरा मार्ग कहैत अछि । नृत्तमे खाली ताललययुक्त गात्रविक्षेप रहैछ जे शास्त्रीय नहि रहैत अछि । अतः ओकरा देशी सेहो कहल जाइत अछि^२ ।

२) नृत्य भावाश्रित होइत अछि, किन्तु नृत्त ताललयाश्रित^३ । नृत्तमे तालक मात्राक अनुसरण कएल जाइत अछि आ लय नृत्तक गतिकेँ तीव्र, मन्द अथवा मध्य करवाक संकेत करैत अछि । नृत्तमे भावाभिनय नहि, ताललयसँ नियमित गात्रविक्षेप मात्र होइत अछि । भरतनाट्यम्, कत्थक नृत्य, उदयशंकर नृत्य आदि नृत्यक उदाहरण थिक आ भीलक “गरबा”, सन्थाली नृत्त आदि नृत्तक उदाहरण ।

शब्दक प्रवृत्ति-निमित्त कहबैछ ।

१. डा० देवकान्त झा (व्या.) ; मैथिली दशरूपक, मैथिली अकादमी, पटना, प्रथम संस्करण १९७६ ई., पृ. - ७ ।

२. उएह ।

३. नृत्त ताललयाश्रयम् ।

- उएह, पृ. - ६ ।

नाटकक उत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न मते

काव्य कलाक एहि विधाक विषयमे अनेक विद्वानक अनेक मत छैन्हि । सभ विद्वान अपना मतके सही कहैत छथि । मुदा इएह भेल ई कहब कठिन अछि । नाटक समाजक दर्पण थिक आ समाज सदैव एक सदृश स्थिर नहि रहैत अछि । समाजमे नव नव विचारधाराक प्रभाव आ नव भाव जागृत होइत रहैत अछि । नाटकमे ओही अनुरूप परिवर्तन होइत रहैत अछि । आजुक समाजक आधार पर प्राचीन समाजक रूप निश्चित करब कठिन अछि । ओहिना नाटकक वर्तमान रूपक अध्ययन कऽ ओकर मूल कारणक खोजी नितान्त दुःसाध्य अछि । युरोपिय विद्वानक ई प्रवृत्ति रहलनि अछि जे ओ पूर्वीय देशक ज्ञान विज्ञानक प्राचीनताक विरोधमे सम्पूर्ण बुद्धिक अपव्यय कऽ लैत छथि । ई पलनवग्राही विद्वान कतहुसँ एक शब्द वा वाक्य लऽ ओहि पर एक नव सिद्धान्तक एहन आडम्बरपूर्ण प्रासाद ठाढ़ कए लैत छथि तथा एहि क्षेत्रक विद्वान लोकनि हुनकहि स्वरमे स्वर भिला लैत छथि । ई सर्वविदित अछि जे भरत मुनिक नाट्य शास्त्र नाट्य तथा अलङ्कार ग्रन्थक अग्रणी अछि । एकर समय ईशाक प्रथम शताब्दीसँ छठम् शताब्दीक बीच मानल जाइत अछि । नाटकक उत्पत्ति कोना भेल एकर सर्वप्रथम विवरण भरतक नाट्यशास्त्रमे भेटैत अछि^१ ।

भरतक मत :-

भरत मुनिक नाट्य शास्त्रक पहिल अध्यायमे नाटकक उत्पत्तिक कथा एहि प्रकार वर्णित अछि । वैवश्वत मनुक समयक लेता युग प्रारम्भ होयवाक समय संसारमे एहन अव्यवस्था पसरि गेल जे सभ निषिद्ध कर्ममे प्रवृत्त भए जीवन व्यतीत करए लागल । एही बीच लोकपालसँ नीक जकाँ पालित पोषित होमयवला जम्बू द्विपपर देव दानव यक्ष आ महोरग आक्रमण कए एहि ठाम आवि स्थान बना लेलक । ओहि दिन इन्द्रादि देव ब्रह्मासँ एहन वेद निर्माण करवाक प्रार्थना कएल जाहिसँ वेदक अनाधिकारी स्त्री, शूद्रादिक मनोरंजन भए सकए । एहि प्रस्तावके स्वीकार कए इन्द्रादि देवता लोकनिके विदा कए तत्त्व ज्ञाता ब्रह्मा समाधिस्थ भए चारू वेदक स्मरण कए संकल्प कयलैन्हि जे हम इतिहाससँ युक्त एहन नाटक नामक वेद बनवैत छी जाहिसँ धर्म, अर्थ, ओ यश भेटए, जाहिमे सुन्दर आदेश भरल रहए, जाहिसँ संसारक सभ कार्यक अनुकरण कए देखाओल जा सकए, जाहिमे सभ शास्त्रक तत्त्व भरल रहए तथा

१. इन्दिरा झा, आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित्र सृष्टि, स्वाती प्रकाशन, पटना, अक्टूबर १९८७ ई., पृ. - १० ।

संसारक सभ शिल्पक प्रदर्शन भए सकए । ब्रह्मा ऋग्वेदसँ पाठ, सामवेदसँ गान, यजुर्वेदसँ अभिनय आओर अथर्ववेदसँ रस लेए नाट्यवेद नामक पंचम वेदक रचना कयलन्हि^१ ।

प्राख्यान (सम्वाद) सँ नाटकक उत्पत्ति

सीताराम चतुर्वेदीक अनुसार ऋग्वेदी संवाद आदि नाटकक एक पक्ष अछि^२ । अनेको पूर्वीय तथा पाश्चात्य विद्वान नाटकक उत्पत्ति वेदमूलक मानैत छथि । ऋग्वेदमे पुरुरवा-उर्वशी संवाद, यम-यमी संवाद, इन्द्र-मरुत संवाद सनक अनेको एहन संवाद अछि । डा० हर्टलक न्त छैन्हि जे एकर गायन होइत छल आ गएवाक लेल एकसँ अधिक व्यक्ति राखल जाइत छल । कारण, सम्वादक प्रदर्शन एक व्यक्तिसँ कथमपि नहि भऽ सकैत छल । एही आधार पर मैकडोनल महोदय संवादकेँ एहि क्षेत्रक नाट्य साहित्यक आदि रूप मानैत छथि^३ । लेवी, कीथ, वॉन श्रुयडर, ओल्डेन वर्ग तथा पिशेल एकर समर्थन करैत छथि ।

ऋग्वेदक सम्वाद सूक्तसँ नाटकक उत्पत्ति भ्रान्त बूझि पडैत अछि । संसारक समस्त साहित्यमे कथाकेँ स्वभाविकता देवाक लेल संवाद प्रयोग कएल गेल अछि । ऋग्वेदक संवाद सूक्त सेहो सरल भाषाक माध्यमसँ गुरु-शिष्यक प्रश्नोत्तर सदृश शङ्का समाधान कएल गेल अछि । अगस्त्यलोपामुद्रा संवाद, इन्द्र-इन्द्राणी-वृषा कपि संवाद, यम-यमी संवाद, पुरुरवा-उर्वशी संवादमे तर्क प्रधानता अछि भावक नहि । मुदा ई अवश्य कहल जा सकैत अछि जे एहि सम्वादमे तथा ऋग्वेदमे आएल अनेक कथामे नाटकक रचनाक लेल प्रचुर सामग्री विद्यमान अछि ।

वैदिक कर्मकाण्डसँ नाटकक उत्पत्ति

मैक्समूलर ऋग्वेदक मरुत सूक्तक एक मंत्रक व्याख्या करैत नाटकक उत्पत्ति वैदिक कर्मकाण्डसँ मानैत छथि^४ । फ्रांसीसी विद्वान लेवी सेहो एहि मतक समर्थन करैत कहैत छथि जे ई सम्वाद केवल ऋषिक कल्पना मात्र नहि अपितु वैदिक यज्ञमे एहि सम्वादकेँ प्रत्यक्ष नाटकीय रूपमे देखल गेल हएत । श्रुयडर ऋग्वेदक सूक्त मण्डलकेँ नाटकक आदिरूप मानैत छैन्हि । एहि मतक खण्डन

१. इन्दिरा झा, आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित्र सृष्टि, पृ. - १० ।

२. सीताराम चतुर्वेदी, अभिनव नाट्यशास्त्र, विक्रम परिषद्, काशी, १९५१ ई., पृ. - ३१ ।

३. ए० ए० मैकडोनल, ए हिस्ट्री अफ संस्कृत लिटरेचर, पृ. - ३४६ ।

४. इन्दिरा झा, आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित्र सृष्टि, पृ. - १२ ।

करैत डा० कीथ कहैत छथि जे ओ सम्वाद तँ मात्र पौरोहित्य कर्म छल । एहिसँ नाटकक उत्पत्ति कथमपि सम्भव नहि ।

नाचसँ नाटकक उत्पत्ति

एहि मतक अनुसार नाटकक उत्पत्ति नाचसँ भेल । नाचसँ नाटकक उत्पत्ति माननिहार विद्वानसभक तर्क छैन्हि जे नाटक शब्द नट् धातुसँ बहराएल अछि जे संस्कृतक नृत् धातुक प्राकृत वा देशी रूप अछि आ जकर वर्तमान रूप नाच अछि । दशरूपक अवलोक नामक टीकाक रचयिता धनिक भावाश्रय नृत्यक टीका करैत लिखैत छथि जे नृत् धातुक अर्थ गात्रविक्षेप अछि । अर्थात् एहिमे अङ्ग सञ्चालनक बाहुल्य रहैत अछि तथा नृत्य कयनिहार नर्तक कहल जाइत अछि आ ओकर प्रदर्शनकेँ प्रेक्षनीयक कहल जाइत अछि । एहि दृष्टिमे नृत्य नाटकसँ भिन्न वस्तु थिक । भरत मुनि नाटकक सम्बन्धमे अपन विचार एहि प्रकारेँ व्यक्त कयने छथि जे नाना भाव समन्वित भिन्न भिन्न अवस्थामे जे लोकक आचरण होइत अछि तकर अनुकरण नाटक थिक । दशरूपककार धनंजय अवस्थानुकृतिकेँ नाटक मानलैन्हि अछि । नृत्यमे मात्र अङ्ग विक्षेप रहैत अछि ! ई तालक आधार पर मात्राक अनुसरण करैत अछि तथा लयक आधार पर गीतक । कहवाक अभिप्राय ई अछि जे नाट्य, नृत्य तथा नृत् एक दोसराक पर्याय नहि अछि । डा० इन्दिरा झा लिखैत छथि जे नाच नाटकसँ प्राचीन जन साधारणक मनोरंजनक साधन छलैक । सुसंस्कृत समाजक परिष्कृत बुद्धिक सहयोग पावि नाटक विकसित भेल । मिथिलान्तर्गत एखनहु घरि नाच कयनिहारकेँ लोक नटुवा कहैत छैक । अतएव नाटकक उद्भव नाचसँ मानव समीचीन नहि ।

पुतली नाचसँ नाटकक उत्पत्ति

नाटकक उत्पत्तिक विषयमे डा० पिशेलक मत छैन्हि जे प्राचीन समयमे प्रचलित पुतलिका नृत्यसँ कालान्तरमे नाटकक उद्भव भेल हुएत । पुतलिका नृत्यमे नचैत पुतलीक सूत्र सूत्रधारक हाथमे होइत अछि । ओ स्वेच्छासँ ओकरा नचबैत अछि । नाट्य प्रयोगमे सेहो पात्रक प्रयोजनक सम्पूर्ण सूत्र सूत्रधारक हाथमे रहैत अछि । एहि आधार पर पिशेल महोदय कल्पना कयलैन्हि जे पुतलिका नृत्यक सूत्रधार नाट्य सूत्रधारक रूपमे परिणत भए गेल । पुतलिका नृत्यक परम्परा भारतमे छल एकर उल्लेख महाभारतमे भेटैछ ।

प्रो० हिलब्राँ एहि मतक प्रतिवाद करैत छथि । हुनक कहब छैन्हि जे

1. इन्दिरा झा, आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित सृष्टि, पृ. - १३ ।

कठपुतली नाचक पृष्ठभूमिमे नाटक अछि तेँ कठपुतली नाचसँ नाटकक उत्पत्ति मानव उचित नहि कहल जा सकैत अछि । वरू नाटकेक अनुकरण कठपुतलीमे भेल अछि । कठपुतली नाच नाटके पर आधारित अछि¹ ।

वस्तुतः कठपुतली नाचसँ नाटकक उत्पत्ति सम्भव नहि अछि कारण एहि सँ पूर्व मानवक हृदयमे नाच वा नाटकक कल्पना अवश्य रहल होएत तखने ओ कठपुतली नाचक सृष्टि करबामे समर्थ भेल होयताह । पं. सीताराम चतुर्वेदी सेहो एहि सिद्धान्तक खण्डन कयलन्हि अछि² ।

छाया नाटकसँ नाटकक उत्पत्ति

एहि मतक अनुसार छाया नाटकसँ नाटकक उत्पत्ति भेल अछि । एहि मतकेँ माननिहार ल्यूडर्स, डा० कोनोन आदिक अनुसार मलाया, कम्बोडिया, श्याम, चीन, वर्मा, जापान, अरब, लघु एशिया आओर उत्तरी अफ्रिकामे छाया नाटकक बड़ प्रचार भेल । पतञ्जलिक महाभाष्यमे ग्रन्थिक सङ्ग शोभिकक कार्य व्यापार सँ एकर अनुमान कएल गेल अछि । संभवतः ई छाया नाटकक संकेत अछि । मुदा ई मूक अभिनयक संकेत सेहो भऽ सकैत अछि । एही मूक छायाकेँ यवनिकाक पाछू प्रस्तुत कए ओकरे माध्यमसँ कथावस्तु प्रदर्शित होइत छल से सम्भव । ल्यूडर्शक अनुसार प्राचीन भारतमे नाट्योद्भवक पूर्व ई शिल्प प्रचलित छल आ एही माध्यमसँ नाटकक उद्भव भेल³ ।

मुदा नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थमे छाया शैलीक नाट्यक कोनहु विवरण एखन धरि उपलब्ध नहि भेल अछि । रत्नावली नाटिका, प्रबोध चन्द्रोदय आ दशकुमारचरित आदिकृतिमे ऐन्द्रजालिक छाया नाटकसँ नाटकक सिर्जन भेल कहल गेल अछि⁴ । निश्चये ई विवरण एतेक परवर्ती अछि जे नाट्य उत्पत्तिक श्रोतक रूपमे एकरा स्वीकार करवाक कोनहु अर्थ नहि होइत अछि । हिन्दू संस्कृतिमे धर्मक स्थान बहुत महत्वपूर्ण होइत अछि । तेँ विभिन्न विद्वान एहि परम्पराकेँ देखि नाटकक उत्पत्ति धर्मसँ जोडैत छथि । कतेक विद्वान हिन्दू धर्मावलम्बी मध्य वेदक मर्यादा देखि वेदमे एकर बीज खोजवाक प्रयास करैत छथि, मुदा समुद्रक गहिराई पता लगावक लेल डूबकी मारव आवश्यक अछि । मनोरंजनक आवश्यकता प्रत्येक समयक मानवकेँ रहल होयतैन्हि । जन्म लितहि

1. ए० बी० कीथ, संस्कृत ड्रामा, पृ. ५२ ।

2. सीताराम चतुर्वेदी, अभिनय नाट्यशास्त्र, पृ. ५५ ।

3. ए० बी० कीथ, संस्कृत ड्रामा, पृ. २३ ।

4. इन्दिरा झा, आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित्र सृष्टि, पृ. १६ ।

बच्चा प्राकृतिक वातावरण प्रति आकर्षित होइत अछि । कि छुए दिनक बाद ओ अपन पार्श्ववर्ती क्रियाकलाप अनुकरण करवाक चेष्टा करैत अछि ।

मृतक वीर पूजासँ नाटकक उत्पत्ति

जखन कोनो व्यक्तिक मृत्यु भ जाइत अछि त मृतक व्यक्ति प्रति सम्मान देखाएब मनुष्यक स्वभाविक गुण अछि । प्राचीन कालमे सेहो मृतात्माक सम्मान कएल जाइत छल । मृतात्माक सम्मान आ चिरशान्तिक लेल एखनहु विभिन्न तरहक क्रियाकलाप होइत अछि पहिनहुँ होइत छल । एही सम्मान करवाक चलन अनुसार प्राचीन कालमे नृत्य गान आदिक अभिनयपूर्ण प्रदर्शन होइत छल । रिजवे महोदयक ई कल्पना छैन्हि जे एही शमशान उत्सवक माध्यमसँ नाटकक शुभारम्भ भेल^१ । मुदा एहि क्षेत्रक नाट्य परम्परामे एहन उल्लेख नहि भेटैत अछि । संस्कृत नाटकक प्रदर्शन माङ्गलिक प्रतीकक रूपमे मात्र कएल जएवाक उल्लेख यत्तत भेटैत अछि । डा० कीथ एहि सिद्धान्तक प्रतिपादक यलनि अछि^२ । सुरेन्द्र नाथ दीक्षित कहैत छथि जे प्राप्त विवरण सभक सन्दर्भमे ई मत स्वीकार योग्य नहि अछि^३ ।

विष्णु कृष्ण सम्प्रदायसँ नाटकक उत्पत्ति

महाभाग्यमे रहल कंसवध तथा बालिवध नाटकक उल्लेख प्रति आकर्षित भऽ डा० मैकडोनल नाटकक उत्पत्ति विष्णु कृष्ण सम्प्रदायसँ मानैत छथि^४ । हुनक कहव छैन्हि जे वैदिक कालक पश्चात वैदिक देवता सभक महत्व घटि गेल आ विष्णुक अवतार राम आओर कृष्ण तथा रुद्रक स्थानीय स्वरूप शिवक महत्व बढ़ैत गेल । लोक वेद-गायनक अपेक्षा वीर काव्य दिश रुचि लेब लागल । रामायण आओर महाभारतक ओजस्वी वाणी समस्त क्षेत्रक चेतनाकेँ आकर्षित कयलक । एहि परिवेशमे नव संस्कारसँ नाटक प्राणवान भ उठल जाहिमे कथा, संवाद, कर्तृणा, प्रेम, तेज, सौंदर्य ओ शीलक चरम आदर्श छल ।

महाभाग्य, रामायण, हरिवंश आदिमे नाटकक उल्लेख भेल अछि मुदा

१. ए० वी० कीथ, संस्कृत ड्रामा, पृ. ५३ ।

२. जएह, पृ. ४६-१ ।

३. सुरेन्द्र नाथ दीक्षित, भरत और भारतीय नाट्यकला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९७० ई., पृ. ७६ ।

४. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास, प्रथम संस्करण, १९७८ ई., पृ. २२ ।

रामायण बहुत लोकप्रिय भेल वा राधा-कृष्णक प्रेम-लीला बहुत लोकप्रिय भेल आ एहि समयक ग्रन्थमे नाटकक चर्चा भेटैत अछि ताहिसें ई अनुमान लगाएब जे नाटकक उत्पत्ति एही परम्परासँ भेल एकरा अपरिपक्वता कहल जा सकैत अछि ।

इन्द्रध्वजोत्सवसँ नाटकक उत्पत्ति

युरोपमे मई मासक पहिल दिन 'मे पोल' उत्सवक रूपमे मनाओल जाइत अछि तहिना भारतवर्षमे इन्द्रध्वजोत्सव मनएवाक प्रथा अछि । नेपालमे ई उत्सव बहुत धूमधामसँ मनाओल जाइत अछि । ई परम्परा बहुत प्राचीन अछि । नाट्यशास्त्रमे सेहो एकर उल्लेख भेटैत अछि^१ । किछु विद्वानक मत छैन्हि जे एहि उत्सवक अवसर पर जे नाच गान होइत छल ताहीसँ नाटकक उत्पत्ति भेल । नाच गान करब पृथक वस्तु थिक आ नाटक पृथक । संस्कृत नाटकक अभिनय मांगलिक अवसर पर करएवाक परम्परा छल तँ कि एहन कहब उचित हएत जे मांगलिक अवसर विवाह, उपनयन आदिसँ नाटकक उत्पत्ति भेल । एहि प्रसङ्ग पर चर्चा करैत डा. दास गुप्ता लिखैत छथि जे एहि उत्सवसँ नाटकक कोनो सम्बन्ध नहि अछि^२ ।

युनानी नाटकसँ भारतीय नाटकक उत्पत्ति

वेबर महोदय भारतीय नाट्य साहित्यक उत्पत्तिक कारण ग्रीक सभ्यताक प्रभाव मानैत छथि । हुनक कहब छैन्हि जे भारतवर्ष पर जखन ग्रीक सभ्यताक प्रभाव पडल तखन ग्रीक नाटकक देखादेखी एतए नाटकक उद्भव भेल^३ । नाटकमे प्रयोग होमयवला यवनिवा, यदनी आदि शब्दक आधार पर ओ एहि बातकेँ सिद्ध करवाक प्रयास बयलनि अछि । प्रो. विन्डिश आ डेविश विद्वान ब्रान्देन महोदय एकर समर्थन कयलनि अछि मुदा सिल्वाँ, लेवी तथा कीथ एकर विरोध करैत छथि । शब्द प्रयोगक आधार पर एहि तरहक मान्यता राखब उचित नहि थिक । एकर अतिरिक्त ग्रीक नाटकक दुःखान्त स्वरूप, समय आ

1. नाट्य शास्त्र, अध्याय-१, श्लोक ५४-५५ ।

2. S. N. Das Gupta, A History of Sanskrit Literature, Page-50

3. A weber, The History of Indian Literature, Translated from the 2nd German Edition by John Mann and Theodor Zachariac, Popular Edition, London, 1940, Page-207.

સ્થાનક એકત્વ ભારતીય નાટકમે નહિ અછિ । ડુનૂ ઠામક નાટકક પ્રસ્તાવન આદિ ભિન્ન અછિ । ભારતીય નાટકમે પાત્રક વાહુલ્ય અછિ । ગ્રીક નાટકક આરકેસ્ટ્રા ભારતીય નાટકમે નહિ અછિ । ડુનૂ ઠામક નાટકક ઈ ભિન્ન પ્રનાણિત કરૈત અછિ જે ગ્રીક નાટકક પ્રભાવસં ભારતીય નાટકક ઉત્પત્તિ નહિ મેલ અછિ ।

નિષ્કર્ષ

નાટકક ઉત્પત્તિક ઉપરોક્ત વિભિન્ન મતક વિશ્લેષણસં ઈ વાત સ્પષ્ટ અછિ જે માનવ પ્રવૃત્તિક આધાર પર ગહિરાઈ ધરિ પહુંચવાક પ્રયાસ નહિ મેલ અછિ । એહિ ક્ષેત્રક ધર્માચરણ દેખિ કિઓ ધર્મસં નાટકક ઉત્પત્તિ માનલૈન્દિ તે ઋષિ મુનિક વેદ ગાનસં પ્રભાવિત મડ કિઓ વેદકે નાટકક શ્રોત કહલનિ । મુદા નાટક ઓહૂસં પૂર્વ રહલ હોએત કિએક તં જાહિ સમયમે વેદ સનક ગ્રન્થક રચના મેલ તાહિ સમયક સમાજક જ્ઞાનક અનુમાન સહજહિ લગાઓલ જા સકૈત અછિ । જન્મ લૈત મનુષ્ય પ્રકૃતિક મનોરમ દૃશ્ય કુતુહલતાવશ દેખૈત અછિ । કોનો લલિતગર વસ્તુકે દેખિ અસ્ફુટ શબ્દસં ઉત્લાસપૂર્વક વિલ્લોલ કરૈત અછિ । અપના લગક વ્યક્તિક મુંહસં સુનલ શબ્દ અનુકરણ કરવાક ચેષ્ટા કરૈત અછિ ।

અનુકરણ કરવાક ચેષ્ટા મનુષ્યમે જીવન પર્યન્ત હોઈત અછિ । મહા-પુરુષક આચરણક અનુકરણ મનુષ્યકે સત્ચરિત્ર બનવૈત અછિ તં વિકલાંગક ચાલિ ચલનક અનુકરણ હાસ્ય પંદા કરૈત અછિ । એહન અનુકરણ હાવ-ભાવ, વાણી, વેશ-ભૂષા સમ ક્ષેત્રમે સમ્ભવ અછિ ।

મનુષ્યક જીવનમે મનોરંજનક વહુત મહત્ત્વ અછિ । મનોરંજનક સમય લોક સમ તરહક ચિન્તાસં મુક્ત મડ જાઈત અછિ । એહિ મનોવિનોદક લેલ સાત્વિક અનુકરણક પ્રારમ્ભ મેલ । આંગિક અનુકરણક પુનરાવૃત્તિસં નૃત્યક ઉત્પત્તિ મેલ । વિભિન્ન પ્રકારક મધુર સ્વર સમક તાલમેલસં સંજ્ઞીતક સપ્ત સ્વરક સૃષ્ટિ મેલ । એહિ પ્રકારે મનોવિનોદક લેલ ઘટનાક અનુકરણાત્મક પ્રદર્શન કાળ ગેલ જકર નામ નાટક વા રૂપક પડલ । નાટકકે પ્રભાવશાલી, આકર્ષક, આ રમણીય બનવાક લેલ એહિમે નૃત્ય ઓ ગીત સમાવેશ કાળ ગેલ ।

નાટકક મેદ-પ્રમેદ

દૃશ્યકાવ્યકે દૂ ભાગમે વિભાજિત કાળ ગેલ અછિ ।

ક) રૂપક વા નાટક

ખ) ઉપરૂપક વા નાટિકા

कथावस्तु, नायक तथा रसक आधार पर रूपकक दश प्रकार मानल जाइत अछि:-

- | | |
|-----------|------------|
| १. नाटक | २. प्रकरण |
| ३. भाण | ४. प्रहसन |
| ५. डिम | ६. व्यायोग |
| ७. समवकार | ८. बीथी |
| ९. अंक | १०. ईहामृग |

एही आधार पर उपरूपकक १८ प्रकार मानल जाइत अछि:-

- | | |
|-----------------|---------------|
| १. नाटिका | २. त्रोटक |
| ३. गोष्ठी | ४. सट्टक |
| ५. नाट्यरासक | ६. प्रस्थानक |
| ७. उल्लाप्य | ८. काव्य |
| ९. प्रेङ्खण | १०. रासक |
| ११. संलापक | १२. श्री गदित |
| १३. शिल्पक | १४. विलासिका |
| १५. दुर्मल्लिका | १६. प्रकरणिका |
| १७. हल्लीश | १८. भाणिका |

मैथिली नाटकक प्रादुर्भाव

मैथिली नाटकक प्रादुर्भाव संस्कृत नाटकक समाधि पर भेल अर्थात् मैथिली नाटकसँ पूर्व संस्कृत नाटक विद्यमान छल । संस्कृत नाटकक परम्परा अवरुद्ध होयबाक प्रधान कारण एकर भाषागत समस्या थिक । समय परिवर्तन-शील अछि आ एहि परिवर्तनक क्रममे जखन साहित्यक भाषा संस्कृत आ लोक भाषा संस्कृतमे अन्तर होइत गेल तँ लोक भाषा, संस्कृतसँ प्राकृत आ प्राकृतसँ अवरुद्ध होइत विभिन्न क्षेत्रीय भाषा सभक विकास भेल । जाहि समयमे मैथिली भाषाक विकास पूर्णरूपमे बोलचालमे भऽ गेल छल ताहि समयमे संस्कृत मात्र शिष्ट वर्गमे सीमित छल । नाटकक सबसँ पैघ उद्देश्य जनमतोरञ्जन थिक आ जखन सामान्य लोक संस्कृत प्राकृत बुझिए नहि सकत तँ नाटकक रचना आ मंचन ककरा लए । सामान्य लोकमे संस्कृत प्राकृतकेँ पुनर्स्थापित करब ओतवे कठिन छल । स्वभाविक रूपेँ ओहि समयक साहित्यकारकेँ संस्कृतमे नाटकक रचनासँ वास्तविक आनन्द नहि भेटलनि जे एकटा स्रष्टाकेँ भेटबाक चाही । साहित्यकारक उत्साहमे कमी हएब रचनामे कमी थिक आ सएह भेल क्रमिक रूपमे संस्कृत नाटक रचना आ मंचनमे ह्रास होइत गेल ।

भाषागत समस्याक संग संगहि संस्कृत नाटकक अवततिमे किछु आनो वारण सहायक भेल । एहि कारण सभमे मुसलमानी आक्रमणकेँ मुख्य मानल जा सकैत अछि । मुसलमानक प्रवेश भारतमे आठम् शताब्दीमे भेल छल मुदा ताहि समयमे हिन्दू संस्कृतिकेँ ओहन धक्का नहि लागल छलैक जेहन एगारहम शताब्दीक आरम्भसँ लगलैक । एकटा-एकटा कऽ हिन्दू राज्य सभपर मुसलमानक प्रभुत्व कायम होइत गेल । मुसलमान सभकेँ नाटकक मार्फत धर्म संस्कृतिक प्रचार प्रसार प्रति द्वेष छलैक । ओ सभ नहि चाहैत छल जे कोनो तरहें हिन्दूत्वक भावना गति पकड़ए । हिन्दू राजालोकनि जहिना नाटककेँ संरक्षण दए नाटकक मार्फत धर्म सन्देशक प्रचार कराए समाजमे शान्ति सुरक्षा स्थापित करए चाहैत छलाह एकर ठीक विपरीत मुसलमानसभ नाटकक मार्फत देल जाएबला सन्देशक कारणेँ विद्रोह भऽ सकवाक भयसँ तसित छल । एहन अवस्थामे नाटकक रचना आ प्रदर्शन पर लगाम कसैत जाएव स्वभाविक छल । साहित्यक विधामे सभ वर्ग, सभ उमेर आ सम्पूर्ण समाजकेँ एकहि वेर मनोरञ्जन आ सन्देश देवबला नाटक विधा शरण हेतु हिन्दू राज्यक खोजी करैत गेल । बसैत गेल उजड़ैत गेल । एहन परिस्थिति नाटक रचनाक लेल ताधरि उपयुक्त नहि भेल जाधरि हिन्दू जाति भारतीय राष्ट्रीय भावनाक पुनः स्थापना नहि कएलक तथा प्राचीन राष्ट्रीय गौरवक उद्धारकेँ प्रोत्साहन नहि देलक¹ ।

एक दिस मुसलमानी शासनक प्रभाव आ दोसर दिस साहित्यक वा नाटकक भाषा एवं समाजक बोलीक भाषाक अन्तर बढिते गेल । विद्वान नाटक-कार सभक नाटकक शिष्ट भाषा जनसाधारणक लेल कटिन होइत गेल । नाटक प्रबुद्ध वर्गमे सीमित होइत गेल । नाटककारलोकनि नाटक रचनासँ यश प्राप्तिक प्रयत्न व्यर्थ बुझऽ लगलाह । रक्षके यदि भक्षक बनि जाए तँ सुरक्षाक प्रयत्न व्यर्थ भऽ जाइत अछि । नाटकक स्रष्टाकेँ जखन यश प्राप्तिपर शङ्का भऽ गेलैन्हि तँ नाटकक सृष्टिमे शिथिलता आएव अनिवार्य छलैक । तथापि बहुतो दिन धरि मन्दे गतिमे सही, मुदा रचना होइत रहल । मुसलमानी शासनमे ललितकला आ सज्जीतकलाकेँ प्रथम भेटलैक मुदा नाटक प्रति ओकरा सभक धारणा नीक नहि छलैक । शासक वर्ग दमनपर लागल छल लोक आतङ्कित छल । आतङ्कक स्थितिमे मनोरञ्जन कोनो महत्त्व नहि रखैत अछि । मुसलमान शासकवर्ग ओहुना रङ्गमञ्चीय अभिनय परम्परासँ अनभिज्ञ छलाह । हुनका सभक अपना देशमे एहि तरहक परम्परा नहि छलैन्हि । हुनका सभक

1. डा. उदय भानु सिंह (भाषांतरकार), संस्कृत नाटक, मोतीलाल बनारसी दास, प्रथम रूपान्तर १९६५ ई. पृ.—२५५ ।

उद्देश्य एहि ठामक उन्नति प्रगति नहि छलैन्हि बल्कि ओ दमन प्रकृत्यासँ अपन शासनक अवधि बढ़ाबाक प्रयत्नमे लागल छलाह । एहन परिस्थिति सभमे संस्कृत नाटकक अवनति होइत जाएव स्वभाविक छल ।

मुसलमानी आक्रमणक विहाडिसँ संस्कृत नाटकक वृक्षमे पतझड़ आएल तथा नव-नव किशुक बहराइत गेल । एहि प्रसङ्गमे आर. के. यजनिकक कथन छैन्हि जे रूपकक अन्य असंस्कृत प्रभेद नाटकक स्थान ग्रहण कए अपन प्रभुत्व स्थापित कयलक तथा शनैः शनैः जन नाट्यकेँ प्रभावित करव प्रारम्भ कयलक । एहि हेतु ओकरा अपन किछु सिद्धान्त आ रूपक परित्याग सेहो करय पडलैक¹ । शास्त्रीय नाटकक अतिरिक्त भाण तथा प्रहसनक विकास स्वतन्त्र रूपसँ होइत रहल । भाषाक दुरुहता बढ़िते गेल आ प्राकृत भाषा लोककेँ सरल बोध गम्य ओ कामिनी सदृश सुकुमार प्रतीत होमय लगलैक² । एकर परिणामस्वरूप प्राकृत भाषाक बोधगम्यताकेँ ध्यानमे राखि प्राकृत भाषामे अधिकांश रचना होमय लागल । मुदा प्राकृत भाषाक ई बोधगम्यता सेहो समयक संग बदलि गेल । प्राकृतक स्थान अवरूढ सनक आधुनिक भाषा सभ लए लेलक । महाकवि विद्यापति अपन कीर्तिलताक रचनाक इएह कारण बतौने छथि³ ।

नाटकक भाषा तथा सामाजिक जीवनक बोलचालक भाषामे अन्तर बढ़ैत गेल । नाटकक उद्देश्य जनमनोरञ्जनक संगहि पाठक वा दर्शक धरि भाव पहुँचाएव थिक । एहि उद्देश्यक प्राप्ति नहि भेलासँ नाटकक कोनो प्रयोजन नहि रहि जाएत । १००० ई धरि संस्कृत आ प्राकृत व्यवहारसँ हटि गेल छल । अपभ्रंश सेहो खसकि रहल छल आ आधुनिक भाषा सभक विकास भऽ रहल

1. Ramlal Kanhaiyalal Yajnik, The Indian Theatre, G. Allen Unwin Ltd, London 1933, Page-53.

2. परूषा सक्कअ वन्धा पाउअबन्धोवि होइ सुअमारो
पुरिस महिलाणं जेत्तिय मिहन्तरं तेत्तिय निमाण ।

— कर्पूरमंजरी, राजशेखर. पृ.-५ ।

3. सक्कअ वाणी बहुअन भावई
पाउँअ रस को मम्म न पावई ।

देशिल वयना सब जन मिठ्ठा,

तँ तैसन जम्पओ अवहट्ठा ।

— कीर्तिलता, विद्यापति, पृ.-६ ।

छल । अतः आधुनिक भाषामे साहित्यिक रचना प्रारम्भ भेल ।

जन मनोरंजनक उद्देश्यसँ कवि बोखर ज्योतिरिश्वर सर्वप्रथम नाटकमे मैथिली गीत समावेश कयलन्हि अपन धूर्तसमागममे । यद्यपि नाट्यशास्त्रानुसार धूर्तसमागम प्रहसनक सम्पूर्ण लक्षणसँ युक्त अछि तथापि एकरा मैथिलीक प्रथम नाटक मानल जाइत अछि^१ । एहिमे पात्रक कथोपकथन संस्कृत प्राकृतमे अछि आ बीच बीचमे मैथिली गीतक प्रयोग भेल अछि । समकालीन साहित्यकार एहि नवीन प्रवृत्तिसँ बहुत प्रभावित भेलाह ।

एहि प्रकारसँ मैथिली नाट्य धाराक मूल श्रोत संस्कृत नाट्य परम्परा रहल^२ । समयक प्रवाहमे संस्कृत प्रभाव कम होइत गेल आ आधुनिक भाषा परिवर्तन भेलाक बादो प्रमुख विधा नाटकक प्रवाह नहि रुकल । निर्झर रूपेँ बहैत गेल आ देश काल परिस्थितिक प्रभावकेँ अपनाते समेटैत गेल । मैथिली नाट्य परम्परा संस्कृत नाटकक विशाल वृक्षक एक नवीन पल्लव थिक ।

मैथिली नाट्य साहित्यिक वर्गीकरण

संसारमे दूटा वस्तु एक सदृश नहि होइत अछि । कतहु ने कतहु ओहिमे अन्तर रहितहि अछि । छुटिअएवाक काज देखनिहारक छैन्हि जे ओ एहिमे कतेक घरि सफल होइत छथि । दू भिन्न वस्तुकेँ तुलना करव अपेक्षाकृत आसान होइत छैक किन्तु एकहि प्रकृतिक दू वस्तुक तुलना करवाक लेल दृष्टि कोणक आवश्यकता होइत अछि । एहि प्रसङ्गमे नाटक वर्गीकरणकेँ लेल जा सकैत अछि ।

1. "It was clearly a very different thing to compose in Sanskrit and Prakrit in A. D. 1000, when the vernaculars were beginning to assume literary form, than in A. D. 400, and the difficulty of composition in any effective manner must have rapidly increased with the years, and the growth of the realization that it was idle to seek fame under modern circumstances by the composition of dramas, for which there was no popular audience and only a limited market "

— Sanskrit Drama; Keith, Page — 243.

2. प्रेमशङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्च, पृ. १२ ।

3. उएह, पृ. १३ ।

डा० जयकान्त मिश्र मैथिली नाटकके तीन वर्गमे विभाजित कयलन्हि अछि ।

१. नियमित नाटक
२. अनियमित नाटक
३. आधुनिक नाटक

१. नियमित नाटक :-

एहि तरहक नाटकमे संस्कृत नाटकक रूप अधिकसँ अधिक बनल रहैछ । पात्र सभ संस्कृत ओ प्राकृतक व्यवहार करैत अछि तथा बीच - बीचमे श्लोक सभ रहैत अछि । मैथिलीक प्रयोग गीत मात्रमे होइत अछि । “श्लोकार्थे गीतम्” कहैत वा नहियो कहैत संस्कृत-प्राकृत अंशक अर्थ मैथिली गीत दैत अछि । जेना-उमापति उपाध्यायक पारिजातहरण ।

२. अनियमित नाटक :-

एहिमे संस्कृत प्राकृतक प्रयोग क्रमशः अत्यल्प होइछ तथा अधिकांश मैथिली गीत ओ चौपाई-दोहा आदि होइछ । जेना-रत्नपाणिक उषाहरण, जगज्ज्योतिर्मल्लक महाभारत एवं हर गौरी विवाह ।

३. आधुनिक नाटक :-

मोटामोटी संस्कृत एवं अंग्रेजी नाटक सभपर आधारित विशुद्ध मैथिली भाषामे मात्र आलाप आदि रहैछ । गीत ओ पद्यक प्रयोग अत्यल्प होइछ ।

डा० जयकान्त मिश्रक अनुसार मैथिली नाटकक एकटा दोसर वर्गीकरण एना कएल जा सकैत अछि^२-

१. नेपालीय मैथिली नाटक
२. कर्तुनिया मैथिली नाटक
३. आधुनिक मैथिली नाटक

१. नेपालीय मैथिली नाटक :-

संस्कृत नाटकमे क्रमशः मैथिलीक प्रवेशसँ प्रारम्भ भए ई अन्तमे जाए एकटा सङ्गीत नाट्यक रूप धारण कए लेलक जाहिमे प्रचुर मैथिली गीत छल, एवं संस्कृत प्राकृतक लोप छल आर संस्कृत नाटकक ढव सँ भिन्न एकटा नवे प्रकारक ढव सिर्जन भेल ।

१. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, साहित्य अकादमी, प्र० सं० ;

१९८८ ई., पृ. ४० ।

२. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. ४१ ।

२. किर्तनिया मैथिली नाटक :-

ईहो क्रमशः मैथिली गीत सभक संस्कृत नाटकमे प्रवेश कएलासँ आरम्भ भेल आर अन्त अबैत-अबैत विशुद्ध गीतमय मैथिली नाटक भए गेल जकरा किर्तनिया नटुआ अभिनीत करैत छल एवं ओकर उद्देश्य कोनो रूपमे ईश्वरक कीर्तन प्रस्तुत करब छल । नेपालीय सङ्गीत नाट्य एवं असम देशीय अङ्किया नाट एकरे प्रतिच्छाया एवं विस्तार कहल जाए सकैछ ।

३. आधुनिक मैथिली नाटक :-

उपर वर्णित वर्गीकरणवत्हि एकरा बुझल जा सकैछ ।

डा० प्रताप नारायण झा, मैथिली नाटकक वर्गीकरण दू शीर्षक अन्तर्गत कयलनि अछि^१ ।

१. शैलीक अनुसार

(क) परम्पराक आधार पर

(अ) नियमित मैथिली नाटक

(आ) अनियमित मैथिली नाटक

(इ) आधुनिक मैथिली नाटक

एहि वर्गीकरणक व्याख्या डा० प्रताप नारायण झा सेहो ओहिना कएने छथि जेना डा० जयकान्त मिश्र कयलन्हि ।

(ख) रचना विधिक अनुसार

(अ) पूर्व किर्तनिया नाटक

(आ) किर्तनिया नाटक

(इ) नेपालक मैथिली नाटक

(ई) आधुनिक मैथिली नाटक

२. कालक्रम अनुसार

(क) प्राचीन काल

(ख) मध्य काल

(ग) आधुनिक काल

डा० प्रताप नारायण झा प्राचीन कालक नाटकमे कवि शेखर ज्योति-रीश्वरक घूर्तसमागम एवं महाकवि विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटकक चर्चा कयने

१. डा० प्रताप नारायण झा, मैथिली नाटक का उद्भव और विकास, पृ. ७१ ।

छथि । मध्यकालक नाटकमे नेपालक मैथिली नाटक तथा मिथिलाक किर्तनिया नाटकक चर्चा कयने छथि, असामक अङ्किया नाटकेँ मिथिलाक किर्तनिया नाटकक विस्तार मानैत छथि। आधुनिक नाटकक सम्बन्धमे लिखत छथि जे राजनीतिक, सामाजिक तथा भाषिक आन्दोलन आर हिन्दी एवं बङ्गलाक माध्यमसँ अंग्रेजी नाट्य शैलीक प्रभावक कारणेँ नाटकक रचना विभिन्न शैलीमे होमय लागल।

डा० प्रेमशङ्कर सिंह लिखैत छथि जे सम्पूर्ण मैथिली-नाट्य-साहित्यकेँ समग्र जीवन-काल-खण्डक एक आवयविक इकाई (Organic Unity) मानि ली तँ एकर विभाजन निम्नांकित रूपेँ कएल जा सकैत अछि^१ ।

नामाकरण	कालावधि	प्रमुख गुण
१. उद्बोधन युग	६०० ई सँ १४८० ई	जागरण
२. उन्मेष युग	१४८० ई सँ १६०० ई	गुण ग्रहण
३. उत्थान युग	१६०० ई सँ १६४७ ई	गांभीर्य
४. उत्कर्ष युग	१६४७ ई सँ अद्यतन	वैविध्य

रचनाक मौलिकताक आधार पर मैथिली नाटककेँ दू वर्गमे विभाजित कएल जा सकैत अछि ।

१. मौलिक नाटक :- पौराणिक, ऐतिहासिक प्रमुख घटना, राजनैतिक, सामाजिक आदि कथा पर आधारित एहन नाटक जकर रचना सोझहि मैथिलीमे भेल ।

२. अनुदित नाटक :- जाहि नाटकक रचना पहिने कोनो अन्य भाषामे भेल आ पाछ ओकर मैथिली रुपान्तर भेल ।

मैथिली नाट्य परम्पराक इतिवृत्तिक अध्ययनक दृष्टि सँ मैथिली नाटककेँ तीन वर्गमे विभाजित करब उचित अछि ।

१. प्राचीन मैथिली नाटक :- ज्योतिरिश्वरक धूर्तसमागम आ महाकवि विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटक जत मैथिली भाषाक नाटकमे प्रवेश होइत अछि ।

२. मध्यकालीन मैथिली नाटक :- मध्यकालमे मैथिली नाटकक विकास मिथिला असाम आ नेपालमे भेल । तेँ एहि तीनू

१. डा० प्रताप नारायण झा, मैथिली नाटकका उद्भव और विकास, पृ. ७३ ।

२. डा. प्रेमशङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रंगमंच, पृ. १८

ठामक नाटकक विश्लेषण हेतु तीन उपशीर्षक
उचित बुझाईत अछि । (क) मिथिलाक
किर्तनिया नाटक (ख) असामक अङ्किया
नाट (ग) नेपालक मैथिली नाटक ।

३. आधुनिक मैथिली नाटक :- पं. जीवन झाक सुन्दर संयोग ओ तकर
बादक नाटक जाहिमे पूर्णरूपेण मैथिली
भाषाक प्रयोग भेल अछि ।

वर्गीकरणक हेतु आधार प्रमुख तत्त्व थिक। एकहि विद्वानद्वारा दू आधार
पर दू तरहें वर्गीकरण कएल जाएव एकर उदाहरण थिक ।



द्वितीय अध्याय

मल्लकालीन मैथिली नाटकक पृष्ठभूमि

समय सदा परिवर्तनशील अछि । एही परिवर्तनक क्रममे संस्कृत प्राकृत जखन लोककेँ बुझवामे कठिन होमय लागल तखन लोकभाषा साहित्यमे प्रवेश कयलक । एही क्रममे कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वरद्वारा सर्वप्रथम मैथिली नाटकक रचना भेल । महाकवि विद्यापतिद्वारा एहि परम्पराकेँ बल प्रदान भेल । महाकवि विद्यापतिक प्रभाव दूर दूर धरि पसरि गेल आ नेपाल, असाम ओ मिथिलामे मैथिली नाटकक रचना भेल । एहि तीनू ठामक नाटकक रचना स्वतन्त्र रूपेँ भेल । धर्म प्रचारक प्रयोजनसँ असाममे रचित मैथिली नाटककेँ अक्रिया नाट आ ईश्वर भक्तिक भावना अक्षुण्ण रखवाक लेल भजन कीर्तन करवाक उद्देश्यसँ मिथिलीमे रचित नाटककेँ कीर्तनिया नाटकक नाम देल गेल । नेपालमे विकसित नाटकक परम्परामे प्राचीन स्वरूपक अनुकरण होयवाक कारणेँ एकर कोनो फुट नामकरण नहि भेल अछि । १९०४ ई. मे कविवर जीवन झाद्वारा आधुनिक नाटकक शुरुआत भेल जे ऋमिक रूपेँ आजुक समृद्ध नाट्य साहित्यक रूप लेलक । एहि प्रकारेँ विकसित मैथिली नाट्य साहित्यक अध्ययनक लेल अनेक दृष्टिकोण भ सकैत अछि । सम्पूर्ण नाटक परम्पराक सम्पूर्ण पक्ष पर एकहि बेर अध्ययन असम्भव नहियो तँ दुःसाध्य अवश्य थिक । शायद एही कारणेँ एखन धरि जतेक विद्वान एहि सम्बन्धी अध्ययन कयलन्हि सभ एकर एक-एक पक्ष पर प्रकाश देलनि । जाहि दृष्टिकोणसँ घटनाक विवेचना कएल जाइत अछि विवेचना करैत ओही दृष्टिकोणक आधारसँ आधार सामग्री लेल वा छोड़ल जाइत अछि^१ । मल्लकालीन मैथिली नाटक अर्थात्

१. वी. एल. फडिया, अन्तर्राष्ट्रिय राजनीति, साहित्य भवन, आगरा, चतुर्थ संस्करण, १९८८ ई. पृ. २९-३० ।

मध्यकालमे नेपालमे रचित मैथिली नाटकक विवेचना करव एहि अध्ययनक विषय थिक, ताही अनुरूपे विषयवस्तुक प्रस्तुतीकरण कएल गेल अछि ।

मल्लकालमे नेपालमे मैथिली नाटकक प्रचुर मात्रामे रचना आ मंचन भेल । एहि कालमे साहित्यक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विधा नाटकक क्षेत्रमे नेपालमे जे उन्नति भेल ताहिमे एक बात आओर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आ स्मरणीय अछि जे एहि समयमे नाटकक एक नव प्रणाली विकसित भेल जे संस्कृत नाटकके मानू निरस्त कए देलक । क्रमहि संस्कृतक प्रयोग लुप्त होइत गेल आ अन्ततः नवीन नाटकमे मैथिलीक स्थान प्रमुख भए गेल ।

मध्यकालमे जखन मिथिलामे मैथिली नाटकक विकास अवरुद्ध छल, ताहि समयमे नेपालमे भेल एकर विकासक पृष्ठभूमिक जिज्ञासा हएब स्वभाविक थिक । एकरा लेल ओहि समयक राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषिक पृष्ठभूमि, मैथिलीक स्थिति आदि विभिन्न पक्ष पर विचार करव आवश्यक अछि कारण, कोनो वस्तुक निर्माण एक तत्त्वसँ मात्र सम्भव नहि होइत अछि । तखन, विभिन्न तत्त्वक मात्रामे कमवेश धरि अवश्य होइत अछि ।

नेपालमे मैथिली नाटकक रचना जाहि समयमे भेल ताहि समयमे नेपालमे मल्लवंशीय राजा लोकनि राज्य करैत छलाह आ एही कारणे ओहि नाटक सभकेँ मल्लकालीन मैथिली नाटक कहल जाइत अछि । मुदा नेपालमे जाहि समयमे मैथिली नाटकक रचना भेल ओहिसँ पहिनुहुँ मल्ल उपाधिधारी राजालोकनि राज्य कयने छलाह तेँ लक्षित मल्लकालीन समय कोन थिक ताहि पर विचार करव आवश्यक अछि ।

लक्षित मल्लवंश

मिथिलासँ दूर काठमाण्डू उपत्यकामे जाहि मल्लवंशीय राजा लोकनिक समयमे मैथिली नाटकक रचना आ मंचन भेल ओ छल हरिसिंह देवक वंशज श्यामसिंह देवक पश्चात् स्थापित मल्लवंश । एहि अध्ययनमे मल्लवंशसँ तात्पर्य एहि वंशसँ अछि ।

एहि सँ पूर्व सेहो विभिन्न ठामक राजालोकनि मल्ल उपाधि धारण कयने छलाह । बारहम् शताब्दीक अन्तमे विजयकाम देवक उत्तराधिकारी अरिदेवक समयसँ नेपालक^२ राजालोकनि मल्ल उपाधि धारण कयने छलाह ।

1. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.-१४६ ।

2. ओहि समयमे आजुक काठमाण्डू उपत्यकाकेँ नेपाल कहल जाइत छल ।

वंशावलीमे मुदा अरिदेवके मल्ल नहि कहल गेल अछि । हुनक पुत्र अभयके मल्ल कहल गेल अछि । वंशावलीक अनुसार अरिदेव अखाडा पर कुशी खेल रहल समयमे पुत्रक जन्म भेलाक कारणे पुत्रके मल्ल उपाधि देलैन्हि आ ओ अभय मल्लक नामसँ प्रतिष्ठ भेलाह । १२०१ ई मे लिखल गेल एकटा पुस्तक सत्ववाधा प्रशमनम् (भाग - १, पृ. ८३) मे "श्री अरिमल्ल देवस्य विजय राज्ये" उल्लेख कएल गेल अछि जाहिसँ प्रमाणित होइत अछि जे अरिदेव स्वयं मल्ल उपाधि धारण कयने छलाह । पर्वत (वर्तमान नेपालक एक जिला) क मल्ल राजासभक विषयमे सेहो हेमिल्टन एहने कथाक वर्णन कयने छथि । ई कथासभ मल्ल शब्दक अर्थ पहलवान वा बलवान सार्थक करएवाक उद्देश्यसँ रचित भेल बुझाईत अछि ।

मल्ल उपाधि भारतक अत्यन्त प्राचीन जातिमे सेहो प्रचलित छल । ईस्वी सम्बत् आरम्भ होयवा सँ ६०० वर्ष पूर्व नेपालक तराई आ आसपासमे मल्लसभक छोट छोट राज्य रहल उल्लेख भेटैत अछि । कुशीनगर तथा पावामे मल्लसभक राज्य रहल चर्चा सेहो भेटैत अछि ।

भारतीय इतिहासमे उत्तर भारतमे रहल वृजि सङ्घ बहुत प्रख्यात अछि । एहि सङ्घमे लिच्छवी, शाक्य आदिक सङ्गहि मल्ल उपाधिधारी राजा सभ सेहो छलाह । मगधक राजा अजातशत्रुद्वारा वृजि सङ्घपर कब्जा भेलाक बाद मल्ललोकनि नेपालमे यत्न तत्न बसि गेल छलाह । तेरहम् शताब्दीक आसपासमे नेपालक पश्चिमी भाग दुल्लुमे मल्लसभक विशाल समृद्धशाली राज्य रहल प्रमाण भेटैत अछि । ई मल्ल राज्य कहिया स्थापित भेल तकर निश्चित जानकारी प्राप्त नहि भेल अछि मुदा बहुत पूर्वहिसँ मल्लसभ एहि क्षेत्रमे राज्य करैत छलाह से अनुमान लगैत अछि । नेपालमे लिच्छवि शासन जाहि समयमे स्थापित भेल ताही समयमे कर्णाली क्षेत्रमे मल्ल शासन स्थापित भेल हुएत से सम्भव अछि ।

एगारहम्-बारहम् शताब्दीमे भारतीय राजासभमे सेहो मल्ल उपाधिक खूब चलन चलल छल । दक्षिणक चालुक्य वंशक राजालोकनि सेहो अपना नाममे मल्ल उपाधि जोड़ैत छलाह । एहि तरहें उत्तर तथा दक्षिण भारतक राजालोकनिद्वारा मल्ल उपाधि धारण कएल गेल अनेक प्रमाण उपलब्ध अछि ।

नान्यदेवद्वारा लिखल गेल भरतमुनिक नाट्यशास्त्रक एकटा टीका उपलब्ध होइत अछि । ओहि टीका ग्रन्थमे नान्यदेव अपना नामक संगे अनेक उपाधि जोड़ने छथि जाहिमे एकटा उपाधि मल्ल सेहो अछि ।

एहि तरहें विभिन्न ठामक राजा लोकनिद्वारा धारण कयल गेल मल्ल उपाधिसँ ई सहजहि अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे मल्ल उपाधि कोनो जातिक परिचायक नहि अपितु श्रेष्ठताक परिचायक छल। ओना मल्लक शाब्दिक अर्थ बलवान होइत अछि ।

मल्लवंशक परिचय

वंशावलीक अनुसार हरिसिंह देवक सन्तान श्यामसिंह देवके पुत्र नहि छलैन्हि ओ अपन पुत्रीक विवाह जयभद्र मल्लसँ करौलनि आ अपन उत्तराधिकारी सेहो बनौलनि । नान्यदेवक आक्रमणक कारण भागि कऽ तिरहुत पहुँचल आ ओहि ठाम बसि गेल मल्ल राजाक वंशमे जयभद्र मल्लक जन्म भेल छलैन्हि । जयभद्र मल्ल पश्चात् स्थिति मल्ल (जयस्थिति मल्ल^१) धरिक वंशक्रम वंशावलीक अनुसार निम्न अनुसार अछि ।

१. नाग मल्ल
२. जयजगत मल्ल
३. नगेन्द्र मल्ल
४. उग्र मल्ल
५. अशोक मल्ल
६. स्थिति मल्ल

जयस्थिति मल्लक वंशज जगज्ज्योतिर्मल्ल द्वारा रचित मुदितकुवलयामाश्र्व नानक नाटकमे हुनक पूर्वज सभक उल्लेख निम्न अनुसार अछि ।

१. हरिसिंहदेव
२. बल्लार सिंह
३. देव मल्ल
४. नाग मल्ल
५. अशोक मल्ल
६. स्थिति मल्ल

-
१. आनन्द देवक शासन कालक किछु पूर्वसँ नेपालक राजालोकनि अपना नामक शुरूमे 'जय' जोड़बाक चलन चलौलनि । पाछूक राजालोकनिक नामक शुरूमे रहल 'जय' शब्द नामक अङ्ग नहि मङ्गलसूचक पद थिक । ई चलन बादमे सब राजासँ स्वीकृत भेल छल ।

-- सूर्य विक्रम शवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. ३६ ।

सूर्य विक्रम जवाली लिखैत छथि जे वंशावलीमे मल्ल राजा लोकनिके श्याम सिंहदेवक पुत्री पक्षक मानल गेल अछि मुद्रा स्वयं ओही वंशक राजा लोकनि पुत्र पक्षक कहलनि अछि ।

जगज्ज्योतिर्मल्ल अपन वंशावली सेहो बनौलनि आ नान्यदेवसँ अपन वंशक्रमक उल्लेख कऽ अपनाकेँ कर्णाटवंशी कहलनि । प्रताप मल्ल सेहो अपन दूटा शिलालेखमे अपनाकेँ नान्यदेवक वंशज कहने छथि ।

जयस्थिति मल्लक मझिला पुलक पशुपतिक मन्दिरमे रहल १५ जनवरी १४१३ ईस्वीक एकटा शिलालेख प्राप्त होइत अछि जाहिमे ओ कर्णाट वंश सँ अपना वंशक सम्बन्धमे कोनो चर्चा नहि कयने छथि। ओ अपना वंशकेँ सूर्यवंशी आ रघुवंशी मात्र उल्लेख कयने छथि ।

जयभद्र मल्ल बेटी पक्षक वा बेटा पक्षक श्याम सिंह देवक उत्तराधिकारी छलाह । एहि बातपर कतहु किओ कोनो शङ्का नहि कयने छथि । रहल जग-ज्ज्योतिर्मल्ल आ प्रताप मल्लक वंशावलीक बात ओसभ शासन उत्तराधिकारीक क्रम वर्णन कएने होयताह से सम्भव जकरा किछु गोटे हुनक वंशावली बुझि विभिन्न शङ्का व्यक्त कयलनि ।

पूर्व मल्लवंशक सम्बन्धमे जेना अरिदेव द्वारा मल्ल उपाधि धारण करवाक प्रसङ्ग भेटैत अछि तेना श्याम सिंह देवक उत्तराधिकारीक प्रसङ्गमे एहन चर्चा नहि अछि तेँ जयभद्र मल्लकेँ श्याम सिंह देवक जमाय मानव सएह उचित अछि ।

राजनैतिक पृष्ठभूमि

नेपालमे मैथिली भाषाक प्रचारक मुख्य कारण थिक जे मिथिलापर जखन-जखन मुसलमान सभक आक्रमण भेल तखन-तखन मिथिलाक राजा लोकनि ओ हुनक आश्रित वा आश्रयक अन्वेषी विद्वान लोकनि नेपालमे प्रवेश कयलैन्हि^१ ।

बारहम् शताब्दीमे भारतक विविध भाग मुसलमान विजेतासभद्वारा पराजित होइत गेल । बारहम् शताब्दीक आरम्भमे बङ्गाल पर मुहम्मद खिलजीक विजय भ गेल छल । एकर बाद बङ्गालक मुसलमान शासकसभ दिल्लीक अधिन नहि रहए चाहैत छलाह आ अपनाकेँ स्वतंत्र घोषित करैत छलाह । दिल्लीक मुसलमान शासककेँ ई बात सह्य नहि छलैक ओसभ बङ्गालपर आक्रमण करैत छल । एहि आक्रमणक समयमे सामान्य हिन्दू प्रजाकेँ बहुत कष्ट होइत छलैक । एहि तरहेँ त्रस्त हिन्दूसभ तेरहम् शताब्दीमे वर्तमान

१. डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीष' मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. २१२

नेपालक विभिन्न भागमे प्रवेश कयलक । उत्तर बिहारसँ नेपाल नजदीक होयवाक कारणेँ मैथिलसभक नेपाल प्रवेश स्वभाविक छल । पिताम्बर लाल यादव लिखैत छथि जे अनन्त मल्लक समयमे डोय (तिरहुते) शासक उपर । पर आक्रमण कयने छल¹ ।

पौजिक प्रसिद्ध व्यवस्थापक म० हरिसिंह देव यवनसँ पराजित भ १३२४ ई मे नेपालक जङ्गलमे गेलाह । पछाति ओतय भातगाँवक समीप अपन राज्यक स्थापना कयलैन्हि² ।

प्रताप मल्ल हनुमान ढोकाक अपन शिलालेखमे लिखने छथि जे सिमरौन गढ छोडवाक लेल बाध्य भेलाक बाद हरिसिंह देव अश्मनगर अर्थात् पनौति मे आबि कऽ बसलाह आ ओहि ठामसँ नेपाल अएलाह ।

आक्रान्त यवनैर्भृशं विधिवशात्सोपद्रवं बान्धवैः
साधं तत्परिहाय चाश्मनगरं नेपालमभ्यागतः ।
सोऽ द्वाधिष्ठितमेदिनी परिवृढान् निर्धूय दिव्यास्पदं
तेने भक्तपुराह्वयञ्चकलितं हृष्टैश्चपुष्टैर्जनैः ।

प्रताप मल्लक अपन वंशावली रहल पशुपतिक ने० सं० ७७८ क शिलालेखमे हरिसिंह देवक सम्बन्धमे एहि प्रकार उल्लेख अछि ।

जातः श्रीहरिसिंहदेव नृपतिः प्रौढप्रतापोदयः
तद्वंशे विमले महारिपुरे गाम्भीर्यं रत्नाकरः ।
कर्त्ता यः सरसामुपेत्य मिथिलां संलक्ष लक्षप्रियो
नेपालेपुनराद्य वैभवयुते स्थैर्यं विधत्तां चिरम् ।

यवन अर्थात् मुसलमान द्वारा भयानक आक्रमण कएल गेलाक कारणेँ अपन तथा अपन धर्मक रक्षाक लेल ओ पहाड प्रवेश कऽ पनौतीमे आबि कऽ बसल छलाह ।

वंशावलीसभमे हरिसिंहदेवक सङ्ग आएल किछु जातिसभक उल्लेख अछि । वंशावलीक अनुसार ओ जातिसभ ब्राह्मण, भँडेल, आचार, जैसी, वैद्य, रजक तथा खड्गी छल । अर्थात् एहि जातिसभक लोक मिथिलासँ नेपाल प्रवेश कयने छल । ई जातिसभ एखनहु कोनो ने कोनो रूपमे नेपालमे अछि ।

1. पिताम्बर लाल यादव, नेपालको राजनैतिक इतिहास, आठौं संस्करण १९५०, राजविराज, पृ. ११ ।
2. डी० राइट, हिस्ट्री अफ नेपाल, युनिभर्सिटी प्रेस, लण्डन, प्र० सं० १९८७, पृ. १८० ।

हरिसिंह देवक मन्त्री चण्डेश्वर कृत्यचिन्तामणि नामक एकटा ग्रन्थमे अपनाके नेपालक राजाके जितनिहार तथा वाम्मतीक किनारमे तुलापुरुष दान कयनिहार कहने छथि ।

श्री चण्डेश्वर मन्त्रिणा मतिमतानेन प्रसन्नात्मा

नेपालाखिल भूमिपाल जयिना धर्मोन्दु दुग्धाब्धिना ।

वागवत्या सरितस्तटे सुरधुनि साम्यादधत्या शुची

मार्गमासि मथोकपुराय समये दत्तस्तुलापूरुषः ॥

एहि वाक्यसँ हरिसिंह देवक नेपाल प्रवेशसँ पूर्व हुनक मन्त्री चण्डेश्वर नेपाल आएल बातक अनुमान होइत अछि ।

उपर्युक्त वर्णनसँ एहि बातक संकेत भेटैत अछि जे मिथिलासँ नेपाल प्रवेशक परम्परा बहुत प्राचीन अछि । चाहे ओ जीविकाक लेल कहल जाय, धर्म रक्षाक लेल कहल जाय वा आत्मरक्षाक लेल कहल जाय, जाहि कोनो तरहें लोक मिथिलासँ नेपाल आएल ओकर भाषा सेहो सङ्गहि अएलैक। तखन, एहि ठाम परिमाणक प्रश्न अबैत अछि । परिमाण अधिक भेल तँ देखरगर होइत अछि आ कम भेलासँ लोक नजरि नहि दैत अछि । जेना कि गोश्वामी तुलसीदास अपन रामायणमे भरतक महानताक वर्णन करैत उदाहरण प्रस्तुत कयने छथि —

कवहुँ कि कांजी सीकरनि छीरसिंधु विनसाइ^१ ॥ एहि तरहें जखन किछु लोक एक एक कs आएल तँ ओकरा सभक भाषा नेपालमे हेराएल रहलैक मुदा जखन म० हरिसिंह देव मिथिलासँ आवि नेपालमे अपन राज्य स्थापना कयलनि तँ मैथिली तिव्र गतिसँ आगू बढल ।

म० हरिसिंह देवक देहावसान पश्चात् हुनक दू बालक मानसिंहदेव^२ आओर श्यामसिंहदेव लगभग सत्ताइस वर्ष धरि राज्य कएल^३ हुनका लोकनिक राज्यकालमे मैथिल विद्वान सभक सम्पर्क बनल रहल । श्यामसिंहदेवक पुत्र नहि छलैन्हि ओ अपन पुत्रीक विवाह नेपालक प्राचीन राजपरिवारक एक सम्बन्धी जयभद्र मल्लसँ करौलनि आ हुनका अपन उत्तराधिकारी सेहो

१. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा - २३१ ।

२. प्रेम शङ्कर सिंह हिनक नाम शक्तिसिंह देव लिखने छथि (मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्च) ।

३. डी० राइट, हिस्ट्री अफ नेपाल, यूनिभर्सिटी प्रेस लण्डन, प्र० सं० १९५७ ई., पृ. १५० ।

वनीलनि। जयभद्र मल्लक पूर्वज नान्यदेवक आक्रमणक समय भागि कऽ मिथिलामे वसि गेल छल । नान्यदेवक समयसँ श्यामसिंह देवक समय धरि मिथिलामे रहल जयभद्र मल्लक परिवार स्वभाविक रूपेँ मैथिली भाषी भऽ गेल छल । एक दिस स्वयं मैथिली भाषी दोसर दिस मैथिल महाराजक उत्तराधिकारी एहनमे मैथिली भाषा प्रति अनुराग स्वभाविक छल । एहि अनुरागक कारणेँ नेपालक राजदरबारमे मैथिलीक प्रतिष्ठा बढ़ैत गेल ।

एहि राजनैतिक पृष्ठभूमिमे नेपालमे मैथिली भाषाक प्रभाव बढ़ल ओ मैथिल विद्वान कवि एवं साहित्यकार एहि ठाम अपन प्रतिभाक प्रदर्शन कएल । संस्कृत ग्रन्थक तँ पर्याप्त रचना भेबे कएल, विद्यापतिक काव्य प्रतिभाक प्रेरणा स्वरूप पछाति स्ततन्त्र रूपसँ मैथिली कविता ओ मिथिलाक सङ्गीतक विकास भेल । मैथिली भाषाकेँ राजकीय प्रश्रय भेटि गेलासँ विकासमे तिव्रता आएल । पाछू अभिनय-प्रिय नरपति लोकनि नाटकक रचना तथा विभिन्न अवसरपर तकर प्रदर्शनक व्यवस्था सेहो कराओल । एहि दृष्टिएँ काठमाण्डू उपत्यका - भादगाँव, पाटन ओ कान्तिपुर (काठमाण्डू) शाखाक राजा लोकनिक दरवार मैथिली नाटकक केन्द्र बनि गेल ।

सामाजिक पृष्ठभूमि

मिथिला ओ नेपाल पार्श्ववर्ती होयबाक कारणेँ परापूर्व कालसँ परस्पर सामाजिक सांस्कृतिक सम्बन्धसँ आवद्ध रहल अछि । राजनीतिक सीमा सामाजिक सम्बन्धकेँ रोकऽ मे प्रायः असमर्थ होइत अछि । जतऽ दू देशक बीच पासपोर्ट आ प्रवेशाज्ञाक माध्यमसँ मात्र आवागमन होइत अछि ताहू ठाम दू देशक वर - वधू आपसमे सम्बन्ध स्थापित कइए लैत अछि तँ नेपाल आ मिथिला बीच पहिनुहुँ खुला सीमाना छल आ एखनहुँ खुला अछि । एहन अवस्थामे नेपाल आ मिथिलाक सामाजिक सम्बन्ध बढ़ैत जाएव स्वभाविक अछि। मानव जीवनमे आवश्यकता अनन्त अछि । सभ तरहक वस्तुक उत्पादन आ सभ तरहक ज्ञान एके व्यक्ति वा परिवारमे सम्भव नहि अछि । एही आवश्यकता सँ मनुष्य समाजमे रहैत अछि । गाम-गाम बीचक सम्बन्धसँ लऽ देश-देश बीचक सम्बन्धमे ई एकटा प्रमुख कारण थिक । एहि कारणसँ यदि दूर-दूरक समाज वा देशसँ सम्बन्ध रहैत छैक तँ पड़ोसीसँ किछु अधिक गाढ़ सम्बन्ध हएव स्वभाविक थिक । मिथिला आ नेपाल बीच सेहो बहुत प्राचीन कालसँ ई सम्बन्ध अछि । ई सम्बन्ध कहिया स्थापित भेल कोन समयमे कत धरि पहुँचल छल एकर कोनो औपचारिक अध्ययन तँ नहि भेटैत अछि मुदा अनुमान धरि कएल जा सकैत अछि । मनुष्य सामाजिक प्राणी थिक।

एसगर एकटा मनुष्य बाँचि नहि सकैत अछि से तँ नहि मुदा ई धरि पक्का जे ओ कि त योगी भ सकैत छथि जे जावत साँस चलतैन्हि तावत् भगवत भजन करैत ईश्वरमे अपनाकेँ लीन करवाक कोशीश करैत रहताह कि त एहन अभागी भ सकैत छथि जे कोनो कारण जेना-शिकार खेलैत जङ्गलमे बाट विसरि कऽ भूतिया जाथि वा पाराशूटसँ उतरैत एहन जङ्गलमे पडि जाथि जे बाट पता नहि लगा सकथि वा एहने कोनो अन्य कारणसँ निर्जन स्थानपर पडि जाथि तँ एकरा दुर्भाग्ये कहि सकैत छी नहि तँ जेहन मनुष्यक लोक कल्पना करैत अछि से समाजेमे रहैत अछि । सङ्गहि प्रकृतिक ई नियम कहियो नहि छुटल अछि जे सभ ठाम, सभ बस्तु उपलब्ध नहि होइत छैक । स्वभाविक रूपसँ मानवीय आवश्यकताक पूर्तीक लेल एक समाजक लोक दोसर ठामक समाजसँ एहन वस्तु सभक आदान-प्रदान अर्थात् व्यापार करैत अछि । कहवी छैक जे सरकारक छाप पक्का आ व्यापारिक जवान पक्का । अर्थात् व्यापारी अपना वचनक पालन प्रति प्रतिबद्ध रहैत अछि । ई प्रतिबद्धता आपसमे विश्वास अनैत अछि । ई विश्वास सामाजिक सम्बन्धकेँ मजबूत करैत अछि ।

नेपाल आ मिथिलाक आपसी सामाजिक सम्बन्ध तहियासँ मानल जा सकैत अछि, जाहियासँ दुनू समाजक अस्तित्व कायम भेल हुएत । ई त भेल दुनू समाजक आपसी सम्बन्ध । आव नेपालमे मल्लकालीन समाज केहन छल ताहि पर विचार करी ।

आजुक एकीकृत नेपालक अवधारणा मल्लकालीन समयमे नहि छल । ओहि समयक नेपाल शब्द काठमाण्डू उपत्यकाक बोध करवैत छल । ओहि समयक नेपाल अर्थात् काठमाण्डू उपत्यकामे वर्तमानमे जेहन औद्योगीकरण भऽ रहल अछि ताहि समयमे तेहन नहि छल । लोक सम्पूर्ण रूपसँ कृषिपर निर्भर छल । ताहि समयमे नेपालमे विद्याध्ययनक सार्वजनिक स्थलक अभाव छलैक । सम्पन्न परिवारक लोक विद्याध्ययनक लेल अन्यत्रहिसँ शिक्षक मँगवैत छलाह । मिथिला विद्याध्ययनक क्षेत्रमे पौराणिके कालसँ आगू अछि । आदिगुरु शङ्कराचार्य जे विद्वताक लेल विश्वविख्यात छथि शास्त्रार्थमे मिथिलाक पण्डित मंडन मिश्रक पत्नीसँ पराजित भेल छलाह । एक दिश मिथिलामे विद्याध्ययनक सुदृढ परम्परा छल आ दोसर दिस नेपालक पड़ोसी, स्वभाविक रूपेँ एहि काजक लेल अधिकांश पंडित मिथिलासँ मँगओल जाइत छलाह । नेपाल सब दिनसँ हिन्दू धर्म मानैत आएल अछि । नेपालमे हिन्दू धर्म संस्कृति अनुसार जन्मसँ मृत्यु धरिक संस्कार होइत आएल अछि । जहिना मिथिलामे हिन्दू धर्मावलम्बी

विभिन्न जातिक लोक छल तहिना नेपालमे सेहो हिन्दू धर्मावलम्बी विभिन्न जातिक लोक छल । दुनू ठामक धर्म, संस्कृति, व्यवहार, जाति आदिमे एक रूपता हएव आपसी सम्बन्धक लेल महत्त्वपूर्ण आधार छल । नेपालमे धार्मिक सांस्कृतिक नियम आदि बन् एबाक लेल मल्ल राजालोकनि बेर बेर मिथिलासँ पंडित बजबैत छलाह । एहन सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक भावनाक प्रचार प्रसारक लेल आजुक पत्रपत्रिका, रेडियो, टेलिभिजन सनक सञ्चार माध्यम नहि छलैक मुदा करब आवश्यक छलैक । एहन अवस्थामे मनोरञ्जनक संग धार्मिक, सांस्कृतिक भावनाक प्रसारक लेल नाटक सर्वथा उपयुक्त मानल जाइत छल । एकर एकटा इहो कारण छल जे एहिसँ पहिने वङ्गालमे चैतन्य आ असाममे शङ्करदेव नाटकक माध्यमसँ समाजमे धार्मिक भावनाक प्रचारमे सफल भेल छलाह ।

आर्थिक पृष्ठभूमि

मल्लकालीन नेपालक आर्थिक अवस्था बुझबाक लेल नेपालक स्थिति एहिसँ पूर्व केहन छल ताहि पर किछु विचार करब उचित बुझाईत अछि । प्राचीन समयमे सेहो नेपालमे कृषिक प्रधानता छल । कृषिए एहि ठामक निवासीक जीवन निर्वाहक प्रधान साधन छल । कृषिक आड़मे पशुपालन होइत छल । जे किछु व्यापार छल दक्षिणमे भारतसँ छल । नेपालमे आवश्यक माल सामान भारतसँ अवैत छल आ नेपालसँ ऊनी सामान कम्बल आदि भारत जाइत छल । ई व्यापार अत्यन्त सीमित छल । कारण, मनुष्यक जीवन अत्यन्त सरल छल आ आवश्यक सामान बहुत किछु एहि टाम उपलब्ध भऽ जाइत छल ।

लिच्छवीसभक शासनकालमे एहि स्थितिमे परिवर्तन आवए लागल । लिच्छवी शासकसभ धारा, मन्दिर, भवन इत्यादि वस्तु निर्माण करए लगलाह जाहिसँ नेपालमे कला क्षेत्रमे काज कयनिहारसभक समृद्धि होइत गेल । राजाश्रय भेटलाक कारणेँ काठ, शिला तथा धातुक काजमे ई वर्ग बहुत विलक्षणता हासिल कयलक । एहि समयमे सातम् शताब्दीमे तिब्बतसँ नेपालक सम्बन्ध स्थापित भेल । तिब्बतमे बौद्ध धर्म रबीकार भेलाक कारणेँ नेपालक कलाकार वर्ग अपन धर्माश्रित कलाक प्रचार करवाक पैघ क्षेत्र पओलक । कलाकारक संगहि नेपालक व्यापारी सभकेँ सेहो व्यापार करवाक पैघ क्षेत्र भेटलैक । नेपाल व्यापारक केन्द्र बनि गेल । एही समृद्धिसँ नेपालमे नव-नव नगर निर्माण होमए लागल । गुणकामदेवद्वारा निर्माण कएल गेल नगर कान्तिपुर एही समृद्धिक परिणाम थिक कहव अनुचित नहि हएत^१ । विक्रम सम्बत्क

१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, रायल नेपाल एकेडमी, काठमाण्डू, प्रथम बार, सम्बत् २०१६, पृ.-१७ ।

बारहम् शताब्दीक अन्तमे राजा शिवदत्त कीर्तिपुर शहर वसौलनि^१ ।

मल्लकालीन समयमे उपत्यकाक आर्थिक स्थितिक मूल्यांकन करबाक लेल ओहि समयमे ओहि ठामक लोकक पेशा, उद्योग-व्यापार आदि आयमूलक अवसर, यातायात, सञ्चार-सम्पर्क, शिक्षाक प्रसार आदि बातपर विचार करब आवश्यक बुझाईत अछि कारण जे आर्थिक स्थितिपर एकरा सभक गम्भिर प्रभाव होइत अछि । मल्लकालीन समाजक पेशा कृषि छल । डाकवचनमे कहल गेल अछि जे उत्तम खेती मध्यम वाण, नीच चाकरी भीख निदान । ई कहवी अन्य कोनो आधारसँ ठीक भ सकैत अछि मुदा आर्थिक दृष्टिकोणसँ ई ततेक उपयुक्त नहि बुझाईत अछि । पुरानमे वर्णित कथाक अनुसार कोनो समय एहनो छल जहिया कृषकक इच्छा अनुसार वर्षा होइत छलैक । ई कथा जहिनाक तहिना मानएमे कठिनाई भ सकैत अछि मुदा एतेक त एकर संकेत अवश्य बुझाईत अछि जे समय पर अर्थात् मौसम अनुसार वर्षा होइत छल । जेना-जेना समय बितैत गेल वन जङ्गलक विनाश होइत गेलासँ प्राकृतिक सन्तुलन बिगडैत जा रहल अछि । उपत्यकाक जमीन उपजाऊ भेलासँ कृषिक उब्जनी नीक होइत छल । मल्लकालीन समयमे काठमाण्डू उपत्यका खाद्यान्नक लेल स्वावलम्बी छल ।

उद्योग व्यापारक क्षेत्रमे सेहो उपत्यकावासी पाछू नहि रहल बात उपत्यकाक एकटा पैघ शहरक नाम बणिकपुर रहलासँ अनुमान कएल जा सकैत अछि । सामान्य व्यवहारक लेल आवश्यक वस्तु सभ प्राचीन कालहि जकाँ दक्षिणसँ अवैत छल मुदा कला क्षेत्रक व्यापार भोट (तिब्बत) सँ अधिक छल । कलाक क्षेत्रमे उपत्यका परापूर्व कालसँ प्रसिद्धि पओने अछि । मल्लकालीन दरबार सभमे रहल कला कृति एहि बातकेँ प्रमाणित करैत अछि जे ओहि समयमे कलाक परम्परा विकसित छल ।

यातायात सञ्चारक क्षेत्रमे मल्लकालमे आधुनिक साधन तँ नहि छल मुदा व्यापारिक कार्यक लेल घोडा, खच्चर आदिक प्रयोग होइत छल ।

औपचारिक शिक्षाक मल्लकालीन समाजमे अभाव छल मुदा सङ्गीत नृत्य आदिक परम्परा सुदृढ छल । ओहि समयमे सङ्गीतकेँ दरबारसँ प्रोत्साहित कएल जाइत छल सङ्गहि समाजमे सङ्गीत नृत्यक आयोजन सामाजिक

१. नेपाल परिचय, प्रकाशक-पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, त्रि. वि., काठमाण्डू, प्रथम संस्करण २०४१ वि. सं., पृ.-१६ ।

मनोरञ्जनक रूपमे धार्मिक भावनाक प्रचार प्रसारक लेल होइत छल ।

साहित्यिक पृष्ठभूमि

मल्लकालसँ पूर्व नेपालमे लिच्छवीकाल छल । लिच्छवी वंशक संस्थापक म० हरिसिंह देव जे पूर्वमे मिथिलाक नरेश छलाह मुसलमानसँ पराजित भऽ १३२४ ई मे नेपाल प्रवेश कयलैन्हि आ भातगाँवक समीप अपन राज्यक स्थापना कयलैन्हि । मिथिला साहित्यिक क्षेत्रमे पुरान कालहिँ सँ समृद्ध रहल छल । जखन म० हरिसिंह देव नेपाल अगलाह तँ हुनका सङ्ग हुनक आश्रित पण्डित विद्वान लोकनि सेहो अनेक पाण्डुलिपिक सङ्ग नेपाल आवि गेलाह^१ । म० हरिसिंह देव साहित्यिक मर्मज्ञ छलाह । हुनका दरबारमे अनेकौं विद्वान आश्रय पओने छलाह । एहन परिस्थितिमे साहित्यिक गतिविधि हएव स्वभाविक छल । मल्लकालसँ पूर्व साहित्यक जे ई परम्परा छल से मल्लकालमे सेहो कायम रहल ।

मल्लवंशीय शासकलोकनि स्वयं एहि विधाक मर्मज्ञ छलाह आ एहि काजक लेल मिथिलासँ विद्वान सभकेँ आमन्त्रण कऽ आश्रय सेहो दैत छलाह । एहि कालमे सामाजिक व्यवहार आ धार्मिक भावनाक प्रचार कए शान्ति सुव्यवस्था मिलएवाक लेल नाटकक रचना आ मंचनकेँ साधनक रूपमे लेल जाइत छल । विश्व मल्लक समयमे नेपालमे विद्याविलाप नाटकमे पहिल बेर मैथिली भाषाक प्रयोग भेल । एहि समय धरि अवैत अवैत संस्कृत प्राकृत भाषा जकर नाटकमे प्रयोग होइत छल सामान्य जनताक पहुँचसँ बाहर भऽ गेल छल । नाटकक मंचन जे सामान्य जनतामे सामाजिक व्यवहार आ धार्मिक भावना जागृत करएवाक लेल कएल जाइत छल तकर भाषा जनताकेँ बुझवला भाषा हएव आवश्यक भऽ गेल छल । यदि ई नहि भेल तँ फल प्राप्तिमे बाधा पहुँचवाक कारणेँ क्रमिक रूपमे मैथिली भाषाक प्रयोग बढैत गेल आ गद्य कथोपकथनमे सेहो मैथिली भाषाक प्रयोग शुरू भेल । ई क्रम बढैत बढैत संस्कृत प्राकृतमे कथोपकथन लिखवाक परम्परा निरस्त भऽ गेल ।

संस्कृत प्राकृत लोककेँ बुझए मे कठिन छलैक आ ताधरि आन जनभाषाकेँ साहित्यिक मर्यादा प्राप्त नहि भेलासँ मैथिली निर्वाध रूपेँ बढैत गेल । एहिसँ पूर्व चर्चा भऽ चुकल अछि जे मल्लकालीन समाज औपचारिक

१. डी० आर० रेग्मी, एनसिएन्ट एण्ड मेडिएवल नेपाल, काठमाण्डू १९५२ ई., पृ., १५१ ।

शिक्षाक क्षेत्रमे पछुआएल छल आ ई अभाव पूरा करवाक लेल मिथिलासँ विद्वान आमन्त्रित होइत छलाह । एहन परिस्थितिमे मैथिलीकेँ बल प्राप्त हएब ओहना स्वभाविक छल ।

धार्मिक पृष्ठभूमि

मध्यकालमे सेहो धर्म समाजक अभिन्न अङ्गक रूपमे छल । नेपालमे ओहू समयमे शैव, बौद्ध, वैष्णव, शाक्त आदि सम्प्रदायक बाहुल्य छल । प्राचीन कालहिसँ एहि ठामक राजा लोकनि धार्मिक आस्थामे विश्वास करैत आएल छथि । लिच्छवीकालीन राजा लोकनि एहि आस्थासँ अनेको देव मन्दिर सभक निर्माण करौलन्हि । मन्दिरक निर्माण राजाक लेल प्रतिष्ठाक विषय छल । यूरोपक यात्रीसभ नेपालकेँ “मन्दिरसभक देश”क संज्ञा देने छलैथि^१ ।

सूर्य विक्रम ज्ञवाली लिखैत छथि जे सिमरीन-गढक हरिसिंह देव अपन ईष्ट देवता तुलजाकेँ लऽ कऽ चौदहम् शताब्दीक आरम्भमे नेपाल प्रवेश कयने छलाह^२ । एहि शब्दसँ हरिसिंह देवक धार्मिक आस्थाक मूल्यांकन कएल जा सकैत अछि ।

चौदहम् शताब्दीक मध्यमे बङ्गालक मुसलमान शासक सुल्तान शमशुद्दिन नेपाल पर आक्रमण कऽ ओहि ठामक प्रसिद्ध देवस्थानसभ नष्ट कऽ वापस भऽ गेल छल^३ । ई आक्रमण उल्कापात सनक मात्र होयवाक कारणेँ इतिहासकार लोकनि एहि घटनाकेँ उल्लेख नहि कयलन्हि अछि । गोपाल वंशावलीमे एहि सम्बन्धमे उल्लेख अछि — तनतरे पूर्व सुरतान समसदिन नेनामागत्य नेपालं श्री पशुपति त्रिखंडीकृता नेपाल समस्त भस्मीभवान् । हा हा भवन्ति लोकश्च ॥ संवत् ४७० मार्गशिर सुदी ६ महाकष्ट भवामि भक्तापुरे ॥^४ गोपाल वंशावलीक उक्त अशुद्ध संस्कृत लेखक योगी नरहरिनाथ नेपाली भाषामे अनुवाद कयने छथि जकर मैथिली रूप एहि प्रकार अछि । “तदन्तर पुरुषक वाटसँ सुल्तान समसुद्दीन आवि कऽ नेपाल श्री पशुपतिनाथकेँ तीन खण्ड कयलक । ई सम्वत् ४७० अगहन

१. नेपाल परिचय, प्रकाशक — पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, त्रि० वि०, काठमाण्डू, प्रथम संस्करण, २०४१ वि० सं०, पृ. १६ ।

२. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. ६८ ।

३. उएह ।

४. उएह ।

शुक्ल यवमीक दिन भक्तपुरमे महाकण्ट भेल ।”

स्वयम्भूनाथक स्थानमे प्राप्त ने० सं० ४६२ आश्विन १३७२ इस्वीक अर्जुन मल्लक समयक एकटा शिलालेखमे सेहो सुल्तान शमशुद्दीनक नेपाल आक्रमणक सम्बन्धमे निम्नलिखित वर्णन अछि ।

आसीद्धर्मनिधि द्वयैकजलधिर्नेपाल भूमण्डले
ख्यातः श्री जयरामदेवनृपतिः तेनैव राजीकृते ॥
तस्मिन्नेव विराजतिस्म विमलः स्तूपा मुनेः केतन
श्री साह्येशिखरे प्रसिद्ध भुवने प्रस्थापिताः पूर्वकैः
सम्प्रत्य भ्यधिके श्रीमत्तेपालाब्द चतुः शते
मार्गशीर्षे सितेपक्षे दशभ्यां गुरुवासरे
सुरत्ताण समस्दीनो वज्रालवहुलैर्वलैः
सहयागत्य च नेपाले भग्नोदग्धश्च सर्वशः

उपर्युक्त उद्धरणसँ सुल्तान शमशुद्दीन द्वारा नेपालमे स्वयम्भूक शिखर पर जा तोड़फोड़ तथा आगि लगाओल गेल बातक जानकारी होइत अछि ।

ई ध्वंसात्मक कार्य पश्चात् आक्रमणकारी सभ वापस भऽ गेला पर नेपालमे शान्ति स्थापित भेल । देवालयसभक निर्माण शुरू भेल । एही क्रममे १३५७ ई. मे अशोक चैत्यक मरम्मत कएल गेल । १३६० ई. वैशाखमे जयसिंह राम पशुपतिक पुनः स्थापना कयलनि^१ । १३७२ ई. मे स्वयम्भूनाथक मरम्मत भेल^२ ।

एहि घटना पश्चात् एहि ठामक राजा तथा प्रजामे धार्मिक संस्कार आओर अधिक जागृत भऽ गेल । धार्मिक क्रियाकलापमे आओर अधिक सक्रियता आवि गेल ।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

प्राचीन कालहिसँ एहि ठामक लोक खास खास अवसर पर उत्सव मनवैत आवि रहल अछि । मध्यकालमे उपत्यकामे पावनि तिहार मनएवाक प्रवृत्तिमे आओर वृद्धि भेल । गाईजात्रा, इन्द्रजात्रा, दशैं, तिहार आदि उत्सव व्यापक रूपसँ मनाओल जाइत छल तथा स्थान — विशेष आ जाति — विशेषक

१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. ७२ ।

२. उएह ।

आधार पर सेहो अनेक उत्सव मनाओल जाइत छल^१ ।

मध्यकालमे एहि प्रकारक उत्सव मनएवाक लेल गुठीक बन्दोवस्त कएल गेल छल । कतेको गुठी राज्यद्वारा स्थापित कएल गेल छल आ कतेको गुठी जनताक आपसी सहयोगसँ स्थापित भेल छल । ई गुठीसभ धार्मिक उत्सवक अवसर पर कीर्त्तन, भजन आ धार्मिक नाचक आयोजन करैत छल । एही जनझुकावसँ प्रभावित भऽ विभिन्न राजालोकनि एहि परम्पराकेँ स्थायित्व देवाक हेतु गुठीक बन्दोवस्त करैत छलाह ।

एहन उत्सवसभ धार्मिक आ लौकिक दुनू प्रकारक छल ।

भाषिक पृष्ठभूमि

नेपालमे मैथिली नाटकक रचनासँ पूर्व ग्रन्थक रचना संस्कृत भाषामे होइत छल । नाटक सेहो संस्कृत प्राकृतमे लिखल जाइत छल । संस्कृत नाटकक प्रदर्शन सेहो अवसर विशेष पर होइत छल ।

काठमाण्डू शाखाक राजा प्रताप मल्ल संस्कृतक अनेक श्लोक तथा स्तुतिक रचना कयलैन्हि तथा काठमाण्डूक अनेक देवस्थानमे शिलालेख रखलैन्हि । ओ “कवीन्द्र”क उपाधि धारण कयने छलाह आ मुद्रा पर सेहो ई उपाधि अङ्कित करौने छलाह । पार्थिवेन्द्र मल्लक पुत्र भूपालेन्द्र मल्ल सेहो “कवीन्द्र चूडामणि”क उपाधि अपन मोहर (मुद्रा) पर अङ्कित करौने छलाह । पाटन शाखाक राजा योग नरेन्द्र मल्ल अपना मुद्रा पर “सङ्गीतार्णव पारग” उपाधि अङ्कित करौने छथि । उपर्युक्त उपाधि राजा द्वारा धारण कएल जाएब एक बात थिक मुदा एहन उपाधि मुद्रा पर अङ्कित कराएब एकटा अलग महत्व रखैत अछि । एहि उपाधिसँ ओहि समयक राजा लोकनिक दृष्टिमे काव्य तथा संगीतक कतेक महत्व छल से ज्ञात होइत अछि ।

मल्लकालीन नेपालमे नाटकमे मैथिली भाषाक प्रवेशक मुख कारण रहल संस्कृत प्राकृत भाषाक दुर्बलता । एहि समय धरि अवैत अवैत संस्कृत बुझब जन साधारणक लेल कठिन भऽ गेल छल । दर्शक अभिनयक अन्दाजसँ कथावस्तुक अनुमान करैत छल । स्वभाविक रूपेँ दर्शकक संख्यामे दिनानुदिन कमी होइत गेल छल ।

एहि समयमे मिथिलामे विद्यापतिक पदक बहुत प्रचार छल । नेपालमे

१. नेपाल परिचय, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, त्रि. वि., काठमाण्डू, प्रथम बार,

२०४१ वि. सं., पृ. २५ ।

सेहो विद्यापतिक पदक प्रचार भऽ गेल छल । बंगालमे चैतन्य महाप्रभु विद्यापतिक गीतसँ प्रभावित भऽ मैथिली यात्रा-गीतक माध्यमसँ धर्म प्रचारमे सफल भेल छलाह आ असाममे मैथिली भाषाक अङ्कियानाट बहुत प्रसिद्ध भेल छल । अर्थात् मैथिली भाषाकेँ साहित्यिक मर्यादा प्राप्त भऽ गेल छलैक ।

मध्यकालमे सार्वजनिक रूपमे जनताकेँ शिक्षा देवाक चलन नहि छल । एहि कारणसँ अधिकांश जनता अशिक्षित छल¹ । एहन अवस्थामे संस्कृत लिखल जाइत छल मुदा सामाजिक व्यवहारमे नहि छल आ तकर विकल्प खोजब आवश्यक भऽ गेल छल ।

नेपालमे मैथिली भाषाक विकास

मल्लकालमे मैथिली नाटकक विकासक मुख्य कारण भेल नेपालमे मैथिली भाषाक प्रसार एवं राजालोकनिक अभिनयप्रियता । मिथिला ओ नेपाल पार्श्ववर्ती क्षेत्र होयवाक कारणेँ अत्यन्त प्राचीन कालसँ परस्परमे घनिष्ठ सम्बन्धसँ आवद्ध रहल अछि । मिथिलाक सीमा आजुक अपेक्षा विस्तृत छल । नेपालक महोत्तरी, सप्तरी, मोरंग आदि जिला पूर्वमे मिथिला क्षेत्र अन्तर्गत छल । जनकपुर मिथिलाक तरपति जनकक राजधानीक रूपमे प्रसिद्धे अछि । सिमरौनगढ म० नान्यदेव (१०६७) क राजधानी छल । पहिने नेपाल जएवाक मार्ग एक मात्र मिथिले बाटे छलैक । तेँ जखन जखन मिथिलापर मुसलमान लोकनि आक्रमण करथि, तखन तखन मिथिलाक राजा लोकनि ओ हुनक आश्रित वा आश्रयक अन्वेषी विद्वान लोकनि नेपाल गेल करथि ।

पाँजिक प्रसिद्ध व्यवस्थापक कर्णाटवंशीय राजा हरिसिंहदेव १३२४ ई मे मुसलमानक आक्रमणसँ पराजित भऽ नेपालमे आश्रय लेलन्हि । ओहि ठाम भातगाँवक समीप ओ अपन स्वतन्त्र राज्यक स्थापना कयलन्हि । वस्तुतः उएह ऐतिहासिक घटना नेपालमे मैथिली भाषाक प्रचारक मूल कारण अछि । हरिसिंहदेव प्रसिद्ध काव्य रसिक छलाह तथा मिथिलाक कवि साहित्यकार हुनका मिथिलासँ चलि जएवाक पश्चातो मिथिलाक राजाक समान आदर करैत छलाह । तखन नेपालमे राज्य स्थापना करवाक पश्चात ओहू ठाम हुनक दरबारमे मैथिल विद्वानक आवागमन सर्वथा स्वभाविक छल । म० हरिसिंहदेवक देहावसानक पश्चात हुनक दू बालक म० मानसिंहदेव (शक्तिसिंहदेव) ओ म० श्यामसिंहदेव राज्य कयलनि । हुनका सभक राज्यकालमे मैथिल विद्वान सभक सम्पर्क कायम रहल ।

1. नेपाल परिचय, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, त्रि. वि., काठमाण्डू, प्रथम बार, २०४१ वि. स., पृ. २६ ।

मल्लवंशीय राजालोकनि सेहो आग्रहपूर्वक मैथिल विद्वान सभके अपना दरवारमे आनन्वित करैत छलाह । जयस्थिति मल्ल अपन राज्यकाल (१३८६-१४२६ ई.) मे मिथिलासँ कीर्तिनाथ उपाध्याय, रघुनाथ झा, श्रीनाथ भट्ट, महिनाथ भट्ट ओ रमानाथ झाकेँ भूमि, जाति, मृत्यु कर्म प्रभृतिक नियम बनएवाक हेतु आमन्त्रित कयने छलाह^१ । एहिना जगज्ज्योतिर्मल्ल (१६१३-१६३७ ई.) वंशमणि झाकेँ आमन्त्रित कयने छलाह । प्रतापमल्ल मैथिल ब्राह्मण नरसिंह ठाकुरकेँ गुरुक उपाधिसँ सम्मानित कयने छलाह । हिनकर दू गोटा पत्नी मिथिलाक छलैन्हि । नेपालक राजालोकनिक सद्ब्यवहारक कारणेँ कतेको मैथिल विद्वान नेपालमे स्थायी रूपसँ बसि गेलाह । मैथिल विद्वानसभक नेपालमे जएवाक एकटा मुख्य कारण मुसलमानसभक मिथिलापर बढैत प्रभाव सेहो छल ।

नेपालक दरवारमे मैथिली भाषा समादृत होयवाक एक कारण विद्यापतिक गीतक माधुर्य सेहो छल । विद्यापतिक मैथिली गीतक माधुर्यसँ बंगाल आ आसाम सेहो ओहिना प्रभावित भेल छल । नेपालक राजालोकनि जे स्वयं सङ्गीत-मर्मज्ञ छलाह मैथिली भाषाकेँ माधुर्यक कारणेँ पूर्ण सत्कार कएल ।

एहि तरहें नेपालमे मैथिली भाषाक प्रभाव बढल । मैथिल विद्वान, कवि ओ साहित्यकार एहि ठाम अपन अपन प्रतिभाक प्रदर्शन कएल । संस्कृत ग्रन्थक तँ पर्याप्त रचना भेवे कयल विद्यापतिक काव्य प्रतिभाक प्रेरणा स्वरूप स्वतन्त्र रूपसँ मैथिली कविता ओ सङ्गीतक विकास भेल । मैथिली भाषाकेँ राजाश्रय प्राप्त भेलैक । अभिनयप्रिय नरपतिलोकनि नाटकक रचना तथा ओकर विभिन्न अवसरपर अभिनयक व्यवस्था सेहो कराओल । एहि तरहें सांस्कृतिक भाषाक रूपमे मैथिली प्रतिष्ठित भेल ।

मध्ययुगमे नेपाल विद्वानक केन्द्र

मुसलमान सभक भारतमे प्रवेश अष्टम् शताब्दीक आरम्भमे भेल छल । मुदा ताहि समयमे भारतीय संस्कृतिपर ओतेक भारी धक्का नहि लागल छलैक । एगारहम् शताब्दीक आरम्भमे महमूद गजनीक आक्रमणसँ मुसलमानो विजयक परिणाम स्पष्ट होमए लागल । भारतीय अर्थात् हिन्दू संस्कृतिक महल चरमराए लागल । एहि अवस्थामे जखन भारत वर्षक अन्य क्षेत्र मुसलमानो आतङ्कसँ त्रस्त छल, हिन्दू धर्म संस्कृतिक क्रियाकलाप नगण्य भ-गेल छल, मिथिलामे बहुत दिन धरि ई अवस्था नहि आएल छल । मुदा एकर कारण ई

१. बालचन्द्र शर्मा, नेपालको ऐतिहासिक रूपरेखा, चतुर्थ संस्करण, पृ-१३८ ।

नहि छल जे मिथिलापर मुसलमानी आक्रमण नहि भेल । एक दिश मिथिलापर मुसलमानी आक्रमण विलम्बसँ भेल दोसर दिस मुसलमान शासकसभ एहि ठामक राजालोकनिसँ कर लेबाक शर्तपर आन्तरिक शासन व्यवस्था एहि ठामक राजा सभपर छोडि देलैन्हि ।

परिणामस्वरूप सम्पूर्ण भारत वर्षक हिन्दू धर्म संस्कृतिक केन्द्र मिथिला बनि गेल । सभ ठामक ज्ञान पिपासु लोक अपन ज्ञानक प्यास भेटएबाक लेल मिथिला अबैत छलाह । पछाति मिथिलापर सेहो मुसलमानसभक नजरि गडि गेल । मुसलमानसभक आक्रमण आ अत्याचार बढ़ि गेल । ओ सभ हिन्दूक नाम नहि सुनऽ चाहैत छल । एही अत्याचारक कारणेँ मिथिलाक विद्वानसभ नेपाल दिस पड़एलाह ।

कर्णाटवंशीय राजा हरिसिंहदेव जखन मुसलमानसँ पराजित भए नेपाल प्रवेश कयलनि आ ओहि ठाम अपन राज्य स्थापित कयलनि तँ हिन्दू विद्वानसभकेँ बहुत सुरक्षित आश्रय स्थल प्राप्त भेलैन्हि । मिथिला जे सभ प्रान्तक विद्वान सभक आश्रय छल आव नहि रहल । नेपाल मिथिलाक बदला विद्वान सभक आश्रय स्थल बनि गेल । नेपालमे विभिन्न प्रान्तक विद्वान लोकनि जे शरण लेलनि ताहि सम्बन्धमे शिवप्रसाद सिंह लिखैत छथि—हत्या आ अन्य घटनाक कारण सभ प्रान्तसँ शिक्षा आ संस्कृति नाश भ गेल । विद्वानसभक की त हत्या कऽ देल गेल की ओ सभ भागि कऽ नेपाल चलि गेलाह^१ ।

निष्कर्ष ई जे मुसलमानी आक्रमण आ अत्याचारक कारण सम्पूर्ण भारत वर्षक विद्वान लोकनि नेपालमे आश्रय लेलनि । परिणामस्वरूप नेपाल विद्वानक केन्द्र बनि गेल ।

मलकालीन समाजमे नेवारी एवं मैथिलीक सम्बन्ध

देश गुणे वेष प्रचलित कहबी अछि । स्थानीय परिवेष्टक प्रभाव सभ वस्तुपर पड़ैत अछि । भाषा सेहो एहिसँ अछूत नहि रहि सकैत अछि । जखन हरिसिंह देव मुसलमानसँ पराजित भऽ गेलाह आ नेपालमे भातगाँवक समीप अपन स्वतन्त्र राज्य स्थापना कयलनि तँ मैथिली आ नेवारी दुनू भाषाकेँ सानिध्य प्राप्त भेलैक । दरबार जाहि ठाम नरेश स्वयं स्थानीय जनताक भाषा नेवारी नहि जनैत छलाह स्वभाविकेँ मैथिली भाषा प्रयोग होइत छल । ग्राम जनता जे परापूर्वकालसँ नेवारी भाषाक प्रयोग करैत छल से एखनहु करिते

-
1. शिवप्रसाद सिंह, कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९५५ ई., पृ.— २२

छल। मातृभाषा प्रति प्रेम कोनो आइए उत्पत्ति भेल अछि से नहि, माय आ मातृ-भाषा प्रति प्रेम तहिएसँ लोकक मनकेँ वशीभूत कयने अछि जहिया मनुष्यकेँ ज्ञान प्राप्त भेलैक । आइ सनक लिखित, मौखिक भाषा जहिया नहियो छलैक ताहू प्रारम्भिक चरणमे अर्थात् जहिया इशारासँ मात्र भाषाभिव्यक्ति होइत छलैक तहियो ई प्रेम अवश्य छल । एहन परिस्थितिक कल्पना कएल जाए तँ दुनू ठामक भाषाभिव्यक्ति दू भिन्न धारामे प्रवाहित होयवाक अनुमान होइत अछि ।

दरवार आ जनतामे अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होइत अछि । यदि दरवार नहि रहय अर्थात् सरकार नहि रहए तँ जनताक आपसी विवाद आ वाह्य आक्रमणसँ सुरक्षा दुनू गम्भिर बनि जाएत। तहिना जनता विना दरबारक कोनो अस्तित्व नहि मानल जा सकैत अछि । राजनीतिशास्त्रक विद्वान लोकनि राज्यक लेल चारिटा आवश्यक तत्त्व मानलैन्हि अछि । जनसंख्या, भू-भाग, सरकार आ सम्प्रभुता । एहिमे सँ कोनो एकटाक अभावमे राज्य नहि बनि सकैत अछि । एहि ठाम द्रष्टव्य थिक जे राज्यक चारि आवश्यक तत्त्वमे सँ सरकार आ जनता सजीव वस्तु थिक आ भू-भाग एवं सम्प्रभुता निर्जीव वस्तु थिक । कोनो राज्यक स्थापनाक लेल यदि सरकार वा दरवार अगुवा होइत अछि तँ जनता चाहवे करी अन्यथा शासन ककरा पर । यदि जनता अगुवा होइत अछि तँ सरकार चाहवे करी अन्यथा आपसी कलह वा वाह्य आक्रमणसँ सुरक्षा करवाक आन कोन उपाय । सरकार आ जनता दुनू मिलि कऽ मात्र भूभाग पर अधिकार जमा सकैत अछि आ इएह अधिकार सम्प्रभुता कहल जाएत । एहन स्थितिमे जनताक अभिव्यक्ति बुझवाक लेल दरवारकेँ जनताक भाषा नेवारी बुझव आवश्यक छलैक तँ जनताकेँ दरवारक भाषा बुझव सेहो ओहिना आवश्यक छलैक । दू भाषा-भाषीक व्यक्तिकेँ भाषाभिव्यक्तिक लेल दूभाषियाक आवश्यकता होइत छैक जे दुनू गोटेक भाषा बुझि सकए एकटाक अभिव्यक्ति दोसर धरि पहुँचा सकए । जखन दू व्यक्ति कोनो निश्चित अवधि धरि कोनो खास विषय पर बात करए चाहए तँ ई सम्भव अछि मुदा जखन दुनू एके ठाम रहएवला भऽ जाए तँ स्वभाविक थिक जे दुनू पक्षमे एक दोसराक भाषा सिखवाक आवश्यकता पडतैक से ताहू समयमे अवश्य भेल होएत । जखन मैथिली भाषी दरवार नेवारी सिख गेल आ नेवारी भाषी जनता मैथिली सिख गेल तकर बादक स्थितिमे दुनू भाषा भाषीकेँ जे सुगमता भेलैक तकर संगहि दुनू भाषाक आपसी सम्बन्ध सेहो तहिना मजबूत भ गेल ।

उपरोक्त पृष्ठभूमिमे रहल मल्लकालीन समयमे नेवारी आ मैथिलीक सुमधुर सम्बन्ध बहुत सहजहि अनुमान कएल जा सकैत अछि ।

मल्लकालीन मैथिली नाट्य केन्द्र

नेपाल सम्बत् ६०२ फागुन १४८२ इस्वीमे नेपालक मल्लवंशीय राजा यक्ष मल्लक मृत्यु पश्चात् नेपालक राज्य तीन भागमे विभाजित भ गेल। हिनक ज्येष्ठ पुत्र राय मल्ल भादगाँव (भक्तपुर) क, दोसर पुत्र रण मल्ल वणिकपुर (वनेपा) क; आ तेसर पुत्र रत्न मल्ल कान्तिपुर (काठमाण्डू) क राजा भेलाह^१। वनेपा राज्य शाखाक संस्थापक रण मल्ल ओहि ठाम २१ वर्ष धरि शासन कयलनि मुदा हुनक एक मात्र पुत्र विजय मल्लक देहान्त हुनक जीवन कालहिमे भ गेलैन्हि। पश्चात् भक्तपुरक नरपति सुवर्ण मल्ल (हिनक दोसर नाम भुवन मल्ल छलैन्हि) वणिकपुरक राज्य अपना राज्यमे मिला लेलनि^२। एम्हर कान्तिपुर राज्य शाखाक राजा हरिहरसिंह मल्लदेवक समयमे कान्तिपुर राज्यशाखा दू भागमे बँटि गेल— कान्तिपुर शाखा आ पाटन (ललितपुर) शाखा^३। ई तीनू राज्य शाखा मल्ल शासनक अन्तधरि कायम रहल। एहि सभ शाखामे मैथिली नाटकक रचना आ अभिनय भेल तथापि भक्तपुरमे मैथिली नाटकक रचना आ अभिनय अपेक्षाकृत अधिक भेल।

-
१. सूर्यविक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.-६२
 २. बालचन्द्र शर्मा, नेपालको ऐतिहासिक रूपरेखा, च. सं. २०३३ वि. सं., पृ.- १४२-१४३
 ३. डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीष', मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- २२०
 ४. उएह, पृ.- २१८



तृतीय अध्याय

मल्लकालीन मैथिली नाटकक विवरण

नेपालक मल्लवंशक शासनकालमे जयस्थिति मल्ल नाट्यकलाक बड़ पैघ पृष्ठ पोषक छलाह । साहित्य आ गान बजानमे विशेष दखल रहल जयस्थिति मल्ल संस्कृतक पैघ विद्वान छलाह^१ । जयकान्त मिश्र लिखैत छथि “सभसँ पहिने संस्कृत नाटक जे नेपालमे लिखल गेल से सम्भवतः जयस्थिति मल्ल (१३८०-१३९४) क शासनकालमे । प्रतीत होइत अछि जे ई नाट्य साहित्यमे अनुराग मिथिलासँ पओलनि, जतए हिनका परिष्कृत साहित्यिक रुचि जगलैन्हि आओर जखन ई नेपाल-नरेशक नवीन पदपर आसीन भेलाह तखन ई ओहि रुचिके सफल करवाक पर्याप्त अवसर पओलनि । (ई राजालोकनिक समाधिस्थल पर वाणीद्वारा दीपक राग सुनएवाक प्रथा चलओलनि) अपन पुत्र धर्ममल्लक जन्मोत्सवक अवसर पर चारि अंकक रामायण नामक नाटकक अभिनय करओलनि^२ ।”

जयस्थिति मल्लक ज्येष्ठ पुत्र धर्म मल्लक व्रतबन्धक समयमे राधवानन्द नाटक देखाओल गेल छल^३ (अविरत सेवमान श्रीश्रीपशुपति चरणाम्बुजयरागपिञ्जरित शेखरस्य श्री श्रीजयस्थितिराजमल्लदेवस्यात्मनो हृदयानन्ददिणः जशार श्री श्रीजयधर्ममल्ल देवस्य रघुकुलोचितव्रतवन्दमहोत्सवप्रसङ्गप्रभुदितेन जनसमूहेन नृत्यमानमभिनवराधवानन्द नाटकम्..... ।”

जयस्थिति मल्लक ज्येष्ठ पुत्र धर्म मल्लक विवाहक अवसरपर

-
१. पिताम्बर लाल यादव, नेपालको राजनैतिक इतिहास, आठौं संस्करण, राजविराज, पृ.- १६
 २. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- १४८
 ३. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.- २२६

भैरवानन्द नाटकक अभिनय कयल गेल छल^१ । (यदद्यासौ सूनो: कुमार श्रीजय-
धर्ममल्ल देवस्य .. विवाहमहोत्सव दर्शनोत्सुकानां .. समाज:
भैरवानन्द नाटक दर्शनाकांक्षा वर्तते तत् त्वया
नाटयितव्यम्) ।

एहिना धर्ममल्लक राज्याभिषेकक अवसरपर सेहो नाटक प्रदर्शन
होयबाक सूचना भेटैत अछि । अर्थात् जयस्थिति मल्लक समयमे नाटकक रचना
आ अभिनयकेँ महत्व देल गेल छल । जयस्थिति मल्लक मृत्यु पश्चात् नेपालक
सांस्कृतिक क्रियाकलापमे गतिरोध उत्पन्न भए गेल । एकर कारण ई भ.स.कैत
अछि जे ओहि कालमे नेपालक प्रभुसत्ता विषम स्थितिमे छल । हिनक सन्तति
यक्ष मल्ल प्रतापी राजा भेलाह जे लगभग ४३ वर्ष (लगभग १४७४ ई.) धरि
नेपालक राजा रहलाह तथा मगध धरि अपन विजयध्वज फहरौने छलाह ।
हिनक मृत्यु पश्चात् नेपालक राज्य तीन भागमे विभक्त भए गेल । ज्येष्ठ बालक
राय मल्ल भक्तपुर, दोसर पुत्र रण मल्ल बनेपा आ तेसर पुत्र रत्न मल्ल
कान्तिपुरक राजा भेलाह । किछु दिनक बाद बनेपा भक्तपुरमे मिल गेल^२ आ
कान्तिपुर दू भाग (काठमाण्डू-ललितपुर) मे बँटि गेल ।

भक्तपुरमे रचित नाटक

विश्वमल्लक मणितासँ रचित नाटक

विद्या विलाप^३:-

ई नेपालमे रचित मैथिलीक पहिल नाटक थिक । विद्याविलापक
पदकर्ताक रूपमे वीरनारायण एवं रामचन्द्रक चर्चा कएल जाइत अछि । विद्या
विलापक वैशिष्ट्य ई अछि जे ओहिमे मैथिली गद्यक प्रयोग भेल अछि । डा०
जयमन्त मिश्र लिखैत छथि जे वीर पुस्तकालयसँ प्रकाशित नाटक विषयक बृहत्
सूची पत्रमे एहि नाटकक विवरण नहि अछि । ओहिमे जाहि विद्याविलापक
उल्लेख अछि ओ थिक परवर्तीकालक भूपतीन्द्र मल्लक । डा० जयकान्त मिश्रक
इतिहासमे ओकर रचयिताक नाम उल्लेख नहि अछि । प्रो. प्रफुल्ल कुमार

१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २२७
२. डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीष', मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. - २२०
३. सम्पादक- डा. जयकान्त मिश्र, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति,
१ एलनगञ्ज रोड, प्रयाग, प्रथम संस्करण, १९६५ ई. ।

“मौन” एकर रचना विश्वमल्लक पुत्र त्रैलोक्य मल्लक राज्यकालमे भेल कहने छथि^१ मुदा सूर्य विजय जवाली कहैत छथि जे एहि नाटकक रचना विश्व मल्लक समयमे भेल अछि । एकर प्रमाण नाटकक आरम्भमे भेटैत अछि । सूत्रधार कहैत अछि— श्रीमत् श्री भक्तपत्तननगरी सकल गुणिजन पोषित, तार महिमा शुन श्री विश्व मल्ल नृपति श्री श्री जय विश्व मल्ल देवस्य सभाके महिमा शुन ... श्री भक्तपत्तन नगरे^२ विद्याविलाप नाटक प्रवृत्त हैलो, ता देखि निमित्त आक्षे जावो^३ । ई नाटक अपूर्ण अछि ।

एहि प्रमाणसँ आव शङ्का नहि रहैत अछि जे विद्याविलाप नाटक जाहिमे सर्वप्रथम नेपालमे मैथिली गद्यक प्रयोग भेल ओ रायमल्लक प्रपौत्र विश्व मल्ल (१५३३) क राज्यकालमे लिखल गेल छल ।

त्रैलोक्य मल्लक शासनकाल (१५७२-१५८६) मे रचित नाटक

कृष्ण सम्बन्धी नाटक:-

विश्व मल्लक उत्तराधिकारी त्रैलोक्य मल्लक आश्रयमे कृष्ण चरितपर लिखल गेल एकटा मैथिली नाटकक खण्डित प्रति उपलब्ध अछि^४ । एकर गीतक भणितामे रामचन्द्र आ वीरनारायणक नामोल्लेख भेटैत अछि । ई दुनू गोटे हुनक आश्रित कवि होथि से सम्भव । एहि नाटकपर जयदेव आओर विद्यापतिक गीतक प्रभाव अछि^५ । एहिमे प्रयुक्त एकटा गीत एहन अछि—

कमलनयन मोहि विसारल
सुन मधुरिका सखि ।
वसन्त दारुण काल गमाओय
कइसन जीवन राखि ।
दक्षिण पवन मेघ सुधाकर
भेल सभ किछु जानि ।
चन्दन शीतल बोलिले गाओल
रेणु उड़ए लह लागि ।

-
१. डा. श्री दुर्गनाथ झा ‘श्रीष’, मैथिली साहित्यक इतिहास, न. सं. १९८३, पृ.— २१५
 २. सूर्य विक्रम जवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.— २२८
 ३. उएह, पृ. २२८-२२९
 ४. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.— १५१

वेदनि हे हरि बिनु बड हय दुख
 चरण कमल यदि छाडल ता दिन गयल सुख
 सकल रयनि जागि गमाओलि
 न छाडे नीर नयन ।
 अवश्य आओत हर महागुणी
 वीरनारायण भान ।

एहि नाटकमे रहल विरह वर्णनक एक गीत एहन अछि—

सघन वरसिए मेहा
 सुमरि सुबन्धु महा ।
 जीव छटपट नीद न आवए
 विरह दगध देहा ।
 मन पंछि हय जावो
 जाहागिया पायिवो
 हाते धरिया पाय पड़िया
 गला तुलिया लइवो ।
 चन्दन चिरण भावए
 कुसुम साजि सोहावए
 अङ्ग मोड़ि मोड़ि आङ्गन ठाकि
 मन चाँदिक घावए ।

ई नाटक अपूर्ण अछि आ एकर नाम सेहो निश्चित रूपसँ पता नहि लागल अछि ।

जगज्ज्योतिर्मल्लक भणितासँ रचित नाटक

मेष संक्रान्तिक दिन आदि भैरवक रथ यात्राक चलन चलौनिहार¹ त्रैलोक्यमल्लक बालक जगज्ज्योतिर्मल्ल सङ्गीत तथा साहित्यक बड प्रेमी छलाह। ई अनेक ग्रन्थक रचना कयलनि । जेना— पद्मश्रीक नागर सर्वस्वक टीका, श्लोकसारसंग्रह, सङ्गीतसारसंग्रह, सङ्गीतसारार्णव, सङ्गीतभास्कर, सङ्गीतचन्द्र आदि । हिनक भणितासँ रचित दू गोट मैथिली गीतक संग्रह राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि— गीत पंचाशिका आ गीत संग्रह । वंशमणि नामक मैथिल पण्डित हिनका दरबारमे आश्रय पओने छलाह । हिनका दरबारमे मैथिली भाषाक पूर्ण चल्ती छल । नेपालमे मैथिली नाटक

1. बालचन्द्र शर्मा, नेपालको ऐतिहासिक रूपरेखा, चतुर्थ संस्करण, पृ.— १४६

कलाक विकसित परम्पराक सूत्रपात हिनकासँ भेल । एकर इहो कारण भ सकैत अछि जे ओ स्वयं कला एवं साहित्यक निष्णात् विद्वान छलाह । हिनक भणितासँ युक्त तीन गोटा नाटक उपलब्ध अछि ।

मुदितकुवल्याश्वः:-

जगज्ज्योतिर्मल्लक भणितासँ रचित नाटक सभमे ई सबसँ पूर्वक नाटक थिक । एकर रचना १५५० शाके अर्थात् सन् १६२८ ई मे भेल ।

(खशहरमुखेन्दु १५५० व्यञ्जिते शाकवर्षे ।

स्मरतिथिवुधमैत्रेव्वर्जुने ज्यैष्ठपक्षे ।

बुधवरकृतसङ्गः श्री जगज्ज्योतिरीशै

मुदितकुवल्याश्वं नाटकं चारुचक्रे)

एकर कथानक मार्कण्डेय पुरानक मदालसा आ कुवल्याश्वक प्रसिद्ध कथा पर आधारित अछि ।

(मार्कण्डेयपुराणान्तर्गतमेतन्मदालसोपाख्यान ।

दृष्ट्वा भाषागीतैर्नाट्यं रचितं विचित्र रसभावयुतं ।

श्रीमता श्रीजगज्ज्योतिर्मल्लभूपति सुरिणा ।)

ई चारि अंकमे रचित अछि तेँ एकर अभिनय चारि दिनमे होइत छल । एकर विषयवस्तु मदालसा ओ कुवल्याश्वक परिणयकथा अछि । ई सुखान्त नाटक थिक । एकर नायक उच्चकुलोद्भव राजा शत्रुजितक पुत्र छथि । एकर कथोपकथन चमत्कार गीतमे अछि । एहि नाटकमे श्रृङ्गारादि नवो रसक विधान गीतमे कएल गेल अछि^१ । ई गीत प्रधान नाटक थिक । एकर उद्धरण विद्वान लोकनि बारंवार देने छथि कारण जे एहि नाटकमे नेपालक मल्लवंशक राजा लोकनिक विषयमे महत्त्वपूर्ण सूचना अछि । एहि नाटकक विषयमे डा० जयकान्त मिश्र कहने छथि जे—

“Among his Maithili dramas, the earliest was Mudit Kuvalayasva, which is frequently quoted by scholars because it contains valuable information regarding the Malla dynasty of Nepal King.

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित, पृ.— ४६१ (माइकोफिल्म नं. B१५/२६)

2. डा० जयकान्त मिश्र, मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव, पृ.— ५७

एहि नाटकक लेखक जयज्योतिर्मल घोषित छथि मुदा कतोक विद्वान
एकरा वंशमणि झाक कृति मानैत छथि । एहि नाटकक राजवर्णना गीतमे
वंशमणिक नामोल्लेख अछि ।

सुकवि वंशमणि फणिपति जान ।

नृप जगजोतिक सविधि बखान ॥

वंशमणिक नामोल्लेख रहल एकटा दोसर अंश—

सुकवि वंशमणि पुरगुण गाऊ ।

नृप जगजोतिमल होथु चिराउ ॥

ई संस्कृत मिश्रित नाटक थिक । एहि नाटकमे प्रयोग भेल मैथिली
गद्यक एक अंश जे जयज्योतिर्मलक विषयमे कहल गेल अछि—

“परन्तु ई महाराजाधिराज काव्यगान्धर्वकलानीतिशास्त्रनिपुन
अतिविदग्ध कओने अभिनय अनुरक्त होएताह ।”

“क्षणं विचिन्त्य ॥ प्रिये स्मरण भेल । मैथिलभारद्वाजगोत्र कवि
पण्डित श्री रामचन्द्रशर्मपुत्र श्री वंशमणि उझा बे कहल । जे मो बे कहिअएलाहु
तन्हि हि कुवलयाश्रमदालसा चरित नाम नाटक से नाचह ।”

मैथिल समाजमे प्रचलित लगनी, झूमरि, चुमाओन, मेघमल्लार आ
कोहवर आदि गीत सेहो एहि नाटकमे अछि । कोहवर गीत—

“सख्युक्ति कोवर गीतं ॥ घनाश्री ॥ प्र० ॥

कोटि अनंग सम सुन्दर, सुन्दर श्याम मनोहर डिटि भरि

देखव सब ॥

कनक कलश लए जाएव, जाएव तसु गुण गाएव ।

नयन काजर लए साजब, साजब हरि सबे बाजब ॥

हृदय हार जके लाओव, लाओव अति सुख पाओव ।

नृप जगजोतिमल भावए, भावए प्रभु पद पावए ॥

एहि नाटकक गीतसभमे अलंकारक चमत्कार सेहो बड निखरल अछि ।
उपमालंकारक एक दृष्टान्त—

जेहन दिवाकर किरण उदय भेल

तिनिर मलिन भए जाई ।

प्रबल प्रताप नाथ तुव तेहने

पिशुन पराभव पाई ॥

1. डा. दुर्गानाथ झा ‘श्रीष’, मैथिली साहित्यक इतिहास, न. सं. १९८३,
पृ.— २१५

नाटकक कोनो-कोनो गीत-मार्कण्डेय पुराणक पंक्ति छायानुवादे संस्कृतमे अछि आ तकर भावानुवाद मैथिलीमे अछि । एहि गीतसभपर विद्या-पतिक गीत परम्पराक स्पष्ट प्रभाव अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त मैथिली भाषा परिष्कृत अछि ।

हरगौरी विवाह नाटक:-

जगज्ज्योतिर्मल्लक भणितसँ रचित ई दोसर नाटक थिक^२ । मुदितकुवल्याश्च नाटक लिखलाक दोसरे वर्षमे अर्थात् सन् १६२६ मे ई नाटक लिखल गेल । ओहि साल जुन महिनाक २१ तारिखक दिन सूर्य ग्रहण लागल छल । ओहि अवसर पर जगज्ज्योतिर्मल्ल तुला-पुरुषदान कयने छलाह । ओही समारोहमे एहि नाटकक अभिनय भेल छल । पुष्पिका वादय-

“इति श्री महाराजाधिराज श्री श्री जगज्ज्योतिर्मल्लकृतं
पञ्चपञ्चाशाद्गीतोपवद्धं हरगौरी विवाह नाटकं समाप्तं ॥

... सम्बत् ७४६ ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या सूर्य-ग्रासस
श्री श्री जगज्ज्योतिर्मल्लदेव प्रभु ठाकुर सन तुलदानस
क्ष्व हरगौरी विवाह प्याखनदयका जुर् ॥”

गीरीक तपस्या तथा आराध्यदेव शिवके पतिक रूपमे प्राप्ति एहि नाटकक आधिकारिक कथावस्तु थिक । ई पूर्णतः मैथिलीमे लिखल गेल नियमित नाटकक नीक उदाहरण थिक । एकरा सम्पादित कए डा० रामदेव झा प्रकाशित करौलैन्हि । एहि नाटकमे प्रयुक्त महेशवाणीसभ उल्लेख्य कोटिक अछि । प्रवेश गीत ओ निर्गम गीतक सेहो निवेश भेल अछि । एहि नाटकमे वंशमणिक अतिरिक्त विद्यापति, विष्णुपुरी, सदानन्द, गोविन्द, करण महेश, कृष्ण राए, कवि रतन, चतुर चतुर्भञ्ज, जगदीश आओर शशिशेखर सिंहक गीत समावेश अछि । स्थान-स्थान पर गद्यक प्रयोग सेहो भेल अछि । गद्यक स्वरूप विशेष परिमार्जित अछि-

महादेव- हे नन्दी भूङ्गी जहिया सजो सती देह त्याग कएल तहिआ सजो मोनो वियोग व्याकुल रहबो । अतएव सती हिमालयक गृह अवतार लेल । ते चलह ततए जाऊ ।

हरगौरीविवाह नाटक मैथिली नाटकक इतिहासमे विलक्षण महत्त्व

1. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास, प्र. सं. १६७५ ई., पृ. १६६
2. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- १५१

रखैत अछि । गद्यक भाषामे अनुप्रास वा ध्वनि मैत्रीक ओहने पुट अछि जेना वर्णरत्नाकरक भाषामे, मुदा एकर शब्दावली वा भाषामे ओतेक पाण्डित्य प्रदर्शन नहि अछि ।

एहि नाटकमे नओ भाग अछि जकरा अंकक बदला 'सम्बन्ध' नाम देल गेल अछि । कथा विशद नहि कएल गेल अछि । अभिनय, नृत्य आओर संगीतपर विशेष ध्यान देल गेल अछि । एहिमे परवर्ती कर्तनिया नाटकक सभ लक्षण पाओल जाइत अछि । जेना— शिव गौरीसँ विवाह करवाक लेल उद्यत होइत छथि । विवाहक व्यवस्था होइत अछि । सभ मिलि कऽ शिवक स्तुति करैत छथि । मेनकाक पिता ऋषीश्वरक भूमिका ओहने छैन्हि जेना अंकियानाट वा कर्तनिया नाटकमे सूत्रधारक अछि । शिवक गण, नन्दी आओर भृङ्गी, शिवक शिष्य वसु आ विधि तथा गौरीक परिचारिका गौण पात्रमे छथि । एकर पाण्डुलिपिमे वाक्यसभक बीच-बीचमे रहल पदच्छेद—चिह्न सभ ओहने अछि जेहन ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर, मैथिलीधूर्तसमागम वा श्रीकृष्णकेलि-मालाक पाण्डुलिपिसभमे अछि । एहू नाटकमे बीच-बीचमे नेपालक अन्य नाटक सदृश मञ्च-निर्देश कएल गेल अछि जे अभिनेतासभ मञ्चक कोन भागमे ठाढ़ भए अभिनय करत, नाचत वा गाओत । एहि मञ्च-निर्देशसँ नेपाली नाटककार लोकनि मञ्चपर नाटकक प्रस्तुतीकरण तथा नाटककेँ प्रभावकारी बनएवाक हेतु कतेक सतर्क रहैत छलाह तकर संकेत भेटैत अछि । सूर्य विक्रम ज्ञवाली लिखैत छथि जे विविध राग तथा रागिनीमे गाओल जाएवला ५५ भाषा-गीत एहि नाटकमे होयवाक कारणेँ एकर तुलना विदेशी ओपेरासँ कएल जा सकैत अछि ।

कुञ्जविहार नाटक^२:-

जगज्ज्योतिर्मल्लक भणितासँ रचित एहि तेसर नाटकक पाण्डुलिपि नेवारी भाषामे तालपत्रपर लिखल राष्ट्रीय अभिलेखालय नेपालमे सुरक्षित अछि । डा. प्रबोधचन्द्र वागची एहि नाटककेँ 'परिचय' नामक बङ्गला दैनिकमे सम्पादित कऽ प्रकाशित करौलैन्हि । ई नाटक राधाकृष्ण ओ गोपीक प्रेमलीला विषयक गीति नाट्य थिक । राधाकृष्णक कुञ्जवनमे विहार वा प्रणय-लीला सम्बन्धी मान, विरह, अनुनय, विनय, प्रबोध उपालम्भ आदि गीत एहि

1. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. २३०

2. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित, सू. सं.- प्र. ४६१

(माइक्रोफिल्म नं.- B १५/६)

नाटकमे अछि । एहि नाटकमे रहल गीतसभकेँ स्वतन्त्र गीतक रूपमे प्रयोग कयल जा सकैत अछि । एहि नाटकमे नाट्यशास्त्र अनुकूल प्रस्तावना, विष्कम्भक, प्रवेशक, बीज, विन्दु, पताका, प्रकरी सन्धि आदिक निवेश खोजव व्यर्थ थिक मुदा लेखकक उद्देश्य नाटक लिखव थिक एकर प्रमाण पुस्तकक आरम्भमे भेटैत अछि- “श्री कुंजविहार नाम नाटक लिख्यते । प्रथम नान्दी गीत ।” एहि नाटकमे कथावस्तु शुन्य सनक अछि ! अंकक विधान सेहो नहि अछि । मुदा एकर अध्ययनसँ उच्च कोटिक गीत-काव्यक आनन्द प्राप्त कएल जा सकैत अछि । एकर अभिनय सेहो ओहने आनन्दमय भऽ सकैत अछि । ई नाटक देखलासँ ओहि समयक रङ्गमञ्चक सरलताक बोध होइत अछि । एहि नाटकक लेल कोनो विशिष्ट रङ्गमञ्चक आवश्यकता नहि अछि आ नहि कोनो विशिष्ट वेशभूषाक प्रयोजन एहि नाटकक लेल अपेक्षित अछि । तखन, अभिनय कयनिहार पात्रक लेल सङ्गीतक ज्ञान आवश्यक छल । नाटकक गीतसभ विद्यापतिसँ प्रभावित अछि¹ । नाटकक आदिमे रहल नान्दी गीत-

॥ राज विजय ॥ जति ॥

अनल सुरुज शशि तिनहु नयने ।
जत अभिमत देअ पावहु वदने ॥
बरा भय शूल हाथ डमरू वजावे ।
ताहि शिव परसादे सबे सुख पावे ॥
गजानन षडानन सुत दुहु संगे ।
मंगलदायक रूप अछि बड रंगे ॥
चाँद गांग तनु धवल प्रगासे ।
नृप जगजोति भन तुअ पद आसे ॥

सूत्रधार गबैत अछि-

कुञ्जविहार हरि छाज रे,
गोपी सबे हरखित आज रे ।

एही समयमे राधा ओ कृष्ण दुनू गोटेक प्रवेश होइत अछि आ दुनू गोटे गबैत छथि-

जाहि बह जमुना तीर; शीतल सुरहि समीर ।
नवदले तरु अरे सोह, मधुकर धुनि सब मोह ।
ताहि विदिशवन माझ, हमर हृदय गुणे बाझ ।

1. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास, पृ.- १५५

ताहा गए करिए विलास, जाआ पहु पुरावए आस ।
 नृप जगज्योतिमल्लवाणी, मोर गति एके भवानी ।
 एहि नाटकमे प्रयुक्त ऋतु सम्बन्धी गीतसभ ओहिना रोचक अछि । राधा
 कृष्णक अन्य प्रेमिकासँ ईर्ष्या करैत कहैत छथि—
 सौतिन सम नहि आन ।
 जगत अहित सब जान, .
 सजनी सब ॥

जँबे मधुर दिअ तीत ।
 ओ सवे मानए तीत ॥
 साप डसल होअ झार ।
 ओकरा नहि परकार ॥
 पहु होअ अपन अहीत ।
 नहि धैरज होअ चीत ॥
 नृप जगजोति एह भान ।
 राखब दुहुक मान ॥

गीतिनाट्य होयबाक हिसाबेँ एहि नाट्यक सम्पूर्ण कलेवर गीतमय अछि ।
 गीतसभ एकसँ एक सुन्दर अछि । सभटाक उल्लेख सम्भव नहि अछि तथापि
 उपहास गीतक एक उद्धरण जाहिमे कवि वृद्धाक वर्णन कयने छथि ।

सारस गमनि दिधर तुव गात ।
 वकुल धान केतकि सम दात ॥ सुन्दरि पारे ॥
 कुइर नयन देखि भीह गेल भागि ।
 वनचर श्रवण जैसन बुधि कागि ॥
 खन रोव खन हस कह कत भाति ।
 चिकुर झरियगेर कोहड़ काति ॥
 एहन रमणि देखि के नहि भूल ।
 पुरुष समाज जतए तत धूर ॥
 रूप अनुसार नृप जगजोति गाव ।
 शिव परसाद परिहास बुझाव ॥

एहि सम्पूर्ण नाटककेँ देखलासँ बुझाईत अछि जे नाटककारक उद्देश्य
 सरस गीतक शृङ्खलासँ दर्शकक मनोरञ्जन करव रहल हएत । / एहि नाटकक
 गीतसभ कथाक सूत्र मिलएवामे ततेक सफल नहि अछि मुदा गीतमय वातावरणक
 सृष्टिमे बहुत सफल अछि ।

जंगत् प्रकाश मल्लक भणितासँ रचित नाटक

जगज्ज्योतिर्मल्ल पश्चात् हिनक पुत्र नरेन्द्र मल्लक राज्यकालमे कोनो नाटक लिखल गेल बा नहि से ज्ञात नहि अछि मुदा नरेन्द्र मल्ल पश्चात् हुनक उत्तराधिकारी गन्धर्व विद्यागुरु नामे प्रख्यात जंगत्प्रकाश मल्ल नेपालमे मैथिलीकेँ उत्कर्षक शिखरपर पहुँचा देलनि । सम्भवतः ई ने. सं. ७६६ अर्थात् १६४६ ई मे गद्दीपर बैसलाह^१ । ई स्वयं सुकवि ओ नाटककार छलाह । हिनका कवितामे बहुत रुचि छलैनहि आ अपनाकेँ कवि सम्राट कहैत छलाह । “पद्य-समुच्चय” तथा “नानार्थ-देव-देवी गीत संग्रह” नामक गीत संग्रह हिनकर भणितासँ उपलब्ध होइत अछि । हिनको दरबारमे मैथिल पण्डितक बहुत सत्कार छल । हिनक भणितासँ रचित नाटकसभ निम्न प्रकार अछि ।

प्रभावतीहरण नाटक^२:-

एहि नाटकमे कृष्णपुत्र प्रद्युम्न ओ ब्रजपुरक ब्रजनाभक पुत्री प्रभावतीक विवाहक कथा वर्णित अछि । एहि नाटकमे तीन अंक अछि । एहिमे गद्यक प्रचुर प्रयोग अछि तथापि आद्योपान्त नृत्य ओ गीतक प्राधान्य अछि । पात्र परिचय पश्चात् कथा आरम्भ भेल अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतसभमे वंशमणिक नामोल्लेख अछि । एकर रचनाक समय १६५७ ई. अछि । पटना विश्वविद्यालयक डा० लेखनाथ मिश्र एकर सम्पादन कयलनि अछि । एहि नाटकमे सूत्रधार भाषामे प्रस्तावना करैत अछि-

सूत्रधार- हे प्रिय एतए आउ ॥ नटी तिपनदुहाय ॥

नटी- नाथ मोर नमस्कार, कओने कारणे बोलावला ॥

सूत्रधार- हे प्रिय राजाक आज्ञा भएल, भगवतिक महोत्सव प्रभावतीहरण नाम नाटक नाचए आदेश भेलछ ।

नटी- हम नहि जानथी छहि, कउन राजाक आज्ञा ॥

सूत्रधार- प्रिये अवधान करू ।

एहि नाटकमे ठाम-ठाम श्रृङ्गार रसक रोचक गीत अछि-

अपरुव रमणी तुअ मुख चंद ।

सेहे देखि मोर उपजल आनन्द ॥

1. Dr D R. Regmi, Ancient and Medieval Nepal, Kathmandu, 1952, page- 254

2. पाण्डुलिपी राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । पुस्तक सूची संख्या प्र० ३६५

सुन्दरि तोहे कर एक परकार ।
 मदन बेआधि सजे जे होव संतार ॥
 विहुसि करह हम सबो सद भाव ।
 अधिक माने रस किछु नहि पाव ॥
 जगत प्रकाश भने मानवती ।
 माने मारह जनु तोहे निजपती ॥^१

एहि नाटकमे प्रयुक्त गद्य कथोपकथनक एक अंश-

प्रभावती- हे प्राणनाथ कि उपाय करव ।

प्रद्युम्न- हे प्रिये त्वास जनु करिय, हमे, एक क्षणे सबहि मारव । किन्तु
 संबंधी भेले, ते मारयिते संकोच होयिछ ॥

प्रभावती- हे नाथ, अपन जीवन रक्षा करु ई अमोघ अस्त, हमरा वाप के,
 ब्रह्मा देल, ई लियो, अपन प्राण रक्षा करु ॥

प्रद्युम्न- भल जे इहाक अभिमत ॥

एहि नाटकक राज वर्णनामे वंशभणिक नामोल्लेख अछि-

सूत्रोवित राजवर्णना दयोडमा ॥ राग कोशिक ॥ चो ॥

रविकुल कमल विकास दिनेश ।

उगल जगत परगास नरेश ॥

दुरजन तिमिर दुरहु दुर गेल ।

धरम-करम अति उपचित भेल ॥

हरषित लोक शोक नहि काहु ।

वसिसय धन जनि धन वरिसाहु ।

केओ बोल राम, केओ बोल काम ।

काहुक मन पृहवी हिमधाम ॥

चंद्रावति पदुमावति देयि कन्त ।

तसु जसे पुरल सकल दिगन्त ॥

भनयि वंशमणि भणे गुणि सार ।

करि बलि राय कर्ण अवतार ॥

एहि नाटकमे जगत् प्रकाश मल्लक पिताक नाम नरेश मल्ल कहल
 गेल अछि आ एहन उल्लेख अन्यत्रो भेटैत अछि । द्रष्टव्य थिक ओ अंश-

1. पाण्डुलिपिक पत्र संख्या- ६ सँ ।

2. देखू इतिहास, भाग १ (कक्षा ६ र १० संयुक्त), जनक शिक्षा सामग्री
 केन्द्र लिमिटेड, सानो ठिमी, भक्तपुर, एघारौं संस्करण २०५० वि. सं.,
 पृ.- ३८

नटी- हे प्राणनाथ हमे जानल, रघुवंशावतार श्री श्री जगज्योतिर्मल्लक दुसर धर्मावतार श्री श्री नरेश मल्ल देवक हृदयानन्द राजाधिराज श्री श्री जयजगत्प्रकाश मल्ल देव जन्हि के राधानि शतहु मुखे कहय नहि पारि तथापि किछु मोय कहै छव । अवधान करु ।

नलीय नाटक¹:-

एहि नाटकक रचना नेपाल सम्बत् ७९० अर्थात् १६७० ई मे भेल । एकर प्रमाण नाटकक अंतमे लिखल ई पंक्ति अछि-

“इति श्री श्री जय जगत्प्रकाश मल्ल विरचितं नलीय नाटकं सम्पूर्णम् । सं. ७९० श्रावण वदि ।”²

ई नाटक सेहो पौराणिक आधारपर रचित अछि । पुरानमे वर्णित नल-दमयन्तीक कथा एहि नाटकमे उत्तम ढंगे सुनियोजित रूपसँ वर्णित अछि । प्रारम्भमे “ॐ नमः श्री नृत्येश्वराय, श्री गुरु गणेशाय नमः” पश्चात् वन्दना गीत अछि जाहिमे महादेवक स्तुति कयल गेल अछि ।

चाँद वदन हर चाँद तिलक धर

चाँद शेखर वर नाम ।

भमिते भमय कय सदा शिव नाचर

गौरी राखल दिश वाम ॥³

एहि नाटकमे गद्यक प्रयोग बहुत सुन्दर भेल अछि । राजा नल जूआ खेलाइत कालक कथोपकथनक एक अंश-

मन्त्री- हे महारानि, महाराज नल सम्पूर्ण सामग्री आध राज्य हारल आध अछ सेहओ आडलन्हि अछ, अतः पर हमरा सबहि की करब ॥

दम० - हे मन्त्री, हमर प्राणहु हुनक अधीन, हमे की कहब, तथापि एहि बालक रक्षा निमित्त इहाँ बुझबीअथु ॥

मन्त्री- महारानी अवश्य ॥

मन्त्री- हे महाराज, अतः पर इहाँ का द्यूत समूचित नहि ।

नल- हे मन्त्री, इहाँ लोके हमरा के हिताहित किछु जनु कहिअ अवश्य हमे खेलाएव ।

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । सूची- प्र० ३९७

2. उएह, प. सं.- १०८

3. पाण्डुलिपिक पत्र संख्या- १ सँ /

राजकुमार— हे पिता हमरो शरीर इहाहिक तथापि अपन वंशक रक्षा निमित्त हमरा थाम कृपा करू छूत सबो निवृत होउ ॥

नल— हे पुत्र इहाज यद्यपि यथार्थ कहै छिअ तथापि हमरा एहने इछा हमे खेलाएव ।

एहि नाटकमे संयोग वियोगक चित्र विशेष निखरल अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतमे चन्द्रशेखरक नामोल्लेख अछि । चन्द्रशेखर जगत्प्रकाश मल्लक पत्नी रानी अन्नपूर्णाक भाइ छलाह ।

कुमरि दमयन्ति सुन्दरि रूप ।

त्रिभुवन नहि सम तोहरि रूप ॥

जगत प्रकाश भन देखि पद सार ।

चाँद शेखर सिंह प्राणक हार ॥

ई हिनक सभसँ पैघ नाटक अछि, पाण्डुलिपिमे ई १०८ पृष्ठमे पूर्ण भेल अछि ।

मलयगन्धिनी नाटक^१:-

सत्रहम शताब्दीक मध्यभागमे लिखल गेल एहि नाटकमे वसुभूति राजाक पुत्री मलयगन्धिनीक केकालकेतु दैत्यद्वारा अपहरण, दिवाह, पुत्रोत्पत्ति ओ अभिषेक कथा विस्तारसँ वर्णित अछि । कैशोर्यावस्थामे राजा वसुभूतिक पुत्री मलयगन्धिनी उपवनमे विचरण करैत काल केकालकेतु नामक दानवद्वारा अपहरण कएल जाइत अछि । ओहि ठाम नारद हुनक विपत्तिक कथा सुनि राजा अभिगजितकेँ पातालक चेपावती नगर पठवैत छथि जतए मधुकेतु, चण्डकेतु ओ केकालकेतुक संहार कए मलयगन्धिनीसँ विवाह कए अपन राज्य धुरैत छथि । यथा समय मलयगन्धिनीकेँ पुत्र उत्पन्न होइत छैन्हि जे देवीद्वारा देन गेल वरदानक फलस्वरूप सोलह वर्षक नवयुवक भए जाइत छथि ओ भगवान शङ्करक प्राप्त्यार्थ तप करैत छथि तथा हुनकाद्वारा वीरेश्वर नामसँ अभिहित कएल जाइत छथि । वीरेश्वरक अभिषेक तथा अपना मतामह-मातामहीसँ मिलन होइत छैन्हि ।

एहू नाटकमे अन्य नाटकहि सदृश "ॐ नमः श्री नाटेश्वराभ्याम्" कहि नृत्यनाथ महादेवक स्मरण कऽ बन्दना शुरु होइत अछि । बन्दना गीत मैथिलीमे अछि आ शङ्करक बन्दना कएल गेल अछि । एकर बादक एक संस्कृत श्लोक पुनः शङ्करक बन्दना अछि, पश्चात् पुष्पाञ्जलि श्लोक आ

१. राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित, सूची- प्र० ४३६

तकर बाद सूत्रधार आ नटी नाटकक प्रस्तावना करैत अछि । सूत्रधार राजवर्णना आ नटी देशवर्णना करैत अछि ।

एहि नाटकक रचना तीन अंकमे भेल अछि । तेसर अंकक अन्तिम अंश खण्डित छैक । एकर नान्दीमे “जगत्प्रकाश भने नाटक नाथे” कहल गेल अछि । सूत्रधार कहैत अछि “श्री श्री जय जगत्प्रकाश मल्लक आज्ञा भेलछे” मलयगन्धिनी नाटक अभिनय कुरु ।”

एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतसभ ओतेक चमत्कारक नहि अछि परन्तु कोनो-कोनो गम्भीर आओर मार्मिक सेहो अछि । राजा वसुभूतिक वियोगमे रानी मदनाक अभिव्यक्ति -

बहुत दिवस भेल प्रिय मोहि तेजि गेल ।

रवि विनु कमरिनि भूल ॥

हृदय अनले दह पुनु दह शशधर ।

मलय समिल दह मूल ॥¹

जगत्प्रकाश मल्ल तथा पाटनक श्रीनिवास मल्लक बीच भेल रहल समयक ई नाटक होयबाक कारणे” एहि नाटकमे श्रीनिवास मल्लक वर्णनमे लिखल गीत सेहो अछि -

चौखण्ड नरपति तोहर वखान ।

द्विभूवन महीपति सम नहि आन ।

निरमल मति तुअ गाँग जलधर ।

गल गजराज मोति मोति सुन्दर हार ।

चौसठि कला पर सरूपहिँ काम ।

शरदक शशिमुख बड अभिराम ।

शिरि निवास भूपति शरण ले लो ।

जगत्प्रकाश अति ताह सुख देवा ।

ई गुणगान राजवर्णनाक सन्दर्भमे अछि । राजवर्णना पश्चात् सूत्रधार पुनः कहैत अछि - “हे प्रिये एहन श्री श्री श्रीनिवास मल्ल । उन्हिक जशवर्णना भक्तापूरक राजा श्री श्री जगत्प्रकाश मल्ल रातत करथि ।”

श्रीनिवास मल्ल तथा जगत् प्रकाश मल्लक काठमाण्डूक विरुद्ध मैत्री रहल समयक ई नाटक होयबाक कारणे” एकर रचना १६६८ ई. क आसपास

भेल अनुमान होइत अछि ।।

उषाहरण नाटक^२:-

एहि नाटकक कथावस्तु श्रीमद्भागवतक कथापर आधारित अछि । एहि नाटकमे श्रीकृष्णक पौत्र अनिरुद्ध ओ वाणासुरक पुत्री उषाक विवाहक कथा वर्णित अछि । सम्पूर्ण नाटक मैथिली गद्य-पद्यमय अछि । एहि नाटकमे भाषाक नान्दी गीत पहिने आ नान्दी श्लोक ओ पुष्पाञ्जलि श्लोक तकर बाद आएल अछि । एकर बाद सूत्रधारक प्रवेश होइत अछि । सूत्रधार गीतमे भगवतीक स्तुति करैत अछि । पात्रसभ अपन-अपन परिचय संस्कृत श्लोकमे देने छथि । एहि नाटकक ई विशेषता अछि जे एहि नाटकक प्रस्तावना मैथिलीमे अछि, संस्कृत आ प्राकृतक प्रयोग प्रस्तावनामे नहि भेल अछि ।

सूत्र० - अलमति विस्तरेण, हे प्रिय एतय आउ ।

नटी - (तिपदुं) - हे प्राणनाथ, हमर प्रणाम, की कारणेँ आह्वान कयल ।।

सूत्र० - हे प्रिये आज परमेश्वरीक महोत्सवे नाना देश पंडित गण एकत्र भेल अछि एहि सबक अनुरञ्जनार्थ उषाहरण नाटक अभिनय करू । श्री श्री जय जगत्प्रकाश मल्ल देवक ज्येष्ठ राजकुमार श्री श्री जय जितारि मल्ल देवक ई आज्ञा भेल अछि ।

नटी - हे प्राणप्रिय कबेन देशक राजा ।

सूत्र० - हे प्राणवल्लभे राजा नहि जनै अछि ।।

नटी - जी वेश आज्ञा करू ।।

एहि नाटकमे कथाक संयोजन नीक जकाँ नहि भेल अछि मुदा गीतसभ चमत्कारक अछि । द्रष्टव्य थिक भगवतीक स्तुति गीत -

जय देवि वर देह करह उधार ।

तोहुहु कएल मात जगत विचार ।।

वाण खरग चक्र पात्र धर हाथ ।

चरम गदा धनु विदु तुअ साथ ।।

केसरि उपर छलि त्रिभुवन माता ।

सुर असुर नर जगहुक धाता ।।

जगत चंदन भन आदि सूत्रधार ।

शंभु सदाशिव करथु विहार ।।

1. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २३२
2. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित, सूची - प्र. १५६४

एहि नाटकक राजवर्णना, देशवर्णना आदि गीतसभक भणितामे जगत चन्द्र उल्लेख अछि । शायद जगत्प्रकाश ओ चन्द्रशेखर एहि दुनू नामक ई संयुक्त रूप थिक जे दुहुक अभिन्नता सूचित करैत अछि ।

गद्य-पद्यमय ई नाटक उत्तम कोटिक अछि ।

पारिजातहरण नाटक^१:-

इहो नाटक पौराणिक कथापर आधारित अछि। उमापतिक पारिजात-हरणक जे कथा अछि ओएह एहू नाटकक कथा अछि । एहि नाटकमे तीन गोठ अंक अछि । नेपथ्यक योजना सेहो एहि नाटकमे भेल अछि । संस्कृत, मैथिली, नेवारी ओ ब्रजभाषा एहि नाटकमे मिश्रराएल अछि मुदा बाहुल्य ब्रजभाषाक अछि । द्रष्टव्य थिक सूत्रधारक प्रस्तावना -

सूत्र - समस्त नेपाल को अधिपति महाराजाधिराज श्री श्री श्रीनिवासमल्ल को परमेश्वरी को यात्रा महोत्सवमे अनेक देश सोँ आए हो मेरी कछु विनती सुनिए । पहिलो कवनो देश सोँ एक नटुवा तिन्हहु वीभत्स रस पूर्ण नाच नाचि कहु सबलोक सताचो हो ओय लोग सब रिझावने को परम विदग्ध भरत कुलावतंश वानी रसाल राय जिउ को शिष्य ललित चरित नाम मथुरा पुरसोँ हो आयो हो तुम सबहु कृपा करयो चाहिए ॥

मूलदेवशशिदेवोपाख्यान^२:-

एहि नाटकमे मैथिलीक शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि मुदा वाक्य रचना नेवारी भाषामे अछि । एकर भणितामे जगत चन्द्रक नामोल्लेख अछि ।

मदनचरित नाटक^३:-

मैथिली गद्य-पद्यक सुन्दर प्रयोग भेल एहि नाटकक अभिनय जगत्-प्रकाश मल्लक छोट बालक उग्र मल्लक उपनयनक अवसरपर भेल छल । द्रष्टव्य, पुष्पिका वाक्य-

इति श्री श्री जगत्प्रकाश मल्ल कृतः कनिष्ठ पुत्र श्री श्री उग्र मल्लस्य उपनयनस्थाने मदन (चरित) नाटकः समाप्तः ।”

एहि नाटकमे प्रयुक्त मैथिली गद्यक स्वरूप -

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित, सूची - प्र. ४२०
2. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । पुस्तक सूची संख्या प्र. - ३७७
3. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - १०८

सूत्रधार - हे प्रिये एतय आउ ।

नदी - हे नाथ हमर प्रमाण । की आज्ञा करै छिअ ।

सूत्रधार - हे प्रिये श्री श्री जगत् प्रकाश मल्ल देवक ज्येष्ठ राजकुमार श्री ी
जयजितामित्र मल्ल देवक आज्ञा भेल आछ ।

एहि नाटकमे मैथिली पद्यक सेहो सुन्दर प्रयोग भेल अछि । द्रष्टव्य
थिक एहि नाटकमे प्रयुक्त पद्यक एक अंश -

अथिर कलेवर कमलपातल जलतले

भवन कनकजन रजत आदि जय थिर महि रह सब जने,

सुत मित सब धन सुख दुख सरि अथिर जानर मने ।

मालती-माधव^१:-

मालती आओर माधवक प्रसिद्ध प्रेम-कथापर आधारित एहि नाटकमे
सेहो सुन्दर मैथिली गद्य-पद्यक प्रयोग भेल अछि । छोट-छोट मुदा ललित एवं
परिष्कृत शैलीक गद्यक प्रयोग भेल एहि नाटकक पद्यसभ सामान्यतः साधारण
कोटिक अछि मुदा कोनो-कोनो गम्भिर आओर मार्मिक सेहो अछि । गीतक
अणितामे जगतचन्द्रक नाओल्लेख भेटैत अछि ।

नेपालक राजगुरु हेमराजपुस्तकालयमे तीन अंकक कृष्णदास रचित
रामायण नाटक अछि जे जगत्प्रकाशक नामे लिखल गेल अछि । सम्भवतः ई
कृष्णदास उएह छथि जे मलयगन्धिनी लिखलैन्हि ।^२

वस्तुतः जगत्प्रकाशमल्लक राज्यकाल मैथिली नाटकक विकासक
दृष्टिकोणसँ बहुत महत्वपूर्ण रहल । एहि समयक नाटक गद्य आ पद्य दुनूमे
लिखल गेल अछि । गद्य छोट-छोट मुदा ललित एवं परिष्कृत शैलीमे अछि^३ ।
एहि नाटकसभक गीत साधारण कोटिक अछि परन्तु कोनो-कोनो गम्भिर आओर
मार्मिक सेहो अछि^४ । हिनक उत्तराधिकारीलोकनिक समयमे आवि एहिमेसँ
कतेको नाटकक पुनरावृत्ति ओ पुनरीक्षण कएल गेल । मलयगन्धिनीक
राजदर्शनामे रहल पाटनक समकालीन नरेश श्रीनिवासमल्लक प्रशंसा दुनू
नरेशक मैत्री सम्बन्धक संकेत करैत अछि ।

१. पाण्डुलिपि, राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । पुस्तक
सूची संख्या - प्र. १४७३ (माइक्रोफिल्म नं. - B १५/३३)
२. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. - १५३
३. उएह ।
४. उएह ।

जितामित्र मल्लक समयमे लिखत गेल मैथिली नाटक

जगत्प्रकाश मल्लक पश्चात् हुनक ज्येष्ठ बालक जितामित्र मल्ल राज्यक उत्तराधिकारी भेलाह । ई ने. सं. ७८३ अर्थात् १६६३ ई सँ १६९५ ई धरि शासन कयलैन्हि^१, इहो ओहने उत्साही लेखक छलाह । हिनका साहित्यमे अभिरूचि छलैन्हि । हिनक नामक पूर्वं सुमति जोड़ल गेलाक हिसावे^२ ई बहुत बुद्धिमान छलाह से अनुमान लगैत अछि^३ । हिनका समयमे अनेक नाटकक रचना भेल । हिनक नाटक सभक एकटा वैलक्षण्य अछि अनेक शिष्ट भाषाक प्रति उदार भाव । हिनक प्रायः सभ नाटक अर्द्धनारीश्वरक स्तुतिसँ आरम्भ होइत अछि । हिनक नाटकमे पूर्वज लोकनिक नाटकक अपेक्षा भाषा सौष्टव अधिक अछि । संगहि अपन पूर्वज लोकनिक प्रसिद्ध आख्यानसभके^४ सेहो बड़ सहज एवं प्रवाहमय रूपमे प्रस्तुत करवामे ई सिद्धहस्त छलाह^५ ।

मदालसाहरण नाटक^६ (१६८७ ई):-

ई हिनका समयक प्रथम नाटक थिक । मुदितकुवलाश्व नाटकेक कथावस्तु एकरो मुख्य विषय थिक मुदा मुदितकुवलाश्व सनक कथा विस्तार, संवाद आदि एहि नाटकमे नहि अछि । एहि नाटकमे नृत्यक प्रधानता अछि । नाटकीय तत्वक अभाव अछि । मुदितकुवलाश्वमे गद्यमे कथोपकथन नहियो अछि तँ समस्त नाटकीय चमत्कार गीतमे अछि मुदा एहि नाटकमे चमत्कार नामोलेल नहि अछि । एहि नाटकक प्रत्येक गीतक पश्चात् नृत्यक बोल देल गेल अछि । नाटक आदिसँ अन्त धरि नृत्य ओ गीत सँ भरल अछि । एहि नाटकमे गद्य कथोपकथनक अभाव अछि । संस्कृत श्लोकक प्रयोग कतहु नहि भेल अछि ।

एहि नाटकक आरम्भमे रहल “ॐ ३ नाटेश्वराय नमः” पश्चात सेहो नृत्यक बोल देल गेल अछि । तकर बाद क्रमशः मैथिली नान्दी गीत, सूत्र-प्रवेश मैथिली गीत आ राजदर्शना, सभावर्णना, देशवर्णना एवं प्रवेश गीतसभ

1. Dr. D. R. Regmi, Ancient and Medieval Nepal, Kathmandu, 1952, page - 255.
2. इतिहास (कक्षा ९-१०) भाग-१, जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र लि. भक्तपुर, एघारौं संस्करण, २०५० वि. सं., पृ. - ३९
3. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. - १५३
4. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि ।
एकर पुस्तक सूची संख्या - प्र. ३५४

मथिलीमे अछि । सभावर्णना एहि नाटकमे नवीन वस्तु थिक । द्रष्टव्य थिक सभावर्णनाक एक अंश -

सभा वर्णना ॥ कौशिक ॥
 राजा सुकवि सभा ललित प्रभा ।
 धीर निकर मनहारनि अति ॥ मेपु ॥

एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतक अंश जाहिमे दर्शककेँ कवि, पण्डित ओ रसिक कहल गेल अछि -

सुमति जितामित्र नृपति निदेश ।
 मदारसा हरण नट कर सुवेश ॥
 कवि रसिक जन रिझत आज ।
 विज्ञ विदित लोक समाज ।
 नाचव हम हर्ष युता ॥ मेपु ५ ॥

नाटकक अंतमे “८०७ मदालसाहरण ६ यका”^१ उल्लेख भेटैत अछि जाहि सँ एहि नाटकक रचनाक समय ने. स. ८०७ अर्थात् १६८७ ई. ज्ञात होइत अछि ।

एहि नाटकक साहित्यिक महत्व नहि केवल ऐतिहासिक महत्व अछि^२ ।

बरुथिनीहरण नाटक^३ :-

एहि नाटकक रचनाकाल सत्रहम शताब्दीक अन्तिम भाग मानल जाइत अछि । नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । एहि नाटकक आरम्भमे श्री गणेश्वराय नमः, श्री नाटेश्वराय नमः उल्लेख अछि । एकर बाद मैथिलीमे नान्दी गीत अछि । नान्दी गीत पश्चात् नान्दी श्लोक देल गेल अछि । तत्पश्चात् सूत्र-प्रवेश गीत, राजवर्णना, देशवर्णना आ तखन राजा इन्दीवर जे रंगमंच पर प्रवेश करैत छथि से प्रवेश गीत अछि ।

इन्दीवर आ हुनक पुत्री मनोरमा शंकरसँ वर प्राप्त कए अबैत छथि । मार्गमे ओ लोकनि मुनिक उपहास करैत छथि। मुनि क्रोधित भए जाइत छनि आ आप दैत छथिन्ह जे राजा राक्षस भऽ जएताह आ मनोरमाक राक्षस

-
१. पाण्डुलिपिक पत्र संख्या - ३०
 २. इन्दिरा झा, आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित्र सृष्टि, पृ. - ८४
 ३. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । पुस्तक सूचीसंख्या - प्र. ६४०

द्वारा अपहरण कएल जाएत । राजा द्वारा अनुनय विनय कयल गेला पर मुनि निराकरणक उपाय बतबैत छथिन्ह ।

एहि नाटकमे दोसर कथा संग-संगे चलैत अछि । वरूथिनी नामक अप्सरा श्रुतिविद नामक अग्निहोत्री ब्राम्हण पर मोहीत भऽ विवाह करवाक इच्छा करैत छथि । कलिवर नामक गन्धर्व श्रुतिविदक रूपमे छलसँ वरूथिनीसँ विवाह करैत अछि । वरूथिनीकेँ सुरुचि नामक पुत्र होइत छैन्ह जे सभ विद्यामे निपुण होइत छथि । सुरुचिक शस्त्र प्रहार सँ राक्षस बनल इन्दीवराक्षक उद्धार होइत अछि ओ पुनः अपन शरीर प्राप्त करैत छथि । इन्दीवराक्ष अपन पुत्री मनोरमाक विवाह सुरुचि सँ करबैत छथि ।

एहि नाटकक नामकरण सार्थक नहि बुझाईत अछि । एकर गीत सभमे द्विज शिवहरिक उल्लेख अछि ।

चिन्तय अह निश अतमक ज्ञान,

साजु जे मुगुति फल महेशक ध्यान ।

परमानन्द मय अमृतक पान,

गुरु परसने होअ शिवहरि भान ॥

एहि नाटकक सम्वादमे बंगला भाषाक सम्मिश्रण अछि । द्रष्टव्य थिक एक अंश —

राजा — हे मनोरमा, महादेव आराधना करिते जायिवो चलो ।

मनोरमा — पिता, विजय करो ॥

मनोरमा — हे पिता, शीघ्र विजय करो ॥

राजा — पुत्रि, चलो ॥

राजा — हे पुत्रि, मन्दर पर्वत आयिलाँव एषाने महादेवर आराधना करिवो ॥

मनोरमा — पिता, अवश्य ॥

एहि नाटकमे अनेको शृङ्गारपूर्ण गीत समाविष्ट अछि आ नाटकक अंतमे सभ पात्र मिलि ईश्वर भजन प्रस्तुत करैत अछि । एहि नाटकमे रचना समय उल्लेख नहि अछि मुदा जितामित्रक भणितसँ रचित होयबाक हिसाबेँ एकर अनुमानटा कएल गेल अछि ।

कालीयमथनोपाख्यान¹ :-

एहि नाटकक रचनाकाल १६८४ ई. अछि । (इति नेपाल मही मण्डल महीपति श्री श्री सुमतिजयजितामित्र विरचते कालीयमथनोपाख्यान नाटके

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि ।

पुस्तक सूची संख्यां - प्र. ४६०

तृतीयांक ॥ संवत् ८०४ माघ सुदि १५ श्व कुन्हु ॥) एहि नाटकमे तीन अंक अछि । प्रसिद्ध पौराणिक कथा पर ई नाटक लिखल गेल अछि । एहि नाटकमे गद्य-पद्यक मिश्रण अछि । एकर भाषा ब्रजभाषाप्रान्त अछि । द्रष्टव्य थिक गद्य कथोपकथनक एक अंश -

नटी - हे नाथ, मेरो परनाम, कओन काम को आज्ञा भयी है ।

सूत्रधार - नेपालको अधिपति महाराजाधिराज श्री श्री सुमतिजयजितामित्र मल्ल देव को परमेश्वरी प्रति कामना सजो कृष्ण-चरित नाच नाचवे को आज्ञा भयी ह्य ॥

नटी - हे नाथ, कैसो उह राजा ॥

सूत्रधार - सयानी, सुनु ॥

नटी - नाथ, आज्ञा करिए ॥

एहि नाटकक प्रारम्भमे संस्कृतक नान्दी श्लोक नहि अछि । सोझहि मैथिली गीत अछि जाहिमे महादेवक स्तुति कएल गेल अछि ।

भावहु शंकर गौरि अर्धंगा ॥ ध्रु० ॥

भय हर हर धर जपमाला । कानन कुण्डलि गल मुण्डमाला ॥

चन्द्र तिलक शिर गंग भुजंगा । पिगल जट नट हन अनंगा ॥

पंचवदन नटवर दिगवसना । मंगल घट भज गिरिवर शयना ॥

कहल कविवर जितामित्र देवा । छोडु सकल धंध करु शिव सेवा ॥

नाटकक अंतमे रहल भगवती भजनक एक अंश -

भज मन जग जननी भव भाविनी ॥

यो कछु कोयिकर जन मनसा, भरण पुरण करतारिणी ॥

शिर पर चन्द्र मुकुट विराजे, मुख वेसरि सोहे ॥

सोहे तिलक पितम्बर कुण्डल, देखि महेश्वर मोहे ॥

एकर राजवर्णनामे राजा सुमतिजयजितामित्र मल्लके पंडित ओ कवितामे निपुण कहल गेल अछि -

सब रस जाने चतुर सयानी, मदन सरीषो रूप ॥

पंडित कविता निपुण विहारी, सुकृति विनोदी भूप ॥

महाभारत नाटक^१ :-

एहि नाटकक रचना १६७६ ई मे भेल । नाटकक अंतमे एकर उल्लेख अछि --

१. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित, सूची संख्या - प्र० १४७८

इति महाभारत नाटकं समाप्तं ॥ संवत् ७६६ पौष शुदि १२
शुभं ॥ लिखति देवज्ञ गंगाधर वर्मन्ने ॥

एहि अंतिम वाक्य सँ ई ज्ञात होइत अछि जे पाण्डुलिपिक लिपिकार
दैवज्ञ गंगाधर छलाह ।

एहि नाटकक कथानक महाभारतपर आधारित अछि । कौरव पाण्डवक
जन्म सँ लए युद्धिष्ठिरक अभिषेक धरिक संक्षिप्त कथा एहि नाटकमे चित्रित
भेल अछि ।

नाटकक प्रारम्भमे “ॐ नमः श्री नाटेश्वराय” पश्चात् मैथिलीक नान्दी
गीत सँ महादेवक वन्दना कयल गेल अछि । एकर भणितामे जगत चन्द्रक नाम
अछि । द्रष्टव्य थिक एक अंश --

गिरि सुता संयुत गणेश सहित सुत, मन दय वर देह तोहे ।
प्रथम नान्दि गाय अपने नाचव शिव, भमिते भमय वड सोहे ॥
जगत चन्द्र कृत गित परिशोभन, हरपथु देखि देखि रोगे ।
जितामित उग्रमल्ल चिरंजीव होअथ, सहस्र वरिष करू भोगे ॥

संस्कृतक नान्दी श्लोक पश्चात् सूत्रधार ओ नटीक कथोपकथन संस्कृत-
प्राकृतमे भेल अछि । एहि नाटकक राजवर्णनामे राजाक यशोगान उत्तम रूपसँ
भेल अछि --

सबहु रस परसुन कहिनि, दुहु मति दय आवे ।
रघुकुल पर कमल उतपति राय जितामित भावे ॥
रविक वंशहि रविहि तुलना, नयहु विनय विधाने ।
सुन्दर मनमथ मलिन कयलहु रुचित जगत बखाने ॥
गंभिर गुण एहि समुद्र सबो बड, दिधिहि ताम रस भूले ।
जगत जुवति हृदय मोहन, काम अभिगत भूले ॥
जगत चन्दहि वरणि नरपति भगत नगरक राय ।
चिरहि चंडिहि राज भुजाबह, दीर्घायु होअ काय ॥

एहि नाटकक कथोपकथनमे प्रयुक्त गद्यक एक अंश --

धृत -- ई आसन विजय करू ॥

व्यास -- हे महाराज अवश्य ॥

व्यास -- हे धृतराष्ट्र हे गान्धारी राज्य सुख दुयि जनाब करू, हमे अपन

1. पाण्डुलिपि, पत्र संख्या -- १

2. उएह, पत्र संख्या -- २

आश्रय जायि छनो आशा दिनो ॥

उभौ - हे मुनिराज राज्य सुख अछ अपत्य सुख नहि ।

व्यास - हमर आशीर्वाद गान्धारीक एक शत पुत्र एक कन्या होयत ॥

रामायण नाटक^१:-

एहि नाटकक रचना १६६२ ई. मे भेल । एकर उल्लेख नाटकक अंतमे अछि-

“सम्बत् ८१२ बैशाख वदि ४ ध्वकुन्हु श्री भूपतिन्द्र मल्लन दय का दिन जुलो ।”

वाल्मीकि रामायणपर आधारित ई सम्पूर्ण नाटक पद्यमय अछि । ई नाटक १५ अंकमे विभक्त अछि । एहि नाटकक आरम्भ सेहो “ॐ नमः श्री नाटेश्वराम्यां नमः” सँ कयल गेल अछि । तत्पश्चात् रहल नान्दी गीत-

वहय मौरि तटे विमर गंग शङ्कर देवि अरधंग
तिरक रजनि पति नटवर सार कण्ठ विराजय मोतीक हार
त्रिनयन नृत्यरत करय बिहार, पुररिपु निर्जित मार
भुजगपति कुण्डर करुणा निधान ॥

हिमसित केरवे रजता अभिराम, पंचमुख आनन्द धाम
सुमति जितामित्र नृपवर भान वर देयु बृषभ जान ॥

एहि नाटकमे श्रीधर कवि कृत राजवर्णना ओ देश वर्णना अछि । एहि नाटकक राजवर्णनामे कर्णाटवंशीय राजालोकनिक पुर्वपुरुषक रूपमे उल्लेख तथा नेपालमे हरिसिंहदेवक राज्य करवाक कथन अछि-

“..... आदित्य मल्ल जयराज, जयानन्द, रुद्रमल्ल, नृपईश नान्यदेव, नृप गांगदेव, भूप नरसिंह महीश, रामसिंह, भव सिंह, सिंहदेव, नेपार कएल राज्ये हरिसिंह देव ॥”

एहि नाटकमे नृत्यक बोल सेहो यत्नतः भेटैत अछि ।

जमिनि- भारत नाटकम्^२:-

एहि नाटकक दू रूप उपलब्ध अछि । एकटा मैथिली भाषा युक्त आ दोसर संस्कृत । संस्कृत रूपक नाम म. म. हरप्रसाद शास्त्रीक अनुसार अश्वमेघनाटकम् देल गेल अछि ।

१. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित, पुस्तक सूची संख्या प्र. ३६७
२. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । एकर पुस्तक सूची संख्या- ११२१

ई नाटक शुद्ध संस्कृतमय अछि ।

गोपीचन्द्र नाटक^१:-

एहि नाटकमे पद्यसँ अधिक गद्य अछि । गद्यक भाषा बङ्गला भाषा-
क्रान्त अछि-

कोतवाल कहैत अछि - बङ्ग देशेर अधिपति महाराजा गोपीचन्द्र तार कोटवार
कलिङ्गा नाम अमी आछे ।

भागिखेर । भाल कहिलेन । अहे खेतु महापात्र
कलिङ्गा कोटवार आमार एक वचन अवधान करो ।

खेतु - सर्वदा ।

भा - समस्त लोक वधिया दाडिया लुटिया आनिया एमन-एमन कर्म करिया
सुखभोग करिया थाकिले आमार समान भागी खोर नाम आर ना
आछे ।

खे - सत्य कहिलेन । अहे कलिङ्ग कोटवार तुमार हमार राजा गोपीचन्द्र आछे
तार दर्शन करिते जायबो चलो ।

जितामित्र मल्लक समयमे उपर्युक्त नाटकसभक अतिरिक्त उषाहरण,
नवदुर्गानाटकम्, सती-वियोग वा कुमार-प्रादुर्भाव, मङ्गलमहोत्सवनाटक,
अश्वमेध नाटक^२ आ भागानाटक^३ आदि सेहो लिखल गेल सूचना भेटैत अछि ।

भूपतीन्द्र मल्लक भणितसँ लिखित नाटक

जितामित्र मल्ल पश्चात् हुनक पुत्र भूपतीन्द्र मल्ल (१६६६-१७२२ई)^४
गद्दीक उत्तराधिकारी भेलाह । भूपतीन्द्रमल्ल सफल राजनीतिज्ञ छलाह आ
भादगाउँक राजासभमे हिनक विशेष स्थान अछि । हिनकर बनावोल ५५
खिडकीयुक्त (५५ झ्याले) दरबार आ पाँच तले (न्यातपोल) मन्दिर^५ एखनहु
अद्वितीय अछि । एकर अतिरिक्त अनेको मन्दिरक निर्माण आ जीर्णोधार
करोलनि^६ । काव्य प्रति हिनका बड रुचि छलैन्हि । हिनकाद्वारा रचित

1. सूर्य विश्रम श्रवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २३३-
२३४

2. जयक्रान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- १५३

3. डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीष', मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- २१७

4. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अग्रोर विकास, पृ.- २०३

5. इतिहास (६-१० कक्षा), जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र, भक्तपुर, (भाग-१)
पृ.- ४२

6. उएह ।

मैथिली भाषाक एक सय गीतक एकटा संग्रह राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । द्रष्टव्य थिक ओहि संग्रहक एकटा गीत-

हे देवि शरण राख भवानी ।
मन वच करम करओ मान कछु
से सवए तुअ आपद जानि ।
हमे अति दीन खीन तुअ सेवा
राख हरि यजन ठानि ।
अभिनय मोर अपराध संभव
मन जनु राखह जानि ।
आओर इतर जन जग जत से सवए
गुण रसमक से वानि ।
तुअ पद कमल भमर मोर मानस
जनम जनम रहो मानि ।
भपतींद्र नृप एहो रस गावए
जय गिरिजापति रानि ।

भूपतीन्द्र मल्ल नाटकक सेहो ओहने प्रेमी छलाह । हिनक रचित अनेको नाटक उपलब्ध होइत अछि । हिनका नाटकसभमे गीत बहुत अधिक अछि आ एहिमे जे विविधता अछि से पूर्वक नाटकसभमे दुर्लभ ।

भाषा नाटक:-

तीन अङ्कक एहि नाटकक समस्त रचना पद्यमे कयल गेल अछि । एहि नाटकक रचना १९६५ ई मे भेल-

“संवत् ८१५ कार्तिक वदि १३ ॥

श्री श्री भूपतीन्द्र मल्ल देवेन श्व मे साफल दयका जुलो ॥”

एकर कथानक अत्यन्त छोट अछि । रूग्ण पुत्रक उत्पत्तिसँ राजा वज्रबाहु ओ रानी पद्मावती बहुत चिन्तित रहैत छलैथि । एक दिन हुनक पुत्र हेमरथक मृत्यु भऽ जाइत छैन्हि । पुत्रक मृत्युसँ राजा-रानी अत्यन्त विह्वल भऽ जाइत छथि तत् पश्चात् एकटा योगीक आगमन होइत अछि जे अपन मन्त्र बलसँ हेमरथके पुनः जीवन प्रदान करैत छथि । योगी वनक हेतु प्रस्थान करैत

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । पुस्तक सूची संख्या- प्र. १४५५

2. उपह, पत्र संख्या- १७

छथि । राजा ओ हुनक पुत्र हेमरथ बीच युद्ध होइत अछि । अन्तमे मिलन होइत अछि । राजा अपन पुत्रकेँ राज्यभार दैत छथि ।

एहि नाटकक आरम्भमे नान्दी श्लोक अछि तत् पश्चात मैथिली नान्दी गीत, जाहि मे शङ्कर बन्दना कएल गेल अछि । नटी ओ सूत्रधारक वातचीत अछि मुदा नाटकक प्रस्तावना नहि अछि । सूत्रधार अवितहि राजवर्णना करैत अछि आ राजवर्णना समाप्त होइतहि नटी देशवर्णना करैत अछि । तत् पश्चात सूत्र-निस्सारक गीत होइत अछि आ वज्रवाहु रङ्गमञ्चपर प्रवेश करैत प्रवेशगीत गबैत छथि । नाटकक अन्तमे रहल आरती-गीत, जगत्प्रकाश मल्लक भणिता युक्त नाटकसँ लेल गेल अछि ।

एहि नाटकक कथावस्तुक विकास अवच्छेद जकाँ अछि । किछु गीत नाटकीय रीतसँ प्रस्तुत भेल अछि । द्रष्टव्य थिक एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतक एक अंश जे भक्ति भावनासँ ओतप्रोत अछि -

जय जय दायिनि देवि भवानी,
करहु कृपा मोहि निय सुत जानि ॥

मन कय दीप जोति कय ज्ञान,
आरती करण सहस्र दले मान ॥

गौरी-विवाह नाटक:-¹

सात अङ्कक योजना रहल एही नाटकक रचना १७०६ ई. मे भेल । एकर उल्लेख नाटकक अन्तमे भेटैत अछि -

संवत् ८२६ फाल्गुण वदि १३ ऋतया ॥ संवत् ८२७ फाल्गुण सुदि ६ प्याखनयानाश्वरलित अदिन ॥^२ पौराणिक कथापर आधारित एहि नाटकक विषयवस्तु सतीक देहत्याग, महादेवक वियोग, गौरीक जन्म, महादेवक लेल गौरीक तपस्या, हर गौरीक विवाह, गौरीक पुत्रद्वारा ताड़कासुरक वध आदि अछि ।

एहि नाटकक आदिमे नान्दी श्लोक तत्पश्चात मैथिलीक नान्दी गीतमे शङ्कर बन्दना कएल गेल अछि । एकरवाद सूत्रधारद्वारा नाटकक प्रस्तावना राजवर्णना आ नटीद्वारा देश वर्णना कएल गेल अछि । तखन महादेव, नन्दि भृङ्गि, सती, कुन्दलता, चन्ड, मुण्डक प्रवेश होइत अछि जकर संकेत प्रवेश गीतमे

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । पुस्तक सूची संख्या - प्र० ३४७ (माइक्रो फिल्म नं. B २७५/५)

2. उएह, पत्र संख्या - १००

देल गेल अछि । रङ्गमञ्चपर उपस्थित भेलाक बाद पात्रलोकनि संस्कृतमे अपन परिचय प्रस्तुत करैत छथि आ नाटकक कथावस्तु आगू बढैत अछि ।

एहि नाटकमे ठाम ठाम श्रृङ्गार रसक गीत अछि । द्रष्टव्य थिक महादेवद्वारा कएल गेल सतीक रूप वर्णन -

चांद कुमुद जनि दरशन भेला,
शशिमुखी करह सिनेहा ।
अमिय वरिस हसि आनन शोभा,
कनक रूचिर तुअ देहा ॥¹

वियोग गीतक एक प्रसङ्ग -

नेओत न पावथि मोर पहु सजनी,
कि करव तथिहि उपाय ॥
नैहर कोने गते जाएव सजनी,
प्रभु लग कहव जाय ॥²

एहि नाटकमे प्रयुक्त गद्य कथोपकथनक एक अंश -

रति :- हे वसन्त, विनु स्वामी हमे जीओव नहि अवश्य अग्नि प्रवेश कय प्राण त्याग करव ॥

वसन्त :- हे रति, परमेश्वर का एहने कर्त्तव्य छल ते एहन भेल धैर्य करू ॥

रति :- हे वसन्त, एहाक सखा विनु हमे जीओव नहि एहाक चिताक रचना करू अवश्य अग्नि प्रवेश कय प्राण त्याग करव ॥

पार्वती:- हे रति, हमर निमित्तो त्वहर स्वामीक मृत्यु भेल अग्नि प्रवेश जनु करिअ इहे त्वहर स्वामी हमे मिलाय देव चिन्ता जनु करिअ ॥

रति :- पार्वती हमर ई जीवन एहाक अधीन भेल हमे की कहव ॥

पार्वती:- हे जया विजयादि लोके महादेव कन्दर्पके भस्म कय स्थानान्तर गेलाह अपन मन्दिर जाएव चलू ।

सर्व :- देवी जे आज्ञा ।

एहि नाटकमे कथा संयोजन पर विशेष ध्यान देल गेल अछि । गौरी शङ्करक विवाह मिथिलाक रीति नीतिक अनुकूल चित्रित अछि ।

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालय काठमाण्डूमे संरक्षित । सूची संख्या - प्र० ३४७ (साइको फिल्म नं. - B २७५/५)

2. उएह, पत्र संख्या - १८

माधवानल नाटक -¹

तीन अङ्कक एहि नाटकक रचना १७०४ ई. मे भेल । एकर उल्लेख नाटकक अन्तमे एहि प्रकार अछि -

“इति श्री श्री भूपतीन्द्र मल्ल विरचिते माधवानल नाटके तृतीयोऽङ्कः सम्पूर्णः संवत् ८२४ पौष वदि २ शुभ ॥”

एहि नाटकमे गद्यक प्रचुर प्रयोग भेल अछि आ गीत सभमे द्विज कृष्णदेवक नामोल्लेख अछि । “श्री श्री नाटेश्वराय नमः” पश्चात् संस्कृतमे “आदौ नान्दी श्लोकः” आ तकर बाद मैथिलीक नान्दी गीत अछि जाहिमे शङ्करक वन्दना अछि । सूत्रधारद्वारा प्रस्तुत कएल गेल राजवर्णनामे सेहो द्विजवर कृष्णदेवक नामोल्लेख अछि । एकर कथावस्तु एहि प्रकार अछि --

माधवानल नामक एक कलाविद् गायक गोविन्दचन्द्र राजाक पुष्पावती नगरमे रहैत छलाह । एक समयमे ओ राजाद्वारा देश निकाला कऽ देल गेलाह । माधवानल ओहि ठामसँ कामावती नगरीक राजा कामसेनक दरवारमे गेलाह । ओहि ठाम ओ कामसेनक दरवारक नर्तकी कामकन्दलासँ प्रेम करए लगलाह । एक बेर ओहू ठामसँ निकालल गेलाह आ उज्जैननी नगर पहुँचलाह । ओहि ठामक राजा माधवानल आ कामकन्दलाक प्रेमक परीक्षा लेलनि आ कामसेनकेँ युद्धमे परास्त कऽ दुनूक मिलन करौलनि ।

एहि नाटकमे प्रयुक्त एकटा गीत एहन अछि जे कामकन्दला रङ्गमञ्चपर प्रवेश करैत गवैत अछि --

रति सम सुन्दरि वदन सरोज ।
कनक करस तुल हमर उरोज ॥
नयन, युगल जनि खंजन मोर ।
कामकन्दला हमे उरवसि जोर ॥
जानिय सहचरि अभिनय गान ।
भूपतीन्द्र नरपति परवेश भान ॥

द्विजवर कृष्णदेवक नामोल्लेख रहल राजवर्णनाक एक अंश -

रघुपति सन्निभ सुन्दर वेश ।
हिमकल तुल जग धरणि निशेष ॥

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । पुस्तक सूची संख्या - प्र० १४५५ ।

दिनकर सुत सुम कर वसु दाने ।

द्विजवर कृष्णदेव कयर बखाने ॥

एहि नाटकमे रहल गद्यक एक अंश -

माधवा. -- हे महाराज, की निमिते हमरा के बजावय पठाओल से आज्ञा करू ।

विक्रमा. -- हे माधवानल, एहाब वड मनोदुःखी सन देखै छिअ की भेल कि कारण एहाक दुःख हमे दूर करब ॥

माधवा. -- हे महाराज, कामसेनक नगर, कामकन्दला नाम, अत्यन्त सुन्दरि, एक स्त्री अछि तकर विरहानले दग्ध भय शरीरक एहन अवस्था भेल, ते कामकन्दला सबे एहाब मिलाय दिओ ॥

विक्रमा. -- हे माधवानल, ब्राम्हण भय, वेश्या सजो की स्नेह करै छिअ आन दिव्य स्त्री एहाके देव, विरहिज दुःख तेजु ॥

माधवा. -- हे महाराज, आन स्त्री तजो एहातह दय होयत तथापि कामकन्दला सनि स्त्री दय होयत नहि, ते कामकन्दला आनि दियो ।

विक्रमा. -- हे माधवानल एहाब हठ कयर, हमे की करब कामकन्दला सबे मिलाय देव ।

माधवा. -- महाराज जे आज्ञा ।

विक्रमा. -- हे लोके एहाब लोके एतहि रहू, हमे कामावती नगरी जाएव ।

सर्वे -- महाराज जे आज्ञा ।¹

नाटकक अंतमे राजा विक्रमादित्य आशीर्वाद श्लोक संस्कृतमे पढ़ैत छथि । एहि नाटकक सम्बन्धमे अनुमान कएल जाइत अछि जे ई नाटक द्विज कृष्ण देवक लिखल अछि² ।

रुविमणी-हरण नाटक³ :-

तीन अंकक एहि नाटकक रचनाकाल १८ म् शताब्दीक आदि भाग मानल जाइत अछि ।

गद्य आ पद्य दुनूमे कथोपकथन रहल एहि नाटकक रचना

1. "माधवानल" नाटकक पाण्डुलिपि, सूची - १४५५, पत्र संख्या - ४६-४७
2. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास, पृ. - २१३
3. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या प्र. - ३५२

श्री कृष्णद्वारा रुक्मिणीक हरण होयवाक प्रसिद्ध कथापर आधारित अछि । एहि नाटकक गीतमे वंशीधर कविक नामालेख अछि --

निज कुल देवि भजन रत सुन्दर
वदन विजित विधु मान,
नील कलानिधि रिपु कुल खण्डक
वंशीधर द्विज मान ।¹

एहि नाटकक आदिमे “आदी नान्दी श्लोकः” पश्चात् मैथिलीक नान्दी गीत अछि जाहिमे शङ्कर वन्दना कएल गेल अछि । एकर बाद सूत्रधार ओ नटी संस्कृत-प्राकृतमे नाटकक प्रस्तावना करैत अछि । प्रस्तावना पश्चात् राजा भीष्मक, रानी कनकप्रभा, रुक्मी, रुक्मरथ आदि रङ्गमञ्च पर प्रवेश करैत छथि आ नाटकक मुख्य कथानक प्रारम्भ होइत अछि ।

एहि नाटकमे युद्धक वर्जित दृश्य सेहो देखाओल गेल अछि । द्रष्टव्य थिक गद्य कथोपकथनक एक अंश जखन रुक्मी श्रीकृष्णसँ युद्ध करए पहुँचैत छथि --

रुक्मी -- हे कृष्ण त्वहेँ रुक्मिणी हरि कहु निशङ्क भय की रहल छह जवो
जीवयक इछा तवो रुक्मिणी त्यजि जाह ॥

कृष्ण -- रे रुक्मी सिंहक आगु जंबुक भय की गुमान करै छह ।

रुक्मी -- रे अधम गोप एहन की गुमान करै छह हमर वचन सुनह ।

कृष्ण -- पापिष्ठ कहह ॥

एहि नाटकमे ठाम-ठाम श्रृङ्गारिक गीत सेहो देल गेल अछि --

सुवदनि सुन सुवचन रे,
तोहे मोरा प्राण पियारि हे ॥

चाँद मण्डल पर युगल चकोर
देखि भेल चापल मन रे ।

मुकुल कमल मधु भमर न पाव,
से बुझि करु रिति भाव रे ॥

कहथि महीपति भूपतीन्द्र राज,
विनय विजीत सुरराज ॥³

1. पाण्डुलिपिक पत्र संख्या - २

2. उएह, पत्र संख्या - २३-२४

एहि नाटकके रचना भूपतीन्द्र मल्लक नामसँ भेल अछि मुदा किछु लोक एकरा वंशीधरक कृति मानैत छथि¹ ।

उषाहरण नाटक²:-

भूपतीन्द्र मल्लक भणितसँ १७१३ ई. मे ई नाटक लिखल गेल अछि । नाटकक अंतमे एकर रचनाक समयक उल्लेख अछि ।

“संवत् ८३३ कार्तिक वदि १ शुभम् ।”

सात अङ्कक एहि नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । गद्य-पद्यक सुन्दर प्रयोग भेल अछि । ठाम-ठाम नेवारी भाषाक मिश्रण अछि । गीतमे कवि गणेशक नामोल्लेख अछि ।

एहू नाटकक आरम्भमे नान्दी श्लोक पश्चात् मैथिलीमे नान्दी गीत अछि । सूत्रधार पुष्पाञ्जली श्लोक पढ़लाक बाद नटीकेँ वज्रवैत अछि आ नाटकक प्रस्तावना करैत अछि । एहि नाटकक प्रस्तावना मैथिलीमे अछि । राजवर्णना ओ देशवर्णना पश्चात् सूत्रधार ओ नटीक निस्सार गीत होइत अछि तकर बाद नाटकक मुख्य कथावस्तु आरम्भ होइत अछि । सर्वप्रथम महादेव संस्कृत श्लोकमे अपन परिचय प्रस्तुत करैत छथि तखन रङ्गस्थ पात्रकेँ संवोधन करैत छथि । नाटकक अन्तमे श्रीकृष्ण आशीर्वाद श्लोक पढ़ैत छथि ।

एहि नाटकक गीतपर “गीत गोविन्द”क स्पष्ट छाप झलकैत अछि³ । द्रष्टव्य थिक एहि नाटकक मैथिली नान्दी गीतक एक अंश—

जय जय पुरहर देव निरंजन मामवगुण गुणहीनं ।

हर शशि शेखर दीन दयामय शङ्कर परम सुदीनं ॥

दिति सुत नाशक जन सुखदायक निर्जित विबुध मनोजं ।

सुरवर नायक जन सुख पालक वन्दे चरण सरोजं ॥

एहि नाटकमे प्रयुक्त गद्यक स्वरूप केहन अछि से देखू—

“सूत्र— हे प्रिये श्री श्री जय भूपतीन्द्र मल्ल महाराजक अज्ञाजे श्री श्री राजकुमारक उपनयन महोत्सव होयत, ततय अनिरुद्ध रूप धय त्वहे उखाक रूप धय विदग्ध जन रंजना करय जाएब चलू ।”

किछु विद्वान एहि नाटककेँ कवि गणेशक रचना मानैत छथि यद्यपि “वृहत् सूचीपत्रम्” मे ग्रन्थकारक रूपमे भूपतीन्द्र मल्लक नाम उल्लेख अछि ।

1. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास, प्रथम संस्करण १८७८ ई., पृ.— २२१
2. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या— प्र. ११३२
3. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास, प्र. सं., पृ.— २२२

कंसवध नाटक^१:-

एहि नाटकक रचनाकाल १८ म् शताब्दीक आदि भाग मानल जाइत अछि । एकर पाण्डुलिपि जीर्ण अवस्थामे अछि । गीतक प्रचुर प्रयोग भेल एहि नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि ।

एहू नाटकमे आने नाटक जकाँ नान्दी श्लोक पश्चात् नान्दी गीत अछि । तकर बाद सूत्र-प्रवेश गीत अछि । पुष्पाञ्जली श्लोक संस्कृतमे अछि । तकर बाद सूत्रधार राजवर्णना आ नटी देशवर्णना करैत अछि । पश्चात् नाटकक मुख्य कथानक प्रारम्भ होइत अछि ।

एहि नाटकक राजवर्णना ओ देशवर्णनामे सुकवि गणेशक नामोल्लेख अछि-

मदन समान तनु रुचि प्रबल विजित रिपु वीर ।

रसिक भूपतीन्द्र नरपति वीर चंतुरे सुधीर ॥

निखिल दीन दयाल विधु मुखे रुचिर चरित सजान ।

कुण्ड दिशद जश पुरल दहो दिश सुकवि गणेश वखान ॥

एहि नाटकमे प्रयोग भेल गद्य कथोपकथन मैथिलीमे अछि आ बीच-बीचमे दोहामे हिन्दीक सेहो प्रयोग भेल अछि-

“श्रीदाम- हे कृष्ण हमे प्रश्न करव ।

कृष्ण- श्रीदाम कहू ।

श्रीदाम- (दोहा) धरणीपर सारथि रहे एका चक्र रथ जात ।

पवन वेग ते चरत हय पंडित वृक्षय वात ॥

श्रीदाम- हे श्रीकृष्ण ई कोन वस्तु थी ।

कृष्ण- ये श्री दाम ई कुम्भकारक चक्र थी ।

कृष्ण- हे श्रीदाम हमे प्रश्न करव ।

श्रीदाम- हे कृष्ण कहू ।”

गोपीचन्द्रोपाख्यान नाटक^२:-

एहि नाटकक रचना १८ म् शताब्दीक आदि भागमे भेल । एहि नाटकक कथावस्तु पाँच अङ्कमे वर्णित अछि । राजा गोपीचन्द्रक कथा एहि नाटकक कथावस्तु थिक । एहि नाटकमे मैथिलीक अतिरिक्त बङ्गाली, नेवारी आ संस्कृत सेहो मिश्रण अछि । कतहु-कतहु हिन्दीक साधारण प्रभाव सेहो बुझाईत अछि ।

१. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या- प्र. १३६२ ।

२. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या- प्र. ३४५ ।

“ॐ नृत्यनाथाय” पश्चात् नान्दी श्लोक आ तंकर बाद मैथिलीक नान्दी गीत आएल अछि । शङ्करक वन्दना रहल एहि नान्दी गीतमे बङ्गाली भाषाक केहन मिश्रण अछि द्रष्टव्य थिक एक अंश -

भौरी भमिया जव नतन करि लातवे मेदिनी डगमग कापे ।
हाथ श्रुवटो कटि पाद भूषण सबे दह दिश गिया रहे सापे ॥
अनुपम सुन्दर हरगुण वर्णन भूपतीन्द्र नृप गावे ।
वासव हरि विधि ना जानो तुमार गति केमने राखिबो मने भावे ॥

एहि नाटकमे प्रयुक्त गद्यक स्वरूप कहन अछि देखू सूत्रधार और नटीक कथोपकथन -

“नटी - अहे प्राण श्री श्री जय भूपतीन्द्र मल्ल देव केमन राजा अमि ना जानो नो ।

सूत्र - अहे प्रिये जवि तुमी ना जानो तबै तारवर्णना अमी कहव सुनो ॥”

सम्बरासुरवधोपाख्यान नाटक¹ :-

एहि नाटकक रचनाकाल अठारहम् शताब्दीक आदि भाग मानल गेल अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतसभमे भूपतीन्द्र मल्लक नामोल्लेख अछि । प्रद्युम्नद्वारा सम्बरासुरक वध ओ रतिक संग प्रद्युम्नक परिणयक प्रसिद्ध पौराणिक कथा एकर आधिकारिक कथा वस्तु थिक । एहि नाटकमे गद्य पद्य दुनूक प्रयोग भेल अछि ।

“श्री अर्द्धनारीश्वराभ्यां नमः” पश्चात् नान्दी श्लोक आ तत् पश्चात् मैथिलीमे नान्दी गीत आएल अछि । प्रस्तुत अछि नान्दी गीतक एक अंश -

भूति भूषित अङ्ग, शिर वहय गङ्ग दगधल कांप अनङ्ग ।
पारवति साब रङ्ग डाकिनि सब सङ्ग कय दानव गण भङ्ग ।
जगतक ईश्वर तोहहि महेश्वर, वृषभासन तुम छाजे ।
रविकुल मंडन, भूपतीन्द्र भन बिसरह मोहि जनु आज्ञे ॥

सूत्रधारक प्रवेश गीत पश्चात् पुष्पांजलि श्लोक आ तखन नाटकक प्रस्तावना अछि । प्रस्तावनामे रहल वार्तालाप मैथिलीमे अछि । एहि नाटकमे मैथिली गद्यक स्वरूप केहन अछि देखू कथोपकथनक एक अंश -

इन्द्र - हे प्रिये एहाक कलाकौशलता कतय धरि कहव ॥

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे नुरक्षित अछि । सूची संख्या प्र० ४०४

इन्द्राणी — हे प्राणनाथ हमर एत प्रशंशा की करै छिअ हमरो विनती
सुनल होअओ ॥

इन्द्र — प्रिये कहू ॥

एहि नाटकमे ठाम ठाम श्रृङ्गार गीत समावेश कएल गेल अछि ।

श्रृङ्गार गीतक स्वरूप —

वदन शोभित अति नयन विलासे ।

कमल उपर जनि कुमुद विकाशे ॥

रूपयौवन गुण तुओ अनुपामे ।

भूपतीन्द्र भण करू रति सकामे ॥

नाटकक अंतमे आरती गीत मैथिलीमे देल गेल अछि । आरती गीतक

एक अंश —

तुअ परसादे साध सवे पुरत,

दुर जायत दुख भारे ।

से मोए जानि गरल अबलम्बल,

साएल होएत सतारे ॥

भूपतीन्द्र नृप निज मति एहो भन,

ई मोर सकल विचारे ।

देवि जननिपद पंकज भजलाहु,

तेजि निखिल परिवारे ॥

जालंधरोपाख्यान नाटक¹ :-

एकर रचना काल १८ म शताब्दीक आदि भाग मानल गेल अछि । पौराणिक कथा पर आधारित एहि नाटकमे पाँच अङ्क अछि । कथोपकथन मैथिली गद्यमे अछि । नाटकक गीत सभ सरस अछि आ गीतमे नन्दलाल कविक नामोल्लेख अछि ।

“श्री गणेशाय नमः ॥ नमो नृत्यनाथाय” पश्चात् संस्कृतमे नान्दी श्लोक, मैथिली नान्दी गीत सूत्रधारक प्रवेश गीत आ पुष्पांजलि श्लोक क्रमशः आएल अछि । एकर बाद प्रस्तावनामे पहिने सूत्रधार ओ नटी संस्कृत-प्राकृतमे वार्तालाप करैत अछि पछाति मैथिलीमे । एकर बाद महादेव, पार्वती, गणेश, कुमार, वीरभद्र, नन्दी, भृङ्गी, जया, विजयाक रङ्गमञ्चपर प्रवेश होइत अछि आ

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या

प्र. ४०४

मुख्य कथा आरम्भ होइत अछि ।

एहि नाटकमे रहल श्रृङ्गार-रसक एक गीतक किछु अंश पद्यक दृष्टान्त स्वरूप -

अपुख्व नागरि सवे गुण आगरि सुन्दरि रति रस खानि ।
तुअ मुख देखिअ विकसित होअ हिय कैरव जनि शशि मानि ॥
कनक कलश दुहु कर कय देह मुहु अधर अभिय देह पान ।
अति दुरगत मोय सदय हृदय भय सुख दय राखह मान ॥

एहि नाटकमे गद्य कथोपकथनक भाषा केहन अछि तकर दृष्टान्तक लेल एक अंश -

गणशादि - हे त्रैलोक्य नाथ, हे जगदीश्वरी, हमरा सबहिक प्रणाम ।

महादेव - लोके भल कयल बयिसु ॥

गणेशादि - विश्वेश्वर जे आज्ञा ॥

मूलदेव शशिदेवोपाख्यान¹ :-

एकर रचनाक समय नाटकान्तमे देल गेल अछि । “इति मूलदेव - शशिदेवोपाख्यान नाटके तृतीयोऽंकः समाप्तः ॥ शुभ ॥ सम्बत् ८२६ ज्येष्ठ वदि ५ ॥” एहि अनुसार एकर रचनाकाल १८०६ ई. होइत अछि । इहो नाटक अन्य मैथिली नाटक अनुसार रचित अछि ।

गद्य-पद्यमय रहल एहि नाटकमे तीन अंक अछि । एकर राजवर्णना तथा देशवर्णनामे रत्नाकर द्विजक नामोल्लेख अछि । यथा -

जसु यश सुधवल प्रमुदित गावय, किन्नर अनुखन भावे ॥

सुकवि विमल मति रत्नाकर द्विज नृप गुण सुविमल गावे ॥

एहि नाटकमे रहल श्रृङ्गार गीतक एक अंश -

सुन सुन्दरि त्वहे मोर जिवन अधार ॥

न करह हम सबो माने, मधुर अधर देह पाने ॥

निदय मदन हन वाणे, शशिमुखि राखह पराणे ॥

वीर भूपतीन्द्र नृप भाने, वचन करह सधाने ॥

एहि नाटकक गद्यक भाषा केहन अछि तकरा लेल देखू गद्य कथोपकथनक एक अंश -

देवल - हे हिरामनि मधुवा अपन आश्रम जाय हलि भजन कय रहव चलू ॥

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । एकर सूची संख्या - प्र. १६५६

मुनिराज - विजय करू ॥

उभौ - हे मुनिराज अविलम्ब विजय करू ॥

देवल - बसुवा रोके चलु ॥

एहि नाटकक अंतमे एकटा रोचक प्रसङ्ग आएल अछि । ब्रम्हा कहैत छथि जे शक्ति विष्णु ओ महेश सभ एके छथि -

“ब्रम्हा - हे शिवभक्त, हे हरिभक्त, हे भवानी भक्त त्वहरा सबहिक मन कोन सन्देह भेल से कहू ।

शिवभक्त - हे कमरासन, हमे शिव भक्त ई लोक हरि भक्त, भवानी भक्त एही मध्य कोन श्रेष्ठ से आज्ञा करू ।

ब्रम्हा - दे भक्त जन लोके हम ब्रम्हा, महादेव, विष्णु, भवानी, गणेश, सूर्य्य चारू मूर्ति एक एही सन्देह जवो करिअ तबो भल नहि ॥”

विद्याविलास¹ :-

एहि नाटकक रचना ने. सं. ८४० भाद्र शुदि १३ सन् १७२० ई. मे भेल । बंगीय साहित्य परिषदसँ एकर प्रकाशन भेल अछि । अ० भा० सा० प्र० प्रयाग सँ सेहो एकर प्रकाशन भेल अछि ।

ई नाटक संस्कृत नाटकक नियमकेँ अनुसरण नहि कए स्वतंत्र रूपेँ राजवर्णना ओ देशवर्णना सहित रचल गेल अछि । ई गीत रूपक थिक । एकर राजवर्णना ओ देशवर्णनामे कवि काशीनाथक नामोल्लेख अछि । कवि ओ राजाक नाम रहल गीत -

रघुकुल-कमल प्रकाशन भूपे ।

अवतरु दिनमणिरूपे ॥

नृपभूपतीन्द्र मल्ल मदन-सुसाज

महिमण्डल सुरराज ॥

दानधरमगुण करणसमान ।

एहन नृपतिवर न देखल आन ॥

द्विज काशिनाथ बखाने ॥

मध्ययुगीन भारतक एक प्रसिद्ध कथा पर एकर कथावस्तु आधारित अछि । कथा अनुसार उज्जैनक राजा विरसिंहकेँ एक अत्यन्त प्रतिभाशालिनी

1. एहि नाटकक प्रकाशन श्रीयुत दनी गोपाल बन्धोपाध्यायक सम्पादनमे “नेपाले बाङ्गला नाटक” नामक पोथीमे भेल अछि ।

कन्या छलैन्हि । शास्त्रार्थमे जे कन्याके हराओत तकरहिसँ विवाह करएवाक संकल्प छलैक । अनेक राजकुमार अएलाह आ धुरि गेलाह । पिताके चिन्ता भेलनि आ परीक्षार्थ काञ्चि देशक राजा गुणसिन्धुक बालक सुन्दरके बजएवाक लेल राजकविके पठौलनि । एम्हर सुन्दरके विद्यावतीक रूप-गुणक पत्ता लागि गेल छलैन्हि ओ विवाहक उद्देश्यसँ उज्जैन आवि अपन नाम बदलि मालिनिक घरमे डेरा कयलैन्हि आ ओकरे सहयोगसँ विद्यावतीसँ भेंट कयलनि । दुनू गोटेमे प्रेम बढैत गेल । ई खबर पावि राजा हिनका कारागारमे बन्द कराए देलनि । राजकवि धुरिक अयलाक बाद राजाके बतौलनि जे उएह बन्दी राजकुमार सुन्दर छथि तखन हुनका मुक्त कएल गेल आ विद्यावतीसँ विवाह भेल ।

एहि नाटकमे सात अङ्क अछि । काल ओ स्थानक अन्वितिक उपेक्षा भेल अछि । गद्यक प्रयोग बहुत कम भेल अछि । गीत सभ छोट छोट मुदा गूढ़ अछि ।

महाभारत¹ :-

एहि नाटकक रचना ने. सं. ८२२ पाँष वदि ३ सन् १७०२ ई. मे भेल । बङ्गीय साहित्य परिषदद्वारा ई प्रकाशित भेल अछि ।

तेईस अङ्कमे विभाजित, बड़ पैघ कलेवर रहल ई नाटक गीत-रूपक यिक । एहि नाटकमे कवि कृष्णदेवक नामोल्लेख अछि । प्रस्तुत अछि देशवर्णनाक गीत -

भगत नगरवर रुचिर मनोहर

उतर भगवति घाम ।

भुवन विदितपुर अनुपम मन्दिर

सुजन अभिराम ॥

सुरवरनगर समान सुन्दर ॥

धरमकरम रत ततद नागर जत

द्विज गण पढय पुराण ॥

जयभूपतीन्द्र नृप ओहि नगर भूप

भूदेव कृष्णदेव भान ॥

एहि नाटकमे महाभारतक प्रसिद्ध घटना सभक उल्लेख अछि । कथा-सूत्र

1. एकर प्रकाशन "नेपाले वाङ्मला नाटक" नामक पोथिमे, श्रीयुत बनी गोपाल बन्धोपाध्यायक सम्पादकत्वमे भेल अछि ।

मिलयबाक लेल व्यास आ नारद सेहो रङ्गमञ्चपर उपस्थित कराओल गेल अछि । बहुतो घटनाक विषयमे गद्य वा पद्यमे सूचना मात्र देल गेल अछि । युद्धक अन्तमे भाइ भाइ बीच फूट होयबाक निन्दा करैत धृतराष्ट्रकेँ विलाप करैत देखाओल गेल अछि ।

अन्य नाटक

उपर्युक्त नाटक सभक अतिरिक्त जैमिनी-भारतनाटकम्, मुदावतीहरण नाटक, श्री खंड-चरित, पशुपति - प्रादुर्भाव आदि नाटकसभ नेपाले बाङ्गला नाटक नामक पोथीमे श्रीयुत बनी गोपाल बन्द्योपाध्यायद्वारा संपादित भेल अछि^१ । हिनक भणितासँ रचित कोलासुरबधोपाख्यान, पद्मावती नाटक, मनोरंजन नाटक, नलचरित - महानाटक वंशावली, विक्रमचरित नाटक, रामायण नाटकम् आ दू गोट अज्ञात-नाम खण्डित नाटकक सूचना जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे देने छथि^२ । प्रेमशङ्कर सिंह मयूरध्वजोपाख्यान^३, आ जयमन्त मिश्र रत्नेश्वर-प्रादुर्भावोपाख्यान नाटकक उल्लेख कयने छथि^४ ।

एहि नाटक सभमेसँ कतेको नाटकमे नेवारी, बाङ्गला आ अन्य भाषाक मिश्रण अछि । एहन मिश्रण रहल भाषाक विद्वानलोकनि ओकरा ओही भाषाक नाटक सेहो मानैत छथि ।

रणजित मल्लक भणितासँ रचित नाटक

भूपतीन्द्र मल्लक बालक रणजीत् मल्ल नेपाल सम्बत् ८४२ अर्थात् १७२२ ई मे गद्दी पर बसलाह आ १७६९ ई. धरि शासन कयलनि^५ । ई सकल सङ्गीत-शास्त्र-पारंग तथा गान्धर्वविद्या-निपुण छलाह । हिनक दीर्घ शासन कालमे मैथिली नाटक अपन चरम शिखरपर पहुँचल छल । हिनका आश्रयमे सबसँ अधिक नाटक लिखल गेल आ तकर अभिनयक व्यवस्था सेहो कएल गेल । हिनका समयक नाटकक भाषापर बाङ्गलाक उत्कट प्रभाव अछि । हिनका शासनकालमे भक्तपुरमे लिखल गेल निम्न लिखित मैथिली नाटक उपलब्ध होइत

१. इन्दिरा झा, आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित सृष्टि, सं-१९८७, पृ.-८८
२. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रथम संस्करण, पृ. - १५४
३. डा० प्रेमशङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रङ्गमंच, पृ. - ३६
४. डा० जयमन्त मिश्र, मैथिली नाटक पर संस्कृतक प्रभाव, प्रथम संस्करण, पृ. - ६२
५. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास, प्रथम संस्करण, पृ. २३४

अछि जाहि मध्य रामचरित तथा साधव-कामकन्दला प्रकाशित अछि^१ ।

उषाहरण नाटक^२ :-

आठ अङ्कमे रचित एहि नाटकक अभिनय रणजीत मल्लक इष्ट देवता तलेजु भवानीक मन्दिरक बहिर्द्वार जिर्णोद्धारक समयमे भेल छल । जकर उल्लेख नाटकक प्रस्तावनामे भेल अछि -

“सूत्र. - प्राणधिक प्रियतमे । असमसर साहसक मल्ल शरणागत वज्रपंजरं प्रतिज्ञा पार सुरापगासाधन जन विश्राम पूण्यकीर्ति धर्ममूर्ति रविकुल तिलक नेपालेश्वर श्री ३ स्वेष्ट देवता चरण कमलध्याननिष्ठ श्री श्री जयरणजिन्मल्ल देव महाराजाधिराजेन श्री स्वेष्ट देवता प्रीत्युत्तरतस्मात् देवालयद्विर्द्वारजिर्णोद्धार ताम्रोपरि सुवर्णलेपित तोरणच्छदि खड्ग कलशच्छत्रा-वरोहण कोट्याहुति यज्ञार्थ उषाहरण-नाम नाटकमभिनेतुमहमाज्ञप्तोऽस्मि ॥

एकर रचनाकाल ने.सं. ८७४ उल्लेख अछि जे इस्वी सम्वत्मे १७५४ होइत अछि । एहि नाटकक कथावस्तु प्रसिद्ध पौराणिक कथापर आधारित अछि । एहि नामसँ पहिनहुँ नाटक लिखल जा चुकल अछि । कथावस्तु सभक एकहि अछि प्रस्तुति अपना अपना ढंगसँ भेल अछि ।

नाटकक आरम्भमे संस्कृतमे नान्दीश्लोक तखन नान्दी गीत मैथिलीमे आएल अछि । सूत्रधारक प्रवेश गीतद्वारा जनाओल गेल अछि । सूत्रधार प्रवेश पश्चात् पुष्पांजली श्लोक पढैत अछि । प्रस्तावनामे सूत्रधार ओ नटी संस्कृतमे वार्तालाप करैत अछि । राजवर्णना ओ देशवर्णना पश्चात् पादक प्रवेश होइत अछि आ पादसभ संस्कृतमे अपन परिचय प्रस्तुत करैत छथि । तखन मैथिलीमे कथोपकथन तथा सन्तुलित मैथिली गीतमे नाटकक कथाक क्रमिक विकास भेल अछि । राजवर्णनामे द्विज काशीनाथक नामोल्लेख अछि -

संगित गुण खनि काम समाने ॥

लेल अहित महिम समरे जीतिय भीम सम अति वीर जाने ॥

नेपाल धरणि धनि वासव समान ।

नीति चतुर ओहे गरवहीन द्विज काशीनाथ बखान ॥

एहि नाटकमे गद्य कथोपकथनक भाषा केहन अछि देखू नारद ओ

-
१. सूर्य विन्नन इवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २३५
 २. पाण्डुलिपि, राष्ट्रिय अभिलेखालय, वाटमाडूमे सुरक्षित अछि । एकर पुस्तक सूची संख्या - प्र. ३६५

चित्रलेखा बीच भेल सम्वादक एक अंश -

नारद - हे चित्रलेखा चिन्ता जनु करिअ । हग इन्द्रजाल विद्या तोहरा देव, वंसू ।

चित्रलेखा - मुनिराज एहाक कृपा ।

(इन्द्रजाल विद्या विअ)

चित्रलेखा - हे मुनीन्द्र एहाक प्रसादे इन्द्रजाल विधाक निपुण भेलाहु, हमर प्रणाम ।

नारद - मन्त्र सिद्धिरस्तु ।

नारद - चित्रलेखा ई विद्याक प्रभाव तोहरा दृष्टिगोचर सब लोक होयत । तोहरा के केओ नहि देखत, निश्चिन्त भए द्वारिका प्रवेश करू । जखन युद्ध होयत तखने हमर स्मरण करू युद्ध देखयक हमरा आनन्द होयी अछ ।

डा० जयकान्त मिश्र साहित्यिक ओ काव्यात्मक चमत्कारक दृष्टिसँ एकरा उत्तम मानलैन्हि अछि मुदा डा० लेखनाथ मिश्र एहि बातसँ सहमत नहि छथि ओ एहि नाटककेँ मैथिली नाट्यक विकासक कडीक रूपमे लैत छथि ।

इन्द्रविजय नाटक¹ :-

एहि नाटकक रचनाकाल नाटकक अंतमे एहि प्रकारे उल्लेखित अछि।

इति श्री श्री जयरणजिन्मल्लदेव विरचिते

चित्रकेतवायुपाख्यानैन्द्रविजय नाम नाटके

पञ्चदशोऽंक समाप्तः ॥ शुभे ॥

संवत् ८७१ फाल्गुन शुदि ८ घंटा धुनका ॥

सं ८८४ आश्विन वदि ४ लिखित मतिराम ॥

शुभमस्तु सर्वदा ॥

अर्थात् एकर रचना १७५१ ई. मे भेल । एहिमे १५ अङ्क अछि । प्रसिद्ध पौराणिक कथा चित्रकेतूपाख्यानसँ एकर कथावस्तु आरम्भ होइत अछि । एहिमे दू गोट कथा निबद्ध अछि । एक दिस राजा चित्रकेतु पुत्र नहि भेलासँ चिन्तित होइत छथि । पुत्रेष्टि यज्ञ पश्चात् बालकक जन्म होइत छैक मुदा रानीक सौत्तिकेँ डाह होइत छैन्हि आ बालककेँ विष छोआए मारि दैत छथि । राजा रानी तीर्थ भ्रमणार्थ विदा भए जाइत छथि । दोसर कथामे वृहस्पति इन्द्रसँ अनादृत होइत छथि आ इन्द्रसँ बदला लैत छथि । इन्द्र पदच्युत होइत छथि । अंतमे पुनः अपन पद प्राप्त करैत छथि ।

1. पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या - प्र. ३४५

नाटकक आरम्भमे नान्दी श्लोक पश्चात् मैथिलीक नान्दी गीत होइत अछि । तत् पश्चात् सूत्रधार ओ नटी नाटकक प्रस्तावना करैत अछि आ नाटकक मुख्य कथा पात्रक प्रवेश-गीत सहित आरम्भ होइत अछि ।

एहि नाटकमे शृङ्गार रसक भरमार अछि तहिना करुणा रसक धार सेहो बहल अछि । शृङ्गार रसक गीतक एक अंश जे दानवराज बलि अपन प्रियतमासँ कहैत छथि —

सुरपुर सुन्दरि नहि तोर जोर अछ
अनुपम वदन तोहार ।
से देखि मनोभव कुसुम विशिख लय,
कयल मोहि परहार^१ ॥

पुत्रक मृत्यु पश्चात राजा चित्रकेतुक करुणासँ भरल वाणी —

कहेन रहव मय सुत विनु जिव धय कतय पाओव ओहि धाय ।

कहेन होयत गति कतहु न मोर गति कि करव एकर उपाय^२ ॥

दधीचिक देहत्यागक समय सुवर्चनाक विकल वाणी गद्य कथोपकथनमे —

सुवर्चना — हे प्राणनाथ हमराकेँ अनाथिनी कय अपन जीवन त्याग कए

इन्द्रकेँ अस्थि जनु दिअ हमर सहस्र विनती ।

दधीचि — हे प्रिये धैर्य कय हमर वचन सुनू ।

सुवर्चना — नाथ आज्ञा करू^३ ।

मान्धात्र्युपाख्यान नाटक^४ :-

एहि नाटकक रचनाकालक सम्बन्धमे नाटकक अंतमे सूचना भेटैत अछि —

“संवत् ८७८ मार्ग वदि ७ शुभमस्तु” एहि अनुसार एकर रचना समय १७५८ ई. होइत अछि । पाँच अंकक योजना रहल एहि नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । भाषा आओर शैली दुनू तरहें ई नाटक उषाहरणसँ सादृश्य रखैत अछि । एकर प्रस्तावनामे संस्कृत प्राकृत आएल अछि । एकर अतिरिक्त

1. पाण्डुलिपि, पृ. - ४२

2. उएह, पृ. - २५-२६

3. उएह, पृ. - ६७-६८

4. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या — प्र. - ३६५

सम्पूर्ण नाटकक गद्य पद्य कथोपकथन मैथिलीमे अछि । कतहु कतहु संस्कृतक श्लोक आएल अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतमे द्विज काशीनाथक नामोल्लेख अछि -

एहू नाटकक प्रारम्भ नान्दी श्लोकसँ भेल अछि वादमे मैथिली नान्दी गीत अछि । सूत्रधारक प्रस्तावनामे राजवर्णना ओ देशवर्णना कयल गेल अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त शृङ्गार रसपूर्ण गीतक एक अंश -

शोभा हेवि उरोज हेरि मुय काति,
वदन कमल पर, देखि खंजन जोरा रे ॥

एहि नाटकमे गद्यक भाषा केहन अछि देखू कथोपकथनक एक अंश -

वशिष्ठ - हे याज्ञवल्कादि मुनि सवे युवनाश्व राजाक पुत्र नहि ते दुःखित भय अयलाह कउन यज्ञ कयले सन्तान होयत से आज्ञा करू ।

याज्ञादि - हे वशिष्ठ मुनि हमरा सवहुक मनो ऐन्देष्टि यज्ञ कयले सन्तान होयत ।

कोलासुरवधोपाख्यान नाटक¹ :-

एहि नाटकक रचनाकालक सम्बन्धमे नाटकक अंतमे उल्लेख भेल अछि - “सं. ८८६ ज्येष्ठ सुदि ३ शुभ ॥” एहि अनुसार एकर रचनाक समय १७६६ ई. ज्ञात होइत अछि ।

सात अंकमे विभक्त एहि नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतमे द्विज काशीनाथक नामोल्लेख अछि । एहि नाटकक प्रस्तावनामे संस्कृत प्राकृतक प्रयोग भेल अछि तहिना बीच-बीचमे संस्कृतक श्लोक आएल अछि मुदा एकर अतिरिक्त सम्पूर्ण नाटकक गद्य पद्यमे मैथिली भाषाक प्रयोग भेल अछि । एहि नाटकमे रहल पद्यक अंश -

कुमारि कालि, महालक्ष्मि भवानि,
मनुष्य भय जन्म भेल, आरे ।

चरित न जानिय, भूप द्विजप्लव,
अनजानि हमहि हमसो न करिअ फेर ।

1. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या - प्र. - ६६५.

एहि नाटकमे प्रयुक्त कथोपकथनमे गद्यक स्वरूप देखू—

महादेव— हे पार्वत्यादिलोके सुमेरु पर्वत आय पहुँचलाहुँ आनन्दे विश्राम करव ।

सर्वे— ईश्वर अवश्य ॥

किछु गोटे एकरा काशीनाथक रचना मानैत छथि^१ यद्यपि ई रणजित् मल्लक भणिता युक्त नाटक अछि ।

अन्धकासुरवधोपाख्यान नाटक^२:-

एहि नाटकक रचना नेपाल सम्वत् ८८८ अर्थात् १७६८ ई. मे भेल । एहि नाटकक उद्देश्यक सम्बन्धमे सूत्रधार कहैत अछि— “श्रीरणजिन्मल्लदेव-परमभट्टारक महाराजाधिराजेन श्री श्रीस्वेष्टदेवता प्रीत्युत्तरपूर्व संकल्पित अन्धकासुरवधोपाख्यान नाम नाटकमभिनेप्तुमहमाज्ञाप्तोस्मि ।”

पाँच अङ्कक एहि नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । उपाहरण नाटक सदृश रचनाविधान रहल एहि नाटकमे ठाम-ठामक संस्कृतक श्लोककेँ छोडि सर्वत्र मैथिली गद्य-पद्यक प्रयोग भेल अछि । नाटकक राजवर्णनामे द्विज काशीनाथक नामोल्लेख अछि—

गज अश्व गाव अज एहि वद झुंद्र,

देव द्विज आदर मान ।

रघुकुल नरमणि नेपाल मण्डल धनि,

द्विजे काशीनाथ कयल बखान ॥

एहि नाटकमे प्रयुक्त श्रृङ्गार गीतक एक अंश—

मनेमन पुर देह, देखिय नयन

कनक रूपि सुन्दरि, मोहित बदन ॥

एहि नाटकमे प्रयुक्त गद्यक स्वरूप—

शशि— हे प्राणनाथ हमरो विनती शुन ।

अन्ध— प्रियतमा कहु ।

भीमा (मन्त्री) — हे दानवाधिप हमरो विनती अवधान करु ।

अन्ध— भीमानन्द कहु ।

१. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अगोर विकास, प्र० सं., पृ.— २५०

२. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या — प्र. ३५४

जलशायिविष्णवादि सृष्टियुपाख्यानम् वा मच्छावतार नाटक^१.—

एहि नाटकमे मानयक उल्लेख नहि अछि तथापि एकर रचना अठारहम् शताब्दीक मध्यमे भेल मानल जाइत अछि । एहू नाटकक रचना देवता खुशी करवाक लेल कएल गेल बात सूत्रधारक उक्तिमे आएल अछि ।

१३ अङ्कक योजना रहल एहू नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । एकरहु रचना शैली अन्य नाटकहि सदृश अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त गद्यक स्वरूप—

विष्णु— हे लक्ष्मी चलू वैकुण्ठ आय पहुँचलोहु क्षण एक विश्राम कय रहव ॥

लक्ष्मी— नाथ अवश्य ॥

पद्यक स्वरूप—

लाल नयन भाँग लगन हसि-हसि नाचिय रंगे ।

भूपति रणजित कहे सार दुष्ट सवे करु भंगे ॥

खट्वासुरवधोपाख्यान नाटक^२.—

एहि नाटकक रचना १७६७ ई. मे भेल । तीन अङ्कक एहि पौराणिक नाटकमे खट्वासुरक वधक कथा वर्णित अछि । एकर रचना शैली अन्य नाटकहि सदृश अछि । एहि नाटकमे मैथिली गद्य-पद्यक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । एहि नाटकक राजवर्णना तथा देशदर्शनमे द्विज काशीनाथक नामोल्लेख अछि । गद्य कथोपकथन देखू—

खट्वासुर— हे इन्द्रादि देवता लोके ई अमरावतीक भाला, बहान लिअ, हम रैयत तोहरा सवहि भेल जखने हमर आज्ञा आवत तखने शीघ्र आउ ॥

इन्द्रादि— दानवेन्द्र अवश्य ॥

नान्दी गीतक एक अंश—

त्रिशूल डमरू करे, अष्टकुल नाग धरे भांगलगे ।

वृष सिंह जान बसे शुद्ध कर्पूर अनर वर्ण दुहु, मोह रसब गे ॥

सब रस सागर, देव मुनि पउरिअ, युग चार ।

भन रण जित अग्रोर नहि जान सरन राखि दिअ सार ॥

१. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या— प्र. ३६५

२. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित । सू. सं.— प्र. ३६५

बाल्मीकि रामायण नाटक^१:-

एहि नाटकक रचना नेपाल सम्वत् ८८५ अर्थात् १७६५ ई. मे भेल । ई बड पैघ नाटक थिक । सम्पूर्ण बाल्मीकि रामायण नाटकक रूपमे लिखल गेल अछि । ई नाटक ४३ अङ्कमे समाप्त भेल अछि । एहि नाटकक राजवर्णना आ देशवर्णनामे कवि काशीनाथक नामोल्लेख अछि । कवि काशीनाथ भूपतीन्द्र मल्लक समयसँ कविक उपाधि पओने छलाह ।

रणजित मल्लक भणितासँ युक्त एहि नाटकक रचना विधान गोपीचन्द्रोपाख्यान नाटक सदृश अछि । एहि नाटकक भाषा बङ्गाली मिश्रित मैथिली अछि । नाटकक अन्तमे रहल वाक्यसँ एकर रचनाकार आ किछु अन्य विषयक जानकारी भेटैत अछि ।

“इति श्री श्री जयरणजिन्मल्लदेव महाराजाधिराज परम भट्टारक नरेन्द्र विरचिते वाल्मिक रामायण नाटक त्रिचत्वारिंशत्यंस्कः समाप्तः ॥४३॥ शुभमस्तु ॥ सँ ८८५ चैत शुदि १० धुनका शुभं ॥”

रुक्मिणीहरण नाटक^२:-

“इति श्री श्री जयरणजिन्मल्लदेव विरचित रुक्मिणीहरण नाम नाटक पञ्चमोऽकरस्तमाप्तः ॥ संवत् ८७४ ज्येष्ठ शुदि १० शुभं ॥” नाटकक अन्तमे रहल एहि वाक्यसँ जात होइत अछि जे एहि नाटकक रचना १७५४ ई. मे भेल आ एहिमे पाँच अङ्क अछि ।

ई नाटक पौराणिक अछि । रुक्मिणी ओ श्रीकृष्णक विवाहक प्रसिद्ध पौराणिक कथा एहि नाटकक कथावस्तु अछि ।

एकर रचना विधान अन्य नाटकहि सनक अछि । एहि नाटकमे मैथिली गद्य-पद्यक प्रयोग भेल अछि । कथोपकथनमे गद्यक स्वरूप देखू—
श्रीकृष्ण— हे नारद मुनि ई आसन उपवेशन करू !

नारद— श्रीकृष्ण अवश्य ॥

×

×

×

श्रीकृष्ण— प्रिये तोहें हमर पुरुष जन्मक घरनी थिकी । हमर चित्त लागल किछु कहब ।

रुक्मिणी— सुनु मायानाथ, हम की कहब ।

-
१. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या— प्र. ६९५६
 २. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या— प्र. ६९५६

कृष्णचरित्र नाटक^१:-

“इति श्री श्री जयरणजिन्मल्ल महाराज विरचिते कृष्ण-चरित्र नाम नाटके पञ्चदशोऽक्षरम्पूर्णः॥ संवत् ८५८ फागुन शुदि १ बुधवार संपूर्ण याङ् दिन शुभं ।” नाटकक अन्तमे रहल एहि सूचनासँ जात होइत अछि जे १५ अङ्कक एहि नाटकक रचना १७३८ ई. मे भेल ।

एहि पौराणिक नाटकमे कृष्णक चरित्र लीला वर्णित अछि । श्री अर्द्धनारीश्वराभ्यां नमः कहैत संस्कृतमे नान्दी श्लोक आएल अछि तत् पश्चात् मैथिलीक नान्दी गीत आएल अछि । नाटक ५ अन्तमे आशीर्वादक श्लोक देल गेल अछि ।

एहि नाटकमे प्रयुक्त मैथिली पद्यक स्वरूप-

नगपति नन्दिनि विलसति रंगे ।

सुरसरि शिर पर भोजन भंगे ॥

इष्ट देवताक मन्दिरमे बड्का घंटा चढ़एवाक उत्सवपर ने. सं. ८५९ अर्थात् १७३९ ई. मे एहि नाटकक अभिनय कएल गेल छल^२ ।

रामायण नाटक^३:-

“इति श्री श्री जयरणजिन्मल्ल नरेन्द्र विरचिते रामायण नाटके चत्वारिंशत्यंकः ॥ संवत् ८४५ फागुन वदि १ मिति शुभमस्तु ॥” नाटकक अन्तमे देल गेल एहि सूचनासँ जात होइत अछि जे एकर रचना १७४७ ई. मे भेल ।

चालिस अङ्कक एहि पौराणिक नाटकक रचना जयरणजित् मल्लक आज्ञासँ गणेश कवि कएने छलाह । एहि नाटकक आदिमे अर्द्धनारीश्वराभ्यां नमः पश्चात् नान्दी श्लोक आ तत्पश्चात् नान्दी गीत आएल अछि । प्रस्तुत अछि नान्दी गीतक एक अंश-

जय सुरवन्दित मौलि कला निधि वासकरे गुणगाने ।

नागकंकण धर देखिते सुन्दर कौतुक जगत बखाने ॥

नाटकक रचना-विधान अन्य नाटकहि जकाँ अछि ।

१. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या प्र.- ६६५६
२. सूर्य विक्रम शवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २३८
३. पाण्डुलिपि, राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित । सूची सं० - प्र. ३४५

कृष्ण-कैलाश यात्रोपाख्यान नाटक^१:-

श्री श्री जयरणजिन्मल्ल देव विरचिते कृष्ण-कैलाशयात्रोपाख्यान नाम नाटके सप्तमोऽंकः समाप्तः ॥ शुभम् ॥ संवत् ८६७ मार्ग वदि ।” अर्थात् सात अङ्कक ई नाटक १७४७ ई. मे लिखल गेल ।

एहि पौराणिक नाटकक भाषा प्रमुख रूपेँ बङ्गला अछि ।

रामचरित नाटक^२:-

एकर रचना १७२५ ई. मे भेल । एहि नाटकक राजवर्णना तथा देशवर्णनामे गणेश कविक नामोल्लेख अछि । एकर भाषा बङ्गला मिश्रित अछि ।

विदित धरापति मल्ल श्री रणजित

सुन्दर करेण विलासे ।

विश्वलक्ष्मि सुत गुणसागर

जार यश निखिल प्रकाशे ।

प्रबल प्रताप विजित अरिमण्डल

तेजिलो गवर निदाने ।

दाने तेजि कर्ण सम रघुकुल भूषण

नृपगुण गणेश बखाने ॥^३

दोसर उदाहरण^४:-

हरषे वृन्दावने जाय देषव

कोकिल ध्वनि शुनि वेणु वजाव

मिलत गोपिनी सवे आय ।

रमणीर स्वामी तुमी रसेर निवास ।

ग्रामि तो तुमार दासि करो समाधान ।

जीवन धन तुमी करो समाधान ।

जीवन धन तुमी कि जाने विधान ।

एकर प्रकाशन बनी गोपाल बन्धोपाध्यायद्वारा सम्पादित नेपाले बङ्गला नाटकमे भए चुकल अछि ।

१. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या-प्र.- ११६
२. सूर्य विक्रम जवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.- २३५
३. उएह ।
४. उएह, पृ.- २३६

माधवानल कामकन्दला^१:-

एकरो प्रकाशन “नेपाले वङ्गला नाटक” मे भेल अछि । एहि नाटकक देशवर्णनामे धनपतिक नाम उल्लेख अछि ।

भगत नगर वर अतिहि मनोहर
जसु नहि सब महि जोर ।
सुरपुरि गुण ऊन बलिक सदन हून
सुविदित अच्छ चउ होर ॥
जगत जननि रहि भैरव सहितहि
पुर जाहि रणजित आस ।
गृणधन परिपूर पुरजन बुधवर
रसे वस धनपति भास^२ ॥

एहि नाटकमे भाषाक प्रयोग केहन अछि, देखू दोसर अंश-

अवे नाहु चलु पदमाकर ही
शोभा देखु प्रिय सखि तीर राहि ।
जाएव उलास कय गमने जिनेय करी ।
त्वरित हि आओव प्राणितव भरी ।^३

मदन चरित नाटक:-

ई नाटक अपूर्ण अछि तथा जगत् प्रकाश मल्लद्वारा रचित मदनचरित नाटकक अनुकरण कए लिखल गेल अछि ।

अन्यान्य नाटक:-

एकर अतिरिक्तो कतेको नाटक हिनका नामे लिखल गेल सूचना भेटैत अछि । जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे ‘दिवपाल गणेशोपाख्यानम्’, ‘पृथू-पाख्यान’, ‘ययात्युपाख्यानम्’, ‘वीरवरोपाख्यान’, ‘गोरक्षोपाख्यानम्’, ‘सुब्रह्मण्योपाख्यानम्’, ‘हरगौरी कथा’, ‘षड्दर्शन कथा’, नल चरित, रुक्मिणी-परिणय, त्रिपुरासुरबधोपाख्यान आदि नाटकक सेहो उल्लेख कयने छथि । एकर बादो लेखनाथ मिश्र चन्द्रांगदोपाख्यान, कृष्ण-चरितोपाख्यान आ हरगण कथा

१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.- २३६
२. उएह ।
३. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- १५६
४. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.- २३८

नाटकक उल्लेख कयलनि अछि ।

कान्तिपुर वा काठमाण्डूमे रचित नाटक

मल्ल वंशक प्रसिद्ध राजा यक्षमल्ल वृद्धावस्थामे अपन ज्येष्ठ पुत्र रायमल्लकेँ राजतिलक देव चाहैत छलाह^१ । मुदा भारदारलोकनि यक्षमल्लक मञ्जिला पुत्र रत्नमल्लकेँ चाहैत छलाह । एही कारणसँ अनेक युक्ति लगा रायमल्लक राजतिलक रोकि देलनि । एहि बातसँ यक्षमल्लक अन्तिम समयमे रायमल्ल आ रत्नमल्ल बीच विभेद होयबाक अनुमान लगैत अछि । यक्षमल्लक मृत्यु पश्चात् सेहो भारदारलोकनि रत्नमल्लकेँ राजा बनेबाक प्रयास कयलनि मुदा असफल भेलाह आ रायमल्ल सिंहासनपर बैसलाह । तकर बाद रत्नमल्ल पाटनक तथा रणमल्ल बनेपाक हाकिम नियुक्त भेलाह । तत्पश्चात् रायमल्लक कमजोरीसँ लाभ उठा रत्नमल्ल काठमाण्डू अवि ओहि ठामक राजा बनि गेलाह आ स्वतन्त्रतापूर्वक राज्य सञ्चालन करए लगलाह । पाटन जे काठमाण्डू दरबारअन्तर्गत छल सेहो पाछू अलग भऽ गेल । ओम्हर रणमल्ल सेहो बनेपामे राज्यक घोषणा कयलनि ।

रत्नमल्लद्वारा स्थापित एहि राज्य शाखामे रत्नमल्ल आ हुनक उत्तराधिकारी (पुत्र) सूर्यमल्लक^२ शासनकालमे मैथिली नाटकक कोनो सूचना प्राप्त नहि होइत अछि । मुदा सूर्यमल्लक पुत्र नरेन्द्रमल्ल (अमरमल्ल) क समयसँ मैथिली नाटकक रचना उपलब्ध होइत अछि ।

नरेन्द्रमल्लक भणितसँ रचित नाटक

ई काठमाण्डू राज्य शाखाक संस्थापक रत्नमल्लक पौत्र छलाह । जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे हिनका रत्नमल्लक पुत्र अमरमल्लक उत्तराधिकारी कहने छथि^३ मुदा सूर्य विक्रम ज्ञवालीक अनुसार ई सूर्यमल्लक पुत्र छलाह आ अमरमल्ल हिनकर अपने दोसर नाम छलन्हि^४ । नेपालक आनो

१. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अगोर विकास, प्र. सं., पृ.- २५७
२. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.-६२
३. पार्ष्वेन्द्रमल्लक शिलालेखमे रत्नमल्लक पुत्र अमरमल्ल कहल गेल अछि मुदा प्रतापमल्लक शिलालेखसभमे रत्नमल्लक पुत्र सूर्यमल्ल आ सूर्यमल्लक पुत्र अमरमल्ल (नरेन्द्रमल्ल) कहल गेल अछि । उएह, पृ.- ११३-११६
४. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- १५६
५. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.- ११६

पुस्तकमे एहि तरहक उल्लेख अछि^१ । ने. सं. श्रावण ६७१ सन् १९५२ ई. मे हुनका समयमे रचल गेल एक ग्रन्थक उल्लेख बेंडल महोदय कयने छथि^२ । हिनका समयक एकटा दोसर ग्रन्थ गीताभाष्य पाओल गेल अछि, एहि पुस्तकमे अमर मल्लक मन्त्री मुकुन्द शर्मा पाठकक आज्ञासँ उतारल गेल चर्चा अछि^३ । एहिसँ हिनका समयमे साहित्यिक गतिविधि होएव प्रमाणित होइत अछि । जयकान्त मिश्र अपने लिखैत छथि जे अमर मल्ल नेपालमे सात प्रकारक नृत्य^४ चलौलन्हि आओर अन्यान्य कलासभक सम्बर्द्धन कयलनि । ई हिनक कला प्रतिक रुचिक परिचायक थिक ।

ई दूटा नाटकक रचना कयलनि ।

१) रामायण:-

१२ अङ्कक योजना रहल ई नाटक पौराणिक कथावस्तुपर आधारित अछि ।

२) महाभारत:-

इहो नाटक पौराणिक कथावस्तुपर आधारित अछि ।

प्रताप मल्लक समयमे रचित नाटक

लक्ष्मीनरसिंह मल्लक बालक प्रतापमल्ल बहुत प्रतापी राजा छलाह । ई स्वयं अनेक शास्त्र ओ भाषाक गम्भीर ज्ञान रखैत छलाह । हिनक मैथिली पद्यसभ जे मैथिली अभिलेख गीतमालामे प्रकाशित भेल अछि से हिनक कवित्वशक्तिक परिचायक थिक । ई बहुत मैथिल पण्डित लोकनिके अपना दरबारमे आश्रय देने छलाह । ई अपन सिक्कापर 'कविन्द्र' उपाधि अङ्कित करौने छलाह । हिनका समयक वंशमणि झा रचित दू गोटा मैथिली नाटकक अभिलेख प्राप्त होइत अछि ।

१) गीतदिगम्बर^५ ।

ई चारि अङ्कक पौराणिक नाटक थिक । पार्वतीद्वारा शिवक सम्मोहन

१. इतिहास (कक्षा ९-१०), ज. शि. सा. के., भक्तपुर एगारहम् संस्करण, पृ.- ४९

२. सूर्यविक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.- ११६

३. उएह ।

४. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- १५८ (एहिमे नृत्यक बदला नाटक कहल गेल अछि जे प्रेसक अशुद्धि बुझाईत अछि) ।

५. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या- प्र.- ३८२

एहि नाटकक मुख्य कथावरु थिक । एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतसभ बहुत सुमधुर अछि । इएह गीतसभ असलमे नाटकमे रोचकता लओने अछि ।

एहि नाटकक अभिनय शाके १५७७ श्रावण कृष्ण पंचमी बुधदिन सन् १६५५ ई. प्रताप मल्लक तुलापुरूपदानक शुभ अवसरपर भेल छल ।

द्रष्टव्य थिक एहि नाटकमे प्रयुक्त एकटा गीत —

जयति जगदेकजननी विबुधगणानन्दकारिणी जयति ।
 अमृतांशुमौलिमानसविलासहंसी चिरं जयति ।
 आध मौलिमण्डनफुलमाले । आधतरङ्गितसुरसरिधार ।
 आध अलिक तिलक्ष नवइन्दु । आध सोहाओ सिन्धुरविन्दू ।
 कोमलविकट चरण दुहुचारी । अपुर्व नाचकरथि तिपुरारि ।
 एकदेह अधपूषपदारा । तेतिशकोटि देव देख निहारा ।
 सुकवि वंशमणि ए सुरस गावे । सेवि देव हरकी नहि पावे ।

एहि नाटकमे रचनाकारक रूपमे वंशमणिक नाम उल्लेख अछि —

“अस्ति किल भरद्वाजकुलजन्मना जनकजनपदीयेन रामचन्द्रशर्मणः
 पुत्रेणा वंशमणिकविनोपविद्धं गीतदिगम्बरं नाम रूपकमिति..... ।”

मुदितमदालसा^१ :-

एहि नाटकक अधिकांश भाग संस्कृत प्राकृतमे अछि ।

पार्थिवेन्द्र मल्लक समयमे रचित नाटक

प्रतापमल्लक बाद हुनक पुत्र नृपेन्द्र मल्ल १६७५ ई. मे राजा भेलाह । तकर करिव चारि वर्षक बाद हुनक मृत्यु भऽ गेलन्हि आ नरेन्द्र मल्लक भाइ पार्थिवेन्द्र मल्ल राजगद्दीपर बैसलाह । हिनका राज्यकालमे रचित ‘पञ्चराक्ष’ नामक नाटकक पाण्डुलिपिक सूचना प्राप्त होइत अछि ।

भूपालेन्द्र मल्लक समयमे रचित नाटक

पार्थिवेन्द्र मल्लक पश्चात् हुनक बालक भूपालेन्द्र मल्ल राजा भेलाह^२ । ई कवि चूड़ामणिक उपाधि धारण कयने छलाह ।

भूपालेन्द्र मल्लक समयमे रचित नाटक जकर जानकारी प्राप्त होइत से निम्न प्रकार अछि —

१. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रीय पुस्तकालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या — ३६२७

२. सूर्य चित्रम जवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ - १६०

धर्मदत्त चरित्र नाटक¹ :-

एहि नाटकक गीतसभक भणितामे भूपालेन्द्र मल्लक नामोल्लेख अछि मुदा ई कृष्णानन्द कविक रचना थिक । तेसर अङ्कक अंतमे एहि वातक सूचना स्पष्ट अछि -

“इति श्री भूपालेन्द्र मल्ल महाराजाज्ञया श्री कृष्णानन्द विरचिते श्री पशुपति महात्म्यान्तर्गत धर्मदत्त चरित्र नाटके तृतीयोऽंकः ॥”

एहि नाटकक शुरु आ अंत दुनू भागक अंश खण्डित अछि । एहि नाटकक रचनामे मैथिली गद्य-पद्यक प्रयोग भेल अछि । गद्यक स्वरूप -

“ - हे देवलोके अनादि निज स्थान ई क्षण नात्र छाडी नही एतहि ब्रह्मा लोकक उत्पत्ति प्रलयादि । एकरे आद्यन्त ब्रह्महुँ पूर्व्वनटी पओले, पुन मृगा रूप लए एतही छलाहु विसरल की तखनुक बोल ।”

चारिम अङ्कमे प्रयुक्त श्रृङ्गार गीतक एक अंश -

सुन्दरि वरणव कि तुअ रूप ।

जगतँ जतनु जत ततओ अनूप ॥

मारति दमन विजुलि तनु तूल ।

चपल न चारु भ्रमर नाहि भूल ॥

नल चरित :-

भूपालेन्द्र मल्लक भणितासँ रचित नल चरित्र नाटकक एक प्रति बीर लाइब्रेरीमे अछि । एहि नाटकमे गद्यक अभाव अछि । एहि नाटकक भाषा केहन अछि द्रष्टव्य थिक एकटा गीत -

तेरो वदन मातो शशधर

मेरो नयन चकोरा ।

देखत मोह ए अधिक सोह ए

कहहु वचन मेरा ।

देखिते सुन्दर चपल लोचन

काजर शोभारी ।

मनोपङ्कज भ्रमर सोहत

पवन से लघुचारी ।

1. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या - च-८६

पार्थिवेंद्रसुत नृपभूपालेन्द्र कहत
 एहो विचारी ।
 उचित समय मिलहुं नागरि
 पति से मति समारी ।¹

भास्कर मल्लक समयमे रचित नाटक

भूपालेन्द्र मल्लक पुत्र श्रीभास्कर मल्लदेव १७०२ ई. मे एकटा गीतमय नाटक (वीर लाइब्रेरी, वस्ता नं - ११-२४३) लिखलैन्हि ।²

जगज्जय मल्लक शासनकालमे रचित नाटक

भास्कर मल्ल निःसन्तान छलाह । एही कारणसँ प्रताप मल्लक पुत्र महीपतीन्द्र मल्लक पुत्री पक्षक सन्तान जगज्जय मल्ल भास्कर मल्लक उत्तराधिकारी भेलाह ।³ हिनका समयमे रचित नाटकक विवरण एहि प्रकार अछि ।

अभिनव प्रबोध चन्द्रोदय⁴ :-

पशुपति नाथक उद्देश्यसँ जगज्जय मल्ल एकटा यात्रा चलौने छलाह । ओहि यात्रामे देशदेशान्तरक पण्डित आएल समयमे एहि नाटकक अभिनय कयल गेल छल ।

१५ अङ्कक ई नाटक संस्कृत प्रबोधचन्द्रक रूपान्तर स्वरूप लिखल गेल अछि । एकर भाषा वङ्गला मिश्रित अछि ।

विद्याविनोद नाटक⁵ :-

जगज्जय मल्लक नामे एहि नाटकक सूचना भेटैत अछि ।

जगज्जय मल्लक बालक जयप्रकाश मल्ल काठमाण्डूक अन्तिम मल्ल-वंशीय शासक भेलाह । हिनका राज्यकालमे कोनो मैथिली नाटकक रचना भेल वा नहि तकर कोनो सूचना प्राप्त नहि होइत अछि ।

पाटन (ललितपुर) शाखामे रचित नाटक

यक्ष मल्लक मृत्यु पश्चात रत्न मल्ल काठमाण्डू शाखाक स्थापना कयने छलाह । हिनक वंशज सदाशिवमल्ल रैतीद्वारा आग्रमण भेला पर भागि कए

1. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २४०
2. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्य इतिहास, पृ. - १५६
3. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - १६८
4. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. - १५६
5. जयमन्त मिश्र, मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव, पृ. - ६५

भादगाँव चलि गेलाह। भादगाँवक राजा हिनका पकड़ि कए कैद कयने छलैन्हि किछु दिनक बाद ई ओही ठामसँ बेपत्ता भए गेलाह। एम्हर हुनकर भाइ शिवसिंह मल्ल काठमाण्डूक राजा भए गेलाह। शिवसिंह पाटनक विद्रोही सामन्त वैश्य ठकुरी पुरन्दर सिंहकेँ परास्त कए अपन पुत्र ठाकुर सिंहकेँ पाटनक सामन्त नियुक्त कयलनि। शिवसिंहक जीवितावस्थहिमे ठाकुर सिंहक मृत्यु भेलाक बाद हरिहर सिंहकेँ पाटनक राज्यभार देल गेल। ई ठाकुर सिंहक छोट भाइ छलाह। हरिहर सिंहक मृत्यु भऽ गेलैक तँ पाटन पुनः काठमाण्डू दरबारक अन्तर्गत भऽ गेल। हरिहर सिंहक मृत्युक समय सिद्धिनरसिंह मायक गर्भमे छलैथि। पतिक मृत्यु भेलापर सती जएवाक जिद्द कयलापर शिवसिंह अपन पुतोहुकेँ वचन देने छलाह जे अहाँक पुत्र वा पुत्री जे हएत तकरा पाटनक सिंहासन देव। इएह वालक सिद्धिनरसिंह मल्ल छलाह जे जन्मितहि राजपदक अधिकार पओने छलाह। ई वयस्क भेलापर राजप्रतिनिधिक रूपमे पाटनक शासन चलवैत छलाह। शिव सिंहक मृत्यु पश्चात हुनक पौत आ सिद्धिनरसिंह मल्लक ज्येष्ठ भाइ लक्ष्मी नरसिंह मल्ल काठमाण्डूक राजा भेलाह। सिद्धिनरसिंह मल्ल अपन अग्रजक प्रतिनिधिएक रूपमे छलाह। मुदा प्रताप मल्लद्वारा १६४१ ई. मे पिता लक्ष्मी नरसिंह मल्लकेँ कैद कऽ स्वयं राजा बनि गेलापर सिद्धिनरसिंह मल्ल सेहो अपनाकेँ स्वतन्त्र राजा होयवाक घोषणा कयलनि आ अपना नामसँ मुद्रा बनौलनि^१। एहि तरहें पाटन राज्य शाखाक निर्माण भेल। एहि राज्य शाखा अन्तर्गत अनेक मैथिली नाटक ओ मैथिली गीतक रचना भेल।

सिद्धिनरसिंह मल्लक राज्यकालमे रचित नाटक

स्वतन्त्र ललितपुर राज्य शाखाक संस्थापक सिद्धिनरसिंह मल्ल एहि ठामक साहित्यक इतिहासमे मैथिली काव्यक प्रथम प्रणेता भेलाह। पाटनक सांस्कृतिक इतिहासक प्रसङ्गमे प्रफुल्ल कुमार 'मौन'क कथन छैन्हि जे ई कृष्ण मन्दिरक निर्माता, कोट्याहुति यज्ञ कयनिहार कृष्ण भक्ति विषयक गीतक रचनाकार, कार्तिक नाच परस्परक प्रवर्त्तिक, वशिष्ठ तुल्य मैथिल पुरोहित विश्वनाथ उपाध्याय, रामभद्र आदि कवि नाटककारक पृष्ठपोषक, उदार धर्मप्राण आदिक रूपमे अमर भऽ गेल छथि। हिनका राज्यकालमे हरिश्चन्द्रनृत्यम् (१६५१) एवं गोपीचन्द्र नाटकक रचना भेल।

१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. १३०-१३३
२. प्रफुल्ल कुमार "मौन", नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, प्र.सं., पृ. ७६

हरिश्चन्द्रनृत्यम् -

एकर रचना ने० सं० ७७१ सन् १९५१ ई. मे रामभद्र शर्माद्वारा भेल (इति हरिश्चन्द्रनृत्य समाप्तः सं० ७७१ पाल्गुण शुक्ल द्वितीयायां लिखितं श्रीरामभद्रशर्मणा)^१ । एहि नाटकमे संस्कृतक बड़ किंचित प्रयोग भेल अछि । सम्पूर्ण नाटक मैथिली गद्य-पद्यमय अछि ।

एकर कथावस्तुमे प्रसिद्ध पौराणिक हरिश्चन्द्रक कथा — हरिश्चन्द्रक सत्यव्रत पालन करवाक अभिमान, विश्वामित्रद्वारा परीक्षा, स्वप्नमे सम्पूर्ण राज्य दान, दक्षिणाक लेल अपन स्त्री ओ स्वयं अपनहुँकेँ बेचब आदि वर्णित अछि । एहिमे राग ओ वाद्यसँ समन्वित गीतक प्रभाव प्रमुख अछि ।

अगस्टस कानरेडी सन् १८९१ ई. मे एहि नाटकक सम्पादन कए प्रकाशित करौलनि । एहि नाटकक भाषाक सम्बन्धमे हुनक प्रतित्रिया छैन्हि जे — The language in which it was written is in its main texture a mixture of Bangali and Maithili with Sanskrit verses interspersed here and there. Apart from dialogues in prose this play about the life of King Harischandra has melodious songs and lyrics.^२

एहि नाटकक भाषा केहन अछि से श्मशानमे राजा रानीक निम्न लिखित कथोपकथनक उद्धरण स्पष्ट कए देत —

“ राजा — अहे चोरिणी सुन कतय हरिचन्द्र के तुअ जाति । कहि गेल अछल हमर किसान ।

रानी — राय हरिश्चन्द्र बेचिय हमं गेर । दुनसन्ताप दुख दय गेर एहि बेतवा के कय आस अहे महा पुरुष हमी राजा हरिश्चन्द्रेर स्त्री मएनावती अछि । हमार अभ्यागते परेर दासिनी हैरो अग्निसंस्कार करिवार पुत्र निया अमी अग्नि अग्निते जायवो ।

(रानी जाव)

राजा — हरि ३ दैव हमाके बतेक बिपती दिये हम जे चण्डारेर दास हैरो । एहि हमार पुत्र रोहिदास अछि । मनावती अमाके ना चिन्हिहो ।”^३

१. सूर्य चित्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २३६

२. इन्दिरा झा, आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित्र सृष्टि, १९८७, पृ. - ६०

३. दुर्गानाथ झा ‘श्रीष’, मैथिली साहित्यक इतिहास, १९८३, पृ. २१९-२२०

पद्यक भाषा केहन अछि देखू गीतक एक अंश -

बन्दे देवी कालिकामाय । चञ्चलजोगिनी मङ्गल गाय ।

आदिकुमारिकरे सुरधारि । महिषखण्डन सुरवरनारि ॥^१

एहि नाटकमे नाटकीय गुण पूर्ण अछि । अन्तमे सिद्धिनरसिंहके आशीर्वाद दैत समाप्त होइत अछि ।

गोपीचन्द्र नाटक^२:-

राजा गोपीचन्द्रक प्रसिद्ध कथापर आधारित एहि नाटकक भाषा बङ्गला भाषात्रान्त अछि ।

श्रीनिवास मल्लक शासन कालमे रचित नाटक

ने० सं० ७७७ आ० १६५७ ई.मे सिद्धिनरसिंह सन्यास लए गङ्गासेवन करबाक लेल प्रस्थान कएलाक बाद हुनक पुत्र श्रीनिवास मल्ल पाटनक सिंहासनपर बैसलाह^३ । हिनक पिताद्वारा चलाओल गेल कार्तिक नाचक अवधि १५ दिनसँ बढा कऽ ई २५ दिन बनौलन्हि । ई बहुत धार्मिक प्रकृतिक लोक छलाह । ई पाटनमे कतेको मन्दिरक निर्माण तथा जिर्णोद्धार करौलनि । हिनकर राज्यकालमे रचित नाटक एहि प्रकार अछि ।

ललितकुवलयाम्ब नाटक :-

एहि नाटकक रचना ने० सं० ७८५ सन् १६६५ ई. मे रामभद्र शर्मा कयलनि ।

एहि नाटकमे मुदितकुवलयाम्बक भाषा परिवर्तन मात्र कएल गेल अछि । उदाहरणक लेल दुनू नाटकक एके ठामक उक्ति देखू -

मुदितकुवलयाम्बमे --

“हे नाथ । हम सन दुःखी पृथ्वी दोसर केउ नहि । पहिर हि बापक गृह सनो राक्षस हरिलए आएल । पुनु विवाहोत्तर ताल केतु पीडा देल ।”

ललितकुवलयाम्बमे --

“हे प्राणनाथ । अमार समान दुःखी पृथ्वी विषे दोसर ना हैवे । पहिर हि बापमायिका घर सनो राक्षस हरिया लाखिरो । पुनु विवाहोत्तर तालकेतु पीडा दिरो ।”

-
१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २३६
 २. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या - ३६२६
 ३. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - १८३

तारकासुरवध नाटकः—

प्रसिद्ध पौराणिक कथापर आधारित एहि नाटकक अंतमे लिखल अछि—
“महाराज श्रीसिद्धिनरसिंहेर पुत्र श्रीनिवास मल्लके शुभाशीर्वाद
करिया परम सुख कैलास जाएव चलो ।”¹

योगनरेन्द्र मल्लक शासनकालमे रचित नाटक

ने. सं. ८०५ आ. १६८५ ई. मे श्रीनिवास मल्ल अपन पिताक
अनुसरण करैत सन्यास ग्रहण कयलनि । एहि घटना पश्चात् हुनक पुत्र योगनरेन्द्र
मल्ल सिंहासनपर बैसलाह । ई अपन मुद्रा (मोहर) पर “सङ्गीतार्णवपारग”
उपाधि अङ्कित करौलन्हि जाहिसँ हिनका सङ्गीत प्रति अधिक रुचि होयवाक
अनुमान लगैत अछि । हिनका समयक एकटा नाटक महाभारत भेटैत अछि ।

महाभारत नाटकः—

सात अङ्कक ई पौराणिक नाटक अछि । पाण्डुलिपिक अंतमे “महा
महा वैद्य हरि गोविन्द वैद्य । संवत् ८०७ कार्तिक” उल्लेख अछि । एहिसँ ई
ज्ञात होइत अछि जे एकर रचना १६८७ ई. मे भेल^३ ।

एहि नाटकमे कथोपकथनक अभाव अछि । गीतमे मात्र नाटकक
विकास होइत अछि । मञ्च निर्देश नेवारी भाषामे अछि ।

योगनरेन्द्रमल्लक नामे एहि नाटकक रचना कवि हरिवंशद्वारा भेल
अछि जे राजवर्णनाक गीतसँ ज्ञात होइत अछि —

सरदक शशधर सम जस भासे,
अनुखन कर हरि भगत विलासे ॥

भन हरिवंश अपने गेयाने ।

एहने भूपति वर कतहु न आने ॥^४

एहि नाटकमे रहल सौंदर्य वर्णनक एक दृष्टान्त—

सरद सुधाकल सम मुख पलकासे,
लोल लोचन जनि खंजन विकासे ॥

-
1. डा. दुर्गानाथ झा ‘श्रीप’, मैथिली साहित्यक इतिहास, सं० १९८३,
पृ०— २२०
 2. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ०— १८६
 3. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अग्रे विकास, प्र. सं. पृ०— २६१
 4. उएह, पृष्ठ— २६०

कुच युग सिलिपल मधुरिम वांनी ।

अनुपम रूप जनि सलग सयानी ॥१

विष्णुसिंह मल्लक शासनकालमे रचित नाटक

ने. सं. ८४३ आ. १७२३ ई. मे ई पाटनक राजा भेलाह । ई योग-नरेन्द्रमल्लक दौहित्र छलाह । हिनकाद्वारा पाटनक तलेजु मन्दिरमे ने. सं. माघ ८५७ अर्थात् १७३७ ई. मे राखल गेल घंटा बहुत प्रसिद्ध अछि । हिनका शासनकालमे पाटनमे लिखल गेल एकटा नाटकक सूचना भेटैत अछि ।

उपाहरण वा कृष्णचरित्र नाटक^२:-

एहि नाटकक रचना विष्णुसिंह मल्लक नामसँ भेल अछि । एहू नाटकक रचना शैली उएह अछि जे अन्य उपाहरण नाटकसभक अछि ।

बनेपामे रचित नाटक

मल्ल वंशक प्रसिद्ध राजा यक्ष मल्लक मृत्यु पश्चात् हुनक पुत्र रण मल्लद्वारा एहि राज्यवंशक स्थापना कएल गेल । रणमल्लक जीवनकालहिमे हुनक एक मात्र पुत्र विजय मल्लक आकस्मिक निधन भ गेलाक कारणे एहि राज्यकेँ भक्तपुरमे मिला लेल गेल । ई २१ वर्ष धरि शासन कयलनि ।

जयरणमल्लक शासनकालमे शुभराजद्वारा रचित पाण्डव विजय^३ आ रूपमञ्जरी-परिणय नाटक^४ भेटैत अछि ।

पाण्डव विजय नाटक:-

महाभारत अन्तर्गत सभापर्वक विषयक आधारपर एकर रचना भेलाक कारणे एकरा “सभापर्व नाटक” सेहो कहल जाइत अछि । एहि नाटकमे मिथिलापञ्चशक प्रयोग भेल अछि ।

“तरुणीजनस्य सोहगं दिज्जमि तुह्माण संमन्ता । हेरं-वणाह तुम्ह पहरदु भवकलुसं णिमेसेण ॥ विना ॥ देखिसौभाग्यदायिनी युक्त भुक्तं ते ॥ वश्य ॥ नाह एसा वस्सदायिणी विज्ञापइस्से ॥”^५ ।

1. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास, प्र० सं०, पृष्ठ- २६१

2. जयदान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.- १६०

3. उएह ।

4. दुर्गागाथ झा ‘श्रीष’, मैथिली साहित्यक इतिहास, सं.- १६८३, पृ.- २२०

5. उएह ।

रूपमञ्जरी परिणयः—

इहो शुभराजक कृति अस्ति । एहि मध्य सूत्रधारक संस्कृतमे एवं नटीक प्राकृत-अपभ्रंशमे कथोपकथन अस्ति—

“नटी— अज्ज उत्त इअम्हि आअदा कस्सि णिओय यं अणुचित्थसि ।

सूत्रधार— प्रिय गुणमति किमप्य पूर्वं नाटकमभिनाय सभासदो मानसरंजनाय परित्यक्तं करो भवायः ।”¹

एहि दुनू नाटक मध्य मैथिलीक प्रयोगक प्रसङ्ग कोनो सूचना उपलब्ध नहि अस्ति² । ई दुनू कृति अप्रकाशित अस्ति ।

उपर्युक्त नाटकक अतिरिक्त किछु एहनो नाटकसभक नाम भेटैत अस्ति जकर कोनो-कोनो पुस्तकमे उल्लेख भेटैत अस्ति मुदा अन्य कोनो जानकारी प्राप्त नहि होइत अस्ति । जेना—

निष्क नाटक

भाषा संस्कृत नाटक

रामाभिषेक नाटक

रामायण—हनुमन्नाटक

वीरध्वजोपाख्यान

मुद्राराक्षस

सभातरङ्गिणी ।



1. डा० दुर्गानाथ झा ‘श्रीष’, मैथिली साहित्यक इतिहास, सं०— १९८३, पृ.— २२०

2. उएह ।

चतुर्थ अध्याय

मल्लकालीन मैथिली नाटकक रचना-शिल्प

मल्लकालीन मैथिली नाटकक प्रचार नेपालमे सत्रहम् शताब्दीक आरम्भसँ अठारहम् शताब्दीक द्वितीय चरण धरि रहल^१ । मिथिलामे विकसित नाटकसँ ओहि ठामक नाटककारलोकनि प्रेरणा लेने होथिसे नहि, कारण मिथिलामे ताधरि मैथिली नाटकक विकास नहि भेल छल^२ । एकर मुख्य कारण भेल नेपालमे मैथिली भाषाक प्रसार एवं राजा लोकनिक अभिनयप्रियता । नेपालमे ताहि समयमे मैथिली भाषाक प्रचारक कारण थिक जे मिथिलापर जखन मुसलमानक प्रभुत्व भऽ गेल तखन मिथिलाक राजालोकनि अपनाकेँ मुसलमानसँ सुरक्षित रखवाक दृष्टिसँ अपन समीपवर्ती प्रदेश नेपाल दिश उन्मुख भेलाह^३ । इतिहास एहि विषयक साक्षी अछि जे यवनसँ पराजित भऽ महाराज हरिसिंहदेव १३२४ ई.मे नेपालक जङ्गलमे गेलाह^४ । पछाति ओतय अपन राज्यक स्थापना कयलनि । तत्पश्चात् हिनक दू गोटा बालक शक्तिसिंह एवं श्यामसिंहदेव बहुत दिन धरि ओतय शासन कयलनि^५ । हिनक आश्रित अनेक कवि एवं साहित्यकार सेहो यवनक भयसँ तस्त भऽ अपन राजाक संग अनेक पाण्डुलिपि सहित नेपाल आवि गेलाह^६ । एहि सकल सम्पर्कक परिणामस्वरूप मैथिली नेपालमे सर्वाधिक

१. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. - १४६
२. दुर्गनाथ झा 'श्रीष', मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. - २११
३. प्रेमशङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्च, पृ. - २७
४. उएह
५. डी० राइट, हिस्ट्री अफ नेपाल, यूनिभर्सिटी प्रेस लंडन, प्र० सं०, १८७७, पृ. - १८०
६. डी० आर० रेग्मी, एनसिएन्ट एण्ड मेडिएवल नेपाल, काठमाण्डू, १९५२ ई., पृ. - १५१

सम्मोन्य भाषा मानल जाए लागल । भादगाँव (भक्तपुर), पाटन (ललितपुर) आ कान्तिपुर (काठमाण्डू) मे तँ ई आओर दृढतापूर्वक प्रतिष्ठा जमओलक । विद्यापति आओर तत्कालीन अन्यान्य कवि लोकनिक गीतक आकर्षक तथा ओहि समयक मैथिल संगीतज्ञ लोकनिक विलक्षण कला नेपालमे मैथिलीक प्रति अभिरूचि आओर बढाए देलक^१ ।

आलोच्यकालमे नेपालमे साहित्यक सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधा नाटकक क्षेत्रमे बहुत उन्नति भेल । भाषा नाटकक एक नव प्रणाली विकसित भेल जे संस्कृत नाटककेँ मानू निरस्त कए देलक । क्रमिक रूपमे संस्कृतक प्रयोग कम होइत गेल आ अन्ततः नवीन नाटकमे मैथिलीक स्थान प्रमुख भए गेल^२ ।

नेपालक मल्लकालीन मैथिली नाटकक रचना-शिल्प जे क्रमशः संस्कृत नाटकक ढाँचाकेँ अपदस्थ कएलक^३ सामान्यतः एहि प्रकार अछि ।

कथावस्तु :-

नेपाल आदिकालसँ ऋषिमुनिसभक आश्रय स्थल मानल गेल अछि । नेपालक दूटा प्रमुख नदी गण्डकी तथा कोशीक सम्बन्ध गण्डक तथा कोशिक मुनिसँ जुड़ल अछि । वेदव्यास आ वाल्मीकि ऋषि नेपाल आएल छलाह से मानल जाइत अछि^४ । राजर्षि जनक एहि ठामक छलाह आ गौतम बुद्ध सेहो एहि देशक सन्तान छलाह । एतने नहि पशुपतिपुराणमे “ने” मुनि एकटा भालाकेँ एहि ठामक राजा बनौलनि कहल गेल अछि । “ने” मुनिद्वारा पालित भेलाक कारणेँ नेपाल नाम रहल कहल जाइत अछि । अर्थात् धार्मिक आस्था एहि ठाम आदि कालहिसँ अछि ।

नेपालक सूर्यवंशी राजालोकनिकेँ धर्म प्रति अतिशय आस्था छलैन्हि । राजा हरिसिंहदेव यवनसँ पराजित भऽ नेपाल प्रवेश कयने छलाह । नेपालमे आवि जे ओ अपन राज्य स्थापना कयलनि तकरा ओ अपन इष्टदेवी तुलजा भगवतीक आशीर्वाद मानलैन्हि^५ । हुनक वंशज श्यामसिंहदेवकेँ पुत्र नहि भेलैन्हि आ अपन एक मात्र पुत्रीक विवाह जयभद्र मल्लसँ करौलैन्हि तथा अपन

१. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. - १४८

२. उएह, पृ. - १४६

३. उएह ।

४. इतिहास (कक्षा ६-१०), जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र, एघारौँ संस्करण, २०५० वि. सं., पृ. - १

५. डी. राइट. हिस्ट्री अफ नेपाल, पृ. - १७५

राज्यक उत्तराधिकारी सेहो बनौलैन्हि^१ । आब तुलजा भगवती जयभद्र मल्लक
इष्टदेवी भए गेलीह ।

एहि वंशक राजालोकनि देवी देवताक पुजापाठ उपासनामे बड विश्वास
करैत छलाह । एहि वंशक राजालोकनिद्वारा निर्माण कएल गेल अनेको मन्दिर
उपत्यकामे एखनहु विद्यमान अछि । ललितपुरक प्रसिद्ध कुम्भेश्वर मन्दिर आ
भक्तपुरक उन्नत भैरवक मन्दिर जयस्थिति मल्ल निर्माण करौने छलाह ।
कुम्भेश्वर मन्दिरक आगूमे रहल पोखरि उडाहैत काल भेटल नारायण, गणेश,
वासुकी, गौरी आदि देवी देवताक मूर्ति सेहो ई विभिन्न स्थानपर स्थापित
करौलनि । गोरखनाथ तथा गोकर्णेश्वर महादेवक पूजा चलौलैन्हि आ कोटिहोम
सेहो कयलनि^२ । यक्ष मल्ल भक्तपुरक प्रसिद्ध दत्तात्रेयक मन्दिर निर्माण करौलनि,
स्वयं गोसाईं कुण्डक धार्मिक यात्रा कयलनि^३ । विश्व मल्लद्वारा प्रसिद्ध पूजारी
मठक निर्माण आ दत्तात्रेय मन्दिरक जीर्णोद्धार तथा विस्तार कएल गेल^४ ।
पशुपतिमे चार-नारायणक मूर्तिक स्थापना कएल गेल^५ । जगज्ज्योतिर्मल्लक
विषयमे किंवदन्ती अछि जे ओ तुलजा भवानी सङ्ग पासा (जूआ) खेलैत
छलाह । भक्तपुरमे एखनहु प्रसिद्ध रहल विसकेट नामक यात्राक आरम्भ एएह कएने
छलाह^६ । जगतप्रकाश मल्ल भक्तपुरसँ पुरुवमे बहएबला नदीमे घाट बनवाए
अनेक प्रतिमा स्थापित कयलैन्हि । ई एकटा भवानी-शङ्करक प्रतिमा सेहो स्थापित
कयने छलाह^७ । ने० स० ७८२ आ० १६६२ ई. क आसपास एकटा विमलस्नेह
मण्डप बनौलैन्हि^८ । १६६७ ई. मे नारायण चौकमे गरुड सहितक स्तम्भ स्थापित
कयलनि^९ । जितामित्र मल्ल भक्तपुर दरबार लग पशुपतिनाथ ओ नारायणक
मन्दिर निर्माण करौलैन्हि^{१०} । भूपतीन्द्र मल्ल अपन दरबारक समीपमे एकटा

-
१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. ७३
 २. डी. राइट, हिस्ट्री अफ नेपाल, पृ. १८३
 ३. इतिहास (९-१०), जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र, एघारौं संस्करण २०५०
वि. सं., पृ. ३६
 ४. उएह, पृ. ३८
 ५. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. १०३
 ६. उएह, पृ. १०५
 ७. डी. राइट, हिस्ट्री अफ नेपाल, पृ. १६२
 ८. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. १०८
 ९. उएह ।
 १०. डी. राइट, हिस्ट्री अफ नेपाल, पृ. १६३

दुमहला धर्मशाला बनौलैन्हि^१ । भक्तपुरक पंचमहला सिद्धिलक्ष्मी मन्दिर (न्यातपोल) सहित ई अनेक मंदिर बनौलैन्हि^२ । एहिना काठमाण्डू राज्य शाखाक शासक लोकनिमे रत्न मल्ल १५०१ ई. मे तुलजा भवानीक मन्दिर निर्माण कयलनि^३ । अमर मल्ल मना-मैजु, हरिचोकदेवी, पचली भैरव, नवदुर्गा, भद्रकाली कंकेश्वरी आदी देवी देवताक नाच चलौलैन्हि^४ । महेन्द्र मल्ल महेन्द्रेश्वर नामक शिवलिङ्ग स्थापित कयलनि^५ । प्रताप मल्ल दरबारक सम्मुख इन्द्रपुर तथा जगन्नाथक मन्दिर बनौलनि । बालाजीक प्रसिद्ध स्थान इएह बनौलनि जकर पश्चात् नेपालक राजाद्वारा बुढानिलकण्ठक दर्शन नहि करवाक चलन चलल जे अद्यापि विद्यमान अछि^६ । हिनका द्वारा निर्मित अनेको देवी देवताक मन्दिर एखनहु विद्यमान अछि^७ । तहिना ललितपुर शाखाक शासक सिद्धिनरसिंह मल्ल ओहि ठाम तुलजाक मन्दिरक निर्माण कयलनि^८ । ने. सं. फाल्गुन ७५७ अर्थात् १६३७ ई. मे पाटनक प्रसिद्ध कृष्ण मन्दिरक निर्माण करौलैन्हि^९ ।

उपर्युक्त वर्णनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मल्ल शासक लोकनि धर्म प्रति आस्थावान छलाह । देवी देवताक प्रति हुनका सभक मनमे अपार श्रद्धा छलैन्हि ।

साहित्य समाजक दर्पण कहल जाइत अछि । समाजक अवस्था केहन अछि साहित्यमे तकर प्रभाव अवश्य होइत अछि । समाजसँ अलग साहित्यक रचना हुएव असम्भव थिक^{१०} । समाजक प्रवाहसँ अलग साहित्यकेँ मोड़वाक प्रयास निरर्थक टा नहि ओहिसँ साहित्यमे समाजकेँ उजागर करवाक धारा आओर प्रबल भऽ जाइत अछि । ई बात आइए नहि पहिनुहुँ छल आ पाछुओ रहत ।

-
१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. १०६
 २. उएह, पृ. ११०
 ३. उएह, पृ. १२३
 ४. उएह, पृ. १२६
 ५. उएह, पृ. १२८
 ६. उएह, पृ. १५३
 ७. उएह, पृ. १५२
 ८. उएह, पृ. १३३
 ९. उएह, पृ. १४७
 १०. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास, पृ. १३६

नेपालमे धर्मप्रति राजा-प्रजाक ई अगाध आस्थाक परिणामस्वरूप मल्लवंशीय शासक लोकनिक समयमे नेपालमे जे जतेक नाटकक रचना भेल ताहिमे अधिकांश नाटकक कथावस्तु धार्मिक कथापर आधारित रहल । महाभारत, रामायण तथा पुरानसभमे वर्णित धार्मिक कथा एकर प्रमुख श्रोत रहल । एहि अन्तर्गत मुख्यरूपमे कृष्ण, राम एवं शिव विषयक नाटकक रचना भेल जाहिमे कृष्ण विषयक नाटकक बहुलता अछि । उदाहरणस्वरूप कुञ्ज विहारी नाटक, पाण्डव विजय, पारिजातहरण, कालीयमनमथोपाख्यान नाटकम्, कोलासुरवधोपाख्यान, कृष्ण चरित्र नाटकम्, रुक्मिणीहरण, अन्धकासुरवधोपाख्यान नाटकम् एवं कंसवध नाटक आदि उल्लेखनीय अछि जे कृष्ण सम्बन्धी नाटक थिक । रामायणक कथानकक आधारपर रामायण नाटकम् महिरावणवध आदि उल्लेखनीय अछि ताहिना शिव विषयक नाटकमे हरगौरी विवाह, गौरी विवाह, पशुपतिप्रादुर्भावोपाख्यान नाटकक चर्चा कएल जा सकैत अछि ।

देवी देवता वा तीर्थक सम्बन्धमे सेहो कथानवसभ अछि । एहि ठामक नाटक मध्य स्थानीय देवता लोकनिके सेहो विषय वस्तुक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि । जेना-रणजित मल्लक भणितासँ रचित “जलशायिविष्णवादि सृष्ट्युपाख्यान”क रचनाक हेतु नाटककारक लेल अवश्ये बूढानीलकंठ प्रेरणाक श्रोत रहल होयताह । एहिना “गोरक्षोपाख्यान”क प्रेरणाक श्रोत अवश्ये गोरखनाथक मन्दिर वा प्रतिमा रहल हएत, गोपीचन्द्रोपाख्यानम् केर प्रेरणा श्रोत सेहो अवश्ये मीननाथ रहल होएताह आ पशुपतिप्रादुर्भायक रचनाक पृष्ठभूमिमे अवश्ये पशुपतिनाथक अतीव महिमा रहल हएत^१ ।

मल्लकालीन मैथिली नाटकमे मध्ययुगीन प्रख्यात कथापर आधारित नाटक सेहो भेटैत अछि । जेना-भूपतीन्द्र मल्लक विद्याविलापक कथावस्तु पौराणिक वा धार्मिक नहि अछि । ई मध्ययुगीन भारतक एक परम विख्यात कथा थिक । रणजित मल्लक भणितासँ रचित माधवानल-कामकन्दला सेहो एहि तरहक प्रसिद्ध कथापर आधारित अछि । एहि तरहक नाटकक संख्या अधिक नहि अछि ।

मल्लकालीन मैथिली नाटकक कथावस्तुक सम्बन्धमे एकटा बात उल्लेखनीय अछि जे एकहिटा कथापर कतेको नाटककार अपन कलम चलौलनि । जेना - उवाहरण, रुक्मिणीहरण, हर-गौरी विवाह आदि कथापर बेरबेर नाटक लिखल गेल । एकरा कथाक लोकप्रियता कहल जा सकैत अछि ।

१. प्रेम शङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्च, पृ० ३२

२. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास, पृ० १३७-१३८

एहि तरहें मलकालीन मैथिली नाटकक कथावस्तुक सम्बन्धमे दृढतापूर्वक कहल जा सकैत अछि जे चाहे ओ महाभारतक कथा हुआए, रामायणक कथा हुआए, कोनो पुरानक कथा हुआए वा कोनो देवी देवताक कथा हुआए अछि धरि धार्मिके । हँ प्रसिद्ध कथापर आधारित नाटक अछिए नहि, से तँ नहि मुदा बहुत कम अछि ।

रस:-

काव्यकेँ पढला-सुनलासँ अथवा नाटक देखलासँ हृदयमे अवस्थित रति, शोक, उत्साह आदि भावमेसँ कोनो एकटाक निष्पत्ति भऽ प्रकाशित भेलासँ जाहि अलौकिक आनन्दक प्राप्ति होइत अछि, तकरे काव्यमे रस कहल जाइत अछि^१ । रस आ एकर संख्याक निरूपण सबसँ पहिने भरतमुनिक नाट्य शास्त्रमे भेल । भरतमुनि रसक संख्या आठ बतौलनि— शृङ्गार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, विभत्स, अद्भुत । आचार्य जगन्नाथ भरतमुनिक प्रमाण दैत एकटा आओर रसक नाम जोड़ि देलनि से थिक— शान्त । आचार्य मम्मट एहि नवो रसक मान्यता देलनि अछि । आचार्य विश्वनाथ दशम् रसक वात्सल्य नाम देलनि । गौडीय सम्प्रदायक प्रतिष्ठित आचार्य रूप गोस्वामी एगारहम् रस “मधुर रस” वा “भक्ति रस” मानलैन्हि अछि । एहि तरहें रसक संख्या एगारह पहुँच गेल अछि मुदा सामान्यतः नौ रस मानल जाइत अछि ।^२

उपर्युक्त रसक भेदसभमेसँ मलकालीन मैथिली नाटकमे कोन रसक कतेक आ केहन प्रयोग भेल अछि सएह विश्लेषण करब एहि ठाम लक्ष्य अछि । नाटक एकटा कथापर आधारित होइत अछि । नाटकमे नायककेँ फलागम होयब आवश्यक मानल गेल अछि । नाटक मानव प्रकृतिक दर्पण थिक । नाटकीय कथावस्तु मानव जीवनक प्रतिबिम्ब थिक । नाटकमे शाश्वत मूल्यक प्रदर्शनपर अधिक बल देल जाइत अछि । मनुष्यकेँ सामान्य जीवनमे फल प्राप्ति आसानीसँ नहि होइत छैक । ओकरा विभिन्न सङ्घर्षक सामना करऽ पडैत छैक । प्रतिरोधक पाषाणकेँ तोड़ैत फोड़ैत आशा ओ उल्लासक संग लक्ष्य प्राप्तिक हेतु अग्रसर होमए पडैत छैक आ जाधरि अन्तिम लक्ष्य (फल) केँ नहि पवैत अछि ताधरि प्रयत्नशील रहैत अछि । प्राप्त्याशाक वले ओ फलकेँ

1. डा० मनहर गोपाल भार्गव आ श्री राकेश, रस-दोष-छंद-अलङ्कार-निरूपण, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, सप्तम् संस्करण, पृ.— ८

2. उएह, पृ.— ४१

प्राप्त कयलाक वादे विश्राम लैत अछि । जेना— जीवन सङ्घर्षमे विभिन्न मोड अबैत छैक तहिना नाटकमे सेहो अबैत छैक । नाटकमें ई अवस्था पाँच प्रकारक मानल गेल अछि— १) आरम्भ, २) यत्न, ३) प्राप्त्याशा, ४) नियताप्ति तथा ५) फलागम । 'आरम्भ' नाटकीय कथावस्तुक ओ प्रथम अवस्था थिक जाहिमे नायककेँ उष्कृष्ट फल प्राप्तिक हेतु उत्सुकता होइत छैक । 'प्रयत्न' दोसर अवस्था थिक जतऽ ओ अपन लक्ष्यक प्राप्तिक हेतु शीघ्र प्रयत्नशील होइत अछि । 'प्राप्त्याशा' रूप तेसर अवस्थामे नायककेँ प्रयत्नशील रहितहुँ विघ्नक आशङ्कासँ फल प्राप्ति निश्चित नहि रहैत छैक । ओकर सम्भावना मात्र रहैत छैक । 'नियताप्ति' रूप चारिम अवस्थामे विघ्नक अभाव भऽ गेलासँ फल प्राप्ति सुनिश्चित भऽ जाइत छैक । फलागम रूप पाँचम् अवस्थामे नायक फलकेँ प्राप्त करैत अछि^१ ।

एहि प्रकारक पाँच अवस्थाक यात्रामे कथामे विभिन्न रसक सञ्चार स्वभाविक थिक से मल्लिकालीन नाटकमे सेहो भेल अछि । आव रहल जे कोन रसक प्रयोग कतेक भेल अछि तँ एहि समयक नाटकसभक लक्ष्य जनमतोरञ्जन होयवाक कारणेँ शृङ्गार रसक प्रयोग अधिक भेल अछि । शृङ्गार रसक दू भेद होइत अछि— संयोग शृङ्गार आ वियोग शृङ्गार । एहि नाटकसभमे दुनु शृङ्गार रसक प्रयोग अधिकाधिक मात्रामे भेल अछि । प्रसिद्ध कथापर आधारित विद्या-विलाप आ माधवानल-कामकन्दला, पौराणिक कथापर आधारित कुँजविहारी नाटक, हरगौरी विवाह आदि नाटकमे शृङ्गार रसक अतिरेकसँ वचवाक लेल तथा मनःस्थिति सन्तुलित रखवाक हेतु 'प्रपानक रसवत्' विभिन्न रसक समावेश ओहिमे एना कएल गेल अछि जे दर्शकक अभिरुचिकेँ वनौने रहए^२ । असुर-सभक भगवानक विभिन्न अवतारद्वारा कएल गेल वधक आख्यानपर आधारित नाटकसभमे वीर रसक ओहिना प्रयोग भेल अछि तँ देवताकेँ प्रसन्न करवाक प्रायः उद्देश्य कहल गेल एहि नाटकसभमे भक्ति रस ओहने प्रबल अछि । अन्य रसक प्रयोग सामान्य अछि ।

पात्रः—

कथावस्तुकेँ प्रेक्षक धरि पहुँचावयवला माध्यम पात्र थिक । पात्रक बिना नाटकक कल्पना धरि नहि कएल जा सकैत अछि । पात्रक संख्या कम

१. डा० जयमन्त मिश्र, मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव, पृ.— २७-२८

२. प्रेम शङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्च, पृ०— ३३

वा अधिक भए सकैत अछि । सामान्यतः पातक चुनाव विषयवस्तु अनुसार कएल जाइत अछि ।

भारतीय परम्परामे नाटकादिक नायककेँ विनीत, मधुरभाषी, त्यागी, दक्ष, प्रियेवद, लोकप्रिय, पवित्र, दाग्मी, प्रसिद्ध वंशमे उत्पन्न कुलीन, स्थिर, युवक, बुद्धि-उत्साह-स्मृति-प्राज्ञ-कला तथा मानसँ युक्त शूर, दृढ, तेजस्वी, शास्त्रज्ञ तथा धार्मिक होयबाक चाही । प्रकृतिक आधारपर नायकक चारि भेद कयल गेल अछि—

१) धीरललित—

जे राज्यादिक चिन्तासँ मुक्त, सङ्गीत, नृत्य, चित्र आदि कलाक प्रेमी, श्रृङ्गार-प्रिय तथा अनेक नायिकासक्त होइत छथि ।

२) धीर प्रशान्त—

जे स्वभावतः शान्त, जातिसँ ब्राह्मण वा वैश्य तथा विनयादि सामान्य गुणसँ युक्त होइत छथि ।

३) धीरोदात्त—

अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, अविकत्यन (आत्मश्लाघा नहि करऽवला) स्थिर, निरभिमान तथा दृढव्रत होइत छथि ।

४) धीरोद्धत—

जे घमण्डी, ईर्ष्यापूर्ण, छलकपटमे निष्णात, अहङ्कारी, चञ्चल, क्रोधी, आत्मश्लाघी होइत छथि^१ ।

नाटकक प्रेम-व्यापार वा तत्सम्बन्धी व्यवहारक आधारपर एक दोसर प्रकारक वर्गीकरण होइत अछि—

१. दक्षिण— एवसँ अधिक नायिकाक संग समान प्रेम-व्यापार करऽवला नायक ।

२. शठ— ज्येष्ठा नायिकासँ छल वऽ अन्य नायिकासँ गुप्त प्रेम करऽवला नायक ।

घृष्ट— ज्येष्ठाक उपेक्षा कऽ अन्य नायिकाक सङ्ग प्रेम-व्यापार करऽवला नायक ।

अनुकूल— एकपत्नी-व्रत नायक^२ ।

१. डा० देवकान्त झा, मैथिली दशरूपक, मैथिली अकादमी पटना, प्र० स०, पृ.— ८४-९४

२. डा० जयमन्त मिश्र, मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव, पृ.— ३३

नाटकमे जहिना नायकक महत्व अछि तहिना नायिकाक सेहो महत्व अछि । नायिकाक गुण, कार्य, भेद प्रभेद आदिक निरूपणार्थ संस्कृत साहित्यमे स्वतंत्र ग्रन्थ लिखल गेल अछि । नायक नायिकाक विवाहादि सम्बन्धपर आधारित वर्गीकरण अनुसार नायिकाक तीन भेद होइत अछि -

१. स्वकीया - नायकक परिणीता पत्नी ।
२. परकीया - अनूढा - कन्या वा दोसरक दिवाहिता स्त्री नायकक हेतु 'परकीया' कहबैछ ।
३. सानान्या - साधारण स्त्री, वेश्या, गणिका आदि^१ ।

नायिकाक अवस्थाक अनुसार तथा नायकक आचरणक प्रतिक्रियाक आधारपर सेहो नायिकाक तीन भेद होइत अछि -

१. मुग्धा २. मध्या ३. प्रीढ़ा वा प्रगल्भा^२ ।

नायिकाक प्रेमगत दशक अनुसार^३ आठ भेद होइत अछि -

१. स्वाधीन पतिका - जकर पति सदा अनुकूल रहैत अछि ।
२. वासकसज्जा - प्रियतमक प्रतीक्षामे सजि धजिक बैसल ।
३. विरहोत्कण्ठिता - प्रियतमक विरहमे अशान्त समुत्कण्ठित ।
४. खण्डिता - जकर पति अन्य नायिकाक संग प्रेमासक्त रहैत अछि ।
५. कलहान्तरिता - पतिसँ वियुक्त तथा पतिक अनादर कयनिहारि ।
६. विप्रलब्धा - प्रेमीसँ ठकलि गेल ।
७. प्रेषितपतिका - जकर पति विदेशमे रहैत अछि ।
८. अभिसारिका - नायकसँ मिलवाक लेल स्वयं जाइत अछि वा सखी, दूती आदि नायककेँ अनबाक हेतु पठवैत अछि^३ ।

मल्लकालीन मैथिली नाटकक कथावस्तु अधिकांश धार्मिक अछि । प्रसिद्ध लोकप्रिय धार्मिक कथा एहि नाटकसभक विषयवस्तु बनल अछि । स्वभावतः रामायण, महाभारत, पुराण आदि जतऽसँ कथा लेल गेल अछि ओहि कथामे वर्णित पात्रक प्रयोग नाटकमे भेल अछि। एही अनुरूप मल्लकालीन मैथिली नाटक सभमे अधिकांश मुख्य पात्र दैवी वा अवतारी पुरुष होयवाक कारणेँ नाट्य शास्त्रमे वर्णित नायकक गुण एहि ठामक नायकमे स्वभाविक रूपेँ

१. डा० जयमन्त मिश्र, मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव, पृ. ३४

२. उएह ।

३. उएह, पृ. ३४-३५

विद्यमान अछि। ई नायकसभ प्रायः आदर्श चरित्रक छथि। नायिकाक प्रयोग सेहो कथासभमे भेल दर्शन अनुसार भेलाक कारणे कथा अनुसारक विभिन्न प्रकारक नायिकाक प्रयोग भेल अछि। अन्य पात्र सभक चयन विषय अनुसार भेल अछि। पात्र सभक नामाकरण सेहो पौराणिक अछि। मुदा गौण पात्रसभ जकर नामाकरण मूल कथामे नहि भेल अछि आवश्यकतानुसार तकर काल्पनिक नामाकरण सेहो भेल अछि। एहि नाटकसभमे संस्कृत नाटकक परम्परा अनुसार सूत्रधार, नटी, शची, विदूषक आदिक प्रयोग सेहो भेल अछि।

प्रमुख घटनापर आधारित नाटक सभमे नायक अवतारी पुरुषक बदला सामान्य पुरुष छथि। विद्याविलापक नायक 'सुन्दर' काञ्ची देशक राजकुमार छथि आ नायिका उज्जैनक राजा वीरसिंहक पुत्री राजकुमारी विद्यावती^१। माधवानल—कामकन्दलामे नायक माधवानल पुष्पावतीक राजा गोविन्द चन्द्रक दरबारमे रहएवला एक युवक ब्राम्हण छथि आ नायिका कामकन्दला वेश्या^२। सहायक पात्र सभक नामाकरण कथानुसार आ गौण पात्र सभक नामाकरण आवश्यकतानुसार काल्पनिक अछि।

निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे एहि समयक नाटक सभक पात्रमे पौराणिक देवी वा अवतारी पुरुषक बाहुल्य अछि। राजकुलक पुरुष आ सामान्य जनता वड कम मुख्य पात्रक रूपमे आएल अछि। नायिकाक सम्बन्धमे सेहो इएह बात अछि। सहायक पात्र कथा अनुरूप आवश्यकतानुसार प्रयोग गेल अछि।

पात्रक नामाकरण सेहो कथानकपर आधारित अछि। पौराणिक नाटकक मुख्य आ सहायक पात्र सभक नामाकरण पौराणिके अछि। धार्मिक आख्यानपर आधारित नाटकमे सेहो मुख्य आ सहायक पात्रक नामाकरण ओहि आख्यानक आधारपर भेल अछि, अर्थात् कथा जाहि ठामसँ लेल गेल नामाकरण सेहो ओही अनुरूप कएल गेल तखन किछु गौण पात्रक नामाकरण काल्पनिक बुझाईत अछि।

एहि कालमे रचित नाटक सभमे पात्र संख्या सिमित नहि छल^३। कथानक अनुसार पात्र संख्या कम वेशी होइत छल। सम्पूर्ण नाटकमे एतेक पात्र रहए से कोनो बन्देज नहि छल। किछु नाटकक पात्र संख्या कम अवश्य छल मुदा अधिकतर नाटकमे पात्रक संख्या बहुत बहुत छल। उपवनमे आनन्दोत्सव

-
1. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ० १५५
 2. उएह, पृ. १५६-१५७
 3. दुर्गानाथ झा 'श्रीष', मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. २१४

तथा युद्ध प्रकरणमे अनेक पात्र नाटकमे भाग लैत छल^१ ।

एहि कालक नाटकमे पुरुष पात्र अधिक आ स्त्री पात्र बहुत कम रहैत छल । नायिकाक सहचरी किछु स्त्री पात्रक अलावा नाटकमे अन्य स्त्री पात्रक भूमिका नहि जकाँ छल ।

अभिनेयता :-

मल्लकालीन मैथिली नाटक अभिनेय होइत छल । तकर मुख्य कारण रङ्गमञ्चक समृद्ध परम्परा छल । समवालीन समाजमे नाटकक अभिनयक एक सुनिश्चित परम्परा छल जकरा समय समयपर राज्यसँ संपोषण भेटैत छलैक । ओहि समयमे सक्रिय रहल एहि प्रकारक चारिटा केन्द्र छल जतए निश्चित रूपेँ नाटकक अभिनय होइत छल — ओइनवारक मिथिला, कर्णाटक सिमरौनगढ, मल्लक उपत्यका एवं सेनक मकवानपुर ।^२

एहि प्रकारक रङ्गमञ्च उपलब्ध भेलाक कारण नाटक रङ्गमञ्चक लेल लिखल जाइत छल, साहित्यक लेल नहि । दोसर बात जे नाटकक रङ्गमञ्चकेँ राजाश्रय प्राप्त छलैक । राजालोकनि अपने आ अपन आश्रित विद्वानलोकनिसँ नाटकक रचना करवैत छलाह तथा अभिनय करवैत छलाह । स्वभाविक अछि जे ओहि सँ पूर्व संस्कृत नाटकक रङ्गमञ्च समाप्त भेलाक कारणेँ जे संस्कृत नाटक साहित्यक लेल लिखल जाइत छल आ यदि कतहु ओहि नाटककेँ मञ्चन करवाक होइत छलैक तँ कोनो विद्वानद्वारा किछु काटि छाँटि कऽ मञ्चन योग्य बनाओल जाइत छल, से परम्परा नहि रहल । एहि समयक नाटक तँ मञ्चनक लेल लिखल जाइत छल । तेँ एहि नाटकसभमे अभिनेताक पूरा ख्याल कयल गेल अछि ।

कथोपकथन :-

कथोपकथन नाटकक लेल आवश्यक तत्व थिक । नाटक दृश्यकान्वय थिक आ दर्शक नाटककेँ देखैत अछि । नाटकमे पात्र कोनो घटनाक अनुकरण करैत अछि । ओहि घटनामे पात्र एसगर नहि होइत अछि । दू वा दू सँ अधिक व्यक्तिक बीच घटल घटनामे वार्तालाप अवश्य होइत अछि । नाटकमे जखन तकर अनुकरण कएल जाइत अछि तँ वार्तालाप हेबे करत । एहि वार्तालापक माध्यमसँ घटनाक सूचना दर्शक धरि पहुँचाओल जाइत अछि आ चरित्रक विकास होइत अछि^३ ।

-
१. दुर्गानाथ झा 'श्रीष', मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. २१४
 २. प्रेमशङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्च, पृ. ३२
 ३. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव आभोर विकास, पृ. १४३

मल्लकालीन मैथिली नाटकमे कथोपकथन केहन छल तकर विश्लेषणक लेल गद्य पद्यक मात्रा, भाषाक स्तर आ एक पात्र एक बेरमे कतेक बजैत अछि ताहि पर विचार करब आवश्यक अछि ।

नाटकमे प्रयुक्त गद्य पद्यक मात्राक हिसाबसँ नेपालक नाटककेँ तीन वर्गमे राखल जा सकैत अछि ।

१. एहन नाटक जाहिमे गद्य पद्य सन्तुलित अछि । जेना — उपाहरण, इन्द्रविजय, माधवानल, प्रभावतीहरण, नलीय नाटक आदि ।
२. एहन नाटक जे सम्पूर्ण पद्यमय अछि । जेना — कुँजविहार नाटक, मुदितकुवलयाम्भ नाटक आदि ।
३. एहन नाटक जाहिमे नृत्य गीतक बाहुल्य अछि । जेना — मदालसाहरण नाटक ।

भाषाक स्तरक हिसाबसँ विचार कएलासँ एहि नाटकसभक भाषा सामान्य स्तरक अछि । मुहावरा, अलङ्कार वा उक्ति वैचित्र्यक प्रवाह एहि नाटक सभमे नहि अछि । कथोपकथन चरित्र विकासक माध्यम थिक मुदा चरित्र चित्रण एहि नाटकसभक उद्देश्य नहि भेलाक कारणे^२ एहि ठामक नाटककार लोकनि कथोपकथनक वैशिष्ट्य निखारबाक प्रयास नहि कयने छथि । नाटकक कथोपकथन दर्शककेँ प्रभावित करवाक योग्य होयवाक चाही^३ मुदा ताहि दिस ध्यान नहि देल गेल अछि । कथोपकथनकेँ कथाक शृङ्खला मिलएवाक सूत्रक रूपमे लेल गेल अछि । मुदा ई कथोपकथन लक्षणा व्यञ्जनासँ परिपूर्ण नहि भेलाक बावजूदो एकर सरल सुबोध आ सहज प्रवाह दर्शककेँ फूट आनन्द प्रदान करैत अछि । द्रष्टव्य थिक नलीय नाटकमे महाराज नलद्वारा स्वर्ण राजहंस पकड़लाक बाद महाराज नल आओर हंस बीचक कथोपकथन —

हंस — हे महाराज हमरा शरीरक सुवर्ण कतेक कोष वृद्धि होयत । हम स्वभाव पक्षी थिक । हमरा थाम कृपा करए बुझिए ।

नल — हे राजहंस सुवर्णक लाभे हमे नहि धयल छिअह परन्तु त्वहर आश्चर्य रूप देखि कहू धएला हे । जबे त्वहरा एहन उपस्थित अछ तबे अपन अभिष्ट स्थान जाह ।

१. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास, पृ. १२६

२. उएह, पृ. १४३

३. उएह ।

हंस - धन्य राजा नल जन्हि, हमर प्राण रक्षा कएल अछि । एहि उपकारक सदृश जने उपकार करिब तबे समुचित होअब ते अवश्य संभाखन करब गए । हे महाराज इहाँक दया देखि हमरा बड़ सन्तोष भेल अछि ते इहाँ काँ जे बड़ अमिष्ठ अछि से आशा करू । हमे सम्पन्न कए देव ।

नल - हमे कहब सुनू ।

कथोपकथनमे एकटा पात एक बेरमे कतेक बजैत अछि एहि दृष्टिसँ विचार कयलासँ एहि समयक नाटकमे प्रायः कथोपकथनक गद्य छोट छोट अछि। द्रष्टव्य थिक हरगौरी विवाह नाटकक गद्य कथोपकथनक एक अंश -

हिमा , हे मैना, विवाह लग्न निकट आएल ईश्वर नहि अएलाह ॥

मैना , बहाबे बेहेने बर जोहल ॥

मैना , हे दायिलोके गौरीक पसाहनि करू ॥

विधि , मैने ओहे करैछी^१ ॥

एही नाटकक एक आओर अंश -

हिमा , लग्न निकट आएल विलम्ब जनु करिअ ॥

ऋषि , हे गिरिराज , विलम्बक अवसर नही ॥

हिमा , हे ऋषीश्वर सबे सामग्री उत्पन्निए अछि ॥

। ततः कडकण बंधनं ॥

ऋषि , हे ईश्वर पहिले पाद प्रक्षालन करू ॥

महा , अवश्य ॥^२

सभ ठाम एहि प्रकारक छोट छोट वाक्य अछि से नहि। आवश्यकतानुसार वाक्य रचना भेल अछि मुदा बहुत पैघ पैघ पेज भरएवला वाक्य वा वक्तव्य नहि सन भेटैत अछि । पैघ कथोपकथनक एक द्रष्टव्य -

मैना - हे ऋषीश्वर, एहनि कहिनी नेहाए बाजल छी, ओ मसानवास भङ्ग आंस, वृषयान, विषप्रान, हाडमाल, बाघछाल, भूतसङ्ग प्रेत रङ्ग, कर कपाल व्या हास, जटाकू(जू)ट विकट रूप, धूलि धूसर नाम मात्र ईश्वर, एहना के कन्या के देत, कनोने साजेबा (जे?) , ओ, विवाह करए अओताह, किछु सुनु ॥
॥ मेनेक्ति गीतं ॥ पहडिया ॥ टुटापरि ॥

१. रामदेव झा (सं), हरगौरी विवाह नाटक, पृ. ४४

२. उएह, पृ. ४४-४५

कैसे आओत विआहक भाज् नागट उमत ततहि न लाज ॥

गजक चरम बाधक छाल् ओढिए धरिए कर कपाल ॥

भसम धवल सगर देह् गिरिसुता कैसे करति नेह ॥

नृप जगजोति एहेन भान् शिव छाडि तिनि लोक न आन ॥

(गीतार्थ श्रावयति)¹

गद्य पद्य युक्त नाटक सभमे रहल कथोपकथनक विवरण पश्चात् एक वात आओर उल्लेखनीय अछि जे गीतिनाट्य वा नृत्य गीतक बाहुल्य रहल नाटकसभमे सेहो कथावस्तु आगू बढ़यबाक हेतु गद्यालापक प्रयोग भेटैत अछि । उदाहरणार्थ—जगज्ज्योतिर्मल्लक नृत्य नाट्य षोडसगीतम्क एक अंश प्रस्तुत अछि जाहिमे गीत ओ श्लोक गद्य संवादद्वारा सम्बद्ध कएल गेल अछि ।

गोपी — हे परमेश्वर, अओरो विज्ञप्ति सुनु ॥

गोप्युक्ति, नचारी गीतम् ॥ कोराव ॥ १४ ॥

मुरली कए देल फांस, धुनि सुनि अएलहु पास ॥

अवे जनु परिहर नारी, कुल मोरा जनु देह गारि ॥

चाँद कुमुद नेह दूर, परशहि की नहि पूर ॥

नृप जगजोतिमल्लवाणि, मोर एक शरण भवानि ॥ १४ ॥

गीतार्थ श्रावयति ॥ गोप्युक्ति, श्लोकः ॥

त्रिवर्गमति नेच्छामि किन्तु त्वरपाद-भावनां ।

यथा सम्पद्यते साम तथा त्वं कुरु हे प्रभो ॥

कृष्ण — हे गोपी हमरो बोल एक सुनु ।

कृष्णोक्ति, गण्डल गीतम् ॥ नाट ॥ टुटा एक ॥

बडे भागे पाइअ राही, बलय देखाउल नाही ॥

तोह भनि मोरा के आने, दुई देह एक पराने ॥

जुवति जीव किए लेहे, अधर सुधारस देहे ॥

नृप जगजोति बुझावे, शिव सेविए सुख पावे ॥ १५ ॥

गीतार्थ श्रावयति ॥

अओरो सुनु ॥ १६ ॥

1. रामदेव झा (सं), हरगौरी विवाह नाटक, पृ० ४०

२. उएह, पृ० ७७

निष्कर्षतः मल्लकालीन मैथिली नाटकक कथोपकथनके सरल, सहज, सन्तुलित आ सुन्दर कहल जा सकैत अछि । गीति नाट्य आ नृत्यनाट्यमे सेहो कथोपकथन आएल अछि मुदा ओहि कथोपकथनक उद्देश्य गीत श्रृङ्खलाके आवद्ध करब थिक । दोसर गीतक लेल वातावरण बनाएब थिक ।

आरम्भ :-

नेपालमे मल्लकालीन समयमे जखन मैथिली नाटकक आरम्भ भेल ताहिसँ पूर्व संस्कृत नाटकक रचना आ अभिनय भेल प्रशस्त प्रमाण भेटैत अछि। नेपाल संवत् ४५७ सन् १३३७ ई. मे अरिमल्ल देवक राज्यकालमे मत्स्येन्द्रनाथक यात्रामे उपस्थित भेल पण्डित तथा अन्य नन्यमान्य महानुभावक समक्ष अभिनय करवाक हेतु “महीराघव वध नाटक” लिखल गेल । (श्रेयोस्तु सम्बत् ४५७ श्रावण कृष्ण द्वादश्यां पुष्प नक्षत्रे । परिध योगे ॥ शनैश्चर वासरे ॥ पुस्तकमिदं समाप्तम् इति । परमभट्टारक परमेश्वर परमवैष्णवपरमदैवताधिदेव परममहेश्वर रघुकुलतिलक भूपालपरम्परा परिनिमित मौलिशिखाप्रसूनसंधूपित पदारविन्द श्री पशुपतिदेवतावरलब्ध प्रसादैक महाराजाधिराजसप्रक्रिय राजराजेन्द्र श्री श्रीजयारिमल्लदेवानां विजयराज्ये नेपालमण्डले ॥^१) (भगवतः श्री बुद्धेश्वर प्रतिहतप्रतिसरत् यात्रोत्सव प्रसङ्गेनायातानां प्रमुदित द्विजराजपुत्रादीनां समाजः ॥)^२

नेपाल सम्बत् ४८० आ १३६० ई. मे कवि धर्मगुप्त रामाङ्क नाटिका लिखने छलाह । (सम्बत् ४८० शुक्लैकदशम्यां रवि वासो । तेनैव धर्मगुप्तेन श्रीमता रामदासिना । बालबागीश्वरेण्यं लिखिता रामाङ्कनाटिका ॥)^३ एकर अभिनय पाटनमे भेल छल । तहिना जयस्थिति मल्लक ज्येष्ठ पुत्र धर्ममल्लक व्रतबन्धक समय राघवानन्द नाटक^४ आ हुनके विवाहक अवसरपर भैरवानन्द नाटक^५क अभिनय भेल छल ।

मैथिली नाटकक रचनाकारसभके संस्कृत नाट्य साहित्यक सम्यक् ज्ञान भेलाक कारणेँ मैथिली नाटकक रचना संस्कृत नाटकक आदर्शपर हएब स्वभाविक छल । एही कारण लक्षण—ग्रन्थसभमे नाटकक हेतु कहल गेल उपकरण

१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ० २२५

२. उएह ।

३. उएह ।

४. उएह, पृ० २२६

५. उएह, पृ० २२६-२२७

सभक समावेश एहि नाटकमे भेल अछि । तखन, मैथिली नाटकक रचना पूर्ण रूपेँ संस्कृत नाटकेक रचना अनुरूप अछि से नहि कतहु कतहु एहिमे सामान्य हेर-फेर सेहो भेल अछि ।

मल्लकालमे रचित प्रायः सभ नाटकक आरम्भमे सर्वप्रथम महादेवक स्मरण (आह्वान) कयल गेल अछि। एहि आह्वान मंत्रक रूपमे “श्रीनृत्यनाथाय नमः”, “ॐ नमः श्री नृत्यनाथाभ्याम्”, “ॐ नमः श्री नटेश्वराय” प्रयोग भेल अछि पशुपतिनाथक प्रसिद्ध तीर्थस्थल रहल काठमाण्डू उपत्यकाक मल्लकालीन राजालोकनि सेहो पशुपतिक भक्त छलाह अतः अपन आराध्य देवक मङ्गल कोनो काजक आरम्भमे करव सर्वथा उचित लगैत अछि । एकर बाद साहित्य दर्पणमे रहल उल्लेख अनुसार आदौ नान्दी श्लोक भेटैत अछि । एहि नान्दी श्लोकमे सर्वत्र महादेवक स्तुति अछि। प्रस्तुत अछि एकटा नान्दी श्लोक मान्धाट्यपाख्यान¹ नाटकसँ —

सानन्दं हिमकुन्द - कैरवसुधा - हिण्डीर - पिंडच्छवि
स्तारानायकशेखरो गिरिसुता वामांगसंशोभितः ।
शूलीभूतिविलेपितस्सुरनुतो गङ्गाधरः कामदो ।
व्याघ्रत्वक्परिवीत सुन्दर कटिनृत्येश्वरः पातुवः ॥

एकर बाद नान्दी गीतक नामसँ मैथिली भाषामे गीत भेटैत अछि । एहुमे प्रायः हर-गौरीक वन्दना कएल गेल अछि । १८ म् शताब्दीक आदि भागमे रचित कंसवध² नाटकक नान्दी गीत —

त्रिभुवन मण्डन देव महेश्वर नाचय नटन अगारे ।
हिमकर मौलि भगत सुखदायक शोभित फणिपति हारे ॥
हिम शशि कैरव चारु कलेवर, अम्बल कुंजल छाल ।
दिनकर चान्द नयन एक पावक गल अछ नर शिर माल ॥
हरि विधि वासव आदि दिनेश्वर पूजितचरणं समाजे ।
वृषवर यान भुजग जुग कुण्डल नाशित दुष्ट मनोजे ॥
रिपुकुल गंजन देव निरंजन आगम निगम वखाने ।
भूपतीन्द्र नृप हरगत मानस अनुखन शिव गुणभाने ॥

1. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या - प्र० १३६२

2. उएह ।

जगतं प्रकाश मल्लक प्रभावतीहरण नाटकक नान्दी गीतमे गुरु आओर
गणेशक वन्दना अछि ।¹

नान्दी गीत पश्चात् सूत्रधारक प्रवेश गीतक विधान अछि । सूत्रधार
प्रवेश गीतक पश्चात् सर्वप्रथम सूत्रधारद्वारा पुष्पांजली श्लोक पढ़ल जाइत
अछि । उषाहरण नाटकमे प्रयुक्त पुष्पांजलि श्लोक -

आनीय चम्पकमुनिद्रुमसंभवानि

पुष्पाणि चारुरचितानि महेशमौलौ

क्षिप्तोमुदा हरिणलोचनयाभवान्या

पुष्पांजलिर्दिशतु मङ्गलमोद नवः ॥²

पुष्पांजलि पश्चात् सूत्रधार प्रस्तावनाक क्रम शुरु करैत अछि ।
प्रस्तावनाक विधान आरम्भिक कालक नाटकमे संस्कृत प्राकृतमे अछि जाहिमे
सूत्रधार संस्कृत आ नटी प्राकृत भाषाक प्रयोग करैत अछि मुदा समयक गतिक
अनुसार प्रस्तावनाक वार्तालापक भाषामे संस्कृत प्राकृतक प्रयोग लोप भए गेल
आ तकर स्थानपर मैथिली भाषाक प्रयोग होमए लागल । प्रस्तावनाक क्रममे
सूत्रधार राजवर्णना करैत अछि जाहि अन्तर्गत राजाक महिमा तथा गुणगानक
वर्णन कएल गेल अछि । द्रष्टव्य थिक जितामित्र मल्लक समयमे लिखल गेल
“महाभारत”³ नाटकक राजवर्णना -

सबहु रस परसुन कहिनि, दुहु मति दय आवे ।

रघुकुलपर कमल उत्पति राज जितामित्र भावे ॥

रविक वंशहि रविहि तुलना, नयहु विनय विधाने ।

सुन्दर मनमथ मलिति कयलहु रुचित जगत वखाने ॥

गंभिर गुण एहि समुद्र सबो बड़, दिशिहि ताम रस भूले ।

जगत जुवति हृदय मोहन, काम अभिमत भूले ॥

जगत चन्दहि वरणि नरपति भगत नगरक राय ।

चिरहि चंडिहि राज भुजावह, दीर्घायु होअ काय ।⁴

-
1. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या-प्र.३६५
 2. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या-प्र.३६५
 3. पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची
संख्या- प्र. १४७८
 4. उएह, पृ. - २

सूत्रधारक राजवर्णना पश्चात् नटीद्वारा देशवर्णनाक प्रावधान अछि ।
एहिमे देशक महिमागान कएल गेल अछि । द्रष्टव्य थिक जगज्ज्योतिर्मल्लक
भणितासँ रचित मुदित-कुवल्याश्च नाटकक देशवर्णना -

सोरह दुवारहि पूरल पगारे ।

चाँद चूँवए चाह चौदिश अटारे ॥

पहु देखल मजे आजे ।

सुरपुर विहि निरमाओल अकाजे ॥

देउल धरम घर कत-कत ठाम ।

दह दिश पथिक कलेअ विसराम ॥

वारहओ मास पुसुम सवे फूले ।

जकरे सौरभ के केओ नहि भूले ॥

निते जोहि रहिथि अनादि भवानी ।

कनक कलश धर न होअ वखानी ॥

सुधात्म कूप पनारी तोए ।

नयन देखिअ जत कहि नहि होए ॥

सुकवि वंशमणि पुरगुण गाऊ ।

नृप जगजोतिमल होथु चिराऊ ॥

देशवर्णना पछाति सूत्रधारद्वारा “हे प्रिये क्षणमात्र विश्राम्यते” कहि
विश्रामक प्रस्ताव करैत अछि आ विश्राम पश्चात् सूत्रधार नाटकक प्रस्तावना
पूरा करैत अछि । जितामित्र मल्लक समयमे, रचित मदालसाहरण नाटकभे
एहि क्रममे सभावर्णना गीत सेहो देल अछि -

राजा सुकवि सभा ललित प्रभा ।

धीर निकर मनहारिनि अति ॥

प्रस्तावना पश्चात् सूत्र - निस्सार गीत होइत अछि आ मुख्य - कथा
आरम्भ होइत अछि । रङ्गमञ्चपर प्रवेश कयलापर पात्र प्रवेश गीत गवैत अछि
तकर बाद कथानुरूप अभिनय आरम्भ होइत अछि । भूपतीन्द्र मल्लक भणितासँ

1. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची
संख्या - प्र. ४६९

2. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची
संख्या - प्र. १४७८

रचित भाषा नाटक^क आरम्भमे सर्वप्रथम प्रवेश कयनिहार पात्र वज्रबाहुद्वारा प्रस्तुत प्रवेश गीत —

प्रवेश कयल हमे वज्रबाहु नामे ।

नृपवर परम सुगुण अभिरामे ॥

मल्लकालीन मैथिली नाटकक आरम्भ सामान्यतः एहिना भेल अछि मुदा कोनो कोनो ठाम एहिमे सामान्य हेरफेर सेहो अछि ।

अङ्क :-

मल्लकालीन मैथिली नाटक अङ्कमे विभाजित भेल अछि मुदा नाट्यशास्त्रक लक्षण अनुरूप नहि अछि । एहि नाटकसभमे सामान्यतः एक दिनमे अभिनय सम्पन्न भऽ सकवाक योग्य अंशक आधारपर अङ्क विभाजन कएल गेल अछि । एहि नाटकक अङ्क विभाजनमे समयटाक ध्यान राखल गेल अछि इएह कारणसँ नाटकसभमे “इति अमुक अङ्क” अथ अमुक दिवसे उल्लेख कएल भेटैत अछि । अङ्कक संख्याक हिसाबसँ सेहो एहि नाटकसभमे कोनो निश्चित सीमाक पालन नहि भेल अछि । संस्कृत नाटकमे अङ्क विभाजन पाँचसँ दश अङ्क धरि होइत अछि^१ । नाटक लक्षणकार पाँच अङ्कसँ कम आ दश अङ्कसँ अधिककेँ नाटक नहि मानैत छथि मुदा मल्लकालीन नाटकसभमे एहि सीमाक पालन नहि भेल अछि । कोनो एको अङ्कक नाटक अछि आ कोनो ४३ अङ्कक सेहो अछि । अर्थात् नाटकक आकारमे बहुत विविधता अछि । एके दिनमे सम्पन्न होमयवला नाटक सेहो एहि कालमे लिखल गेल आ ४३ दिनमे सम्पन्न होमयवला विशालकाय नाटक सेहो लिखल गेल । सङ्ग्रहि इहो बात उल्लेखनीय अछि जे अङ्ककेँ पुनः दृश्यमे विभाजित करवाक चेष्टा नहि कएल गेल अछि । एहि नाटकसभक अङ्कमे रहल विविधता स्पष्ट करवाक लेल द्रष्टव्य थिक एक तालिका :—

नाटक	नाटककार	अङ्क
हरगौरी विवाह —	जगज्ज्योतिर्मल्ल —	१०
कालियमनमथोपाख्यान —	सुमतिजितामित्रमल्ल —	३
गौरीविवाह नाटक —	भूपतीन्द्र मल्ल —	७

१. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि। सूची संख्या-प्र.१४५५

२. चन्द्रलाल द्विवे, हिन्दी नाटकों का रूप विधान और वस्तु विकास, पृ. २६

० एहि नाटकमे अङ्कक बदला “सम्बन्ध” नाम देल गेल अछि ।

महाभारत	—	”	—	२३
रामायणनाटकम्	—	”	—	१५
विद्याविलाप	—	”	—	७
उषाहरण	—	रणजित मल्ल	—	६
बाल्मीकि रामायण नाटक	—	”	—	४३
रामायण नाटक	—	”	—	४०
रामायण नाटक	—	नरेन्द्र मल्ल	—	१२
उषाहरण नाटक	—	विष्णुसिंह मल्ल	—	१
गीत दिगम्बर	—	सिद्धिनरसिंह मल्ल	—	४

एहि प्रकार अङ्क विभाजनक हिसावसँ एहि समयक नाटक नाट्यशास्त्रक लक्षणक सीमामे नहि रहल स्पष्ट होइत अछि। नाट्यशास्त्रक जे अङ्क विभाजनक सीमा ५ सँ १० धरि मानल गेल अछि तकर उल्लङ्घनसँ आपत्ति उठि सकैत अछि। मुदा, नाटक समाजक आवश्यकता अनुरूप लिखल जाइत अछि। हरेक रचनाक किछु उद्देश्य होइत अछि आ ई उद्देश्य समय अनुसार बदलैत रहैत अछि। जाहि समयमे भरतमुनि नाट्य शास्त्रक रचना कयलनि आ धनंजय तकर संक्षेपीकरण सरल, सुबोध भाषामे कयलनि^१ ताहि समयक सामाजिक अवस्था तथा नाटकक रचना एवं अभिनयक उद्देश्य आ मल्लकालीन समाजक आस्था तथा नाटकक रचना एवं अभिनयक उद्देश्य एके रङ्ग नहियो भऽ सकैत अछि। एहन अवस्थामे यदि मल्लकालीन मैथिली नाटकमे नाट्य शास्त्रक सम्पूर्ण लक्षणक पालना नहि भेल तँ एकरा अस्वभाविक नहि कहल जा सकैत अछि।

भाषा :-

नाटकमे भाषाक दू रूप गद्य आ पद्यक प्रयोग होइत अछि। गद्य लिखवाक वा वजवाक शैली भिन्न होइत अछि आ पद्यक शैली भिन्न। सामान्य बोलचालमे गद्यक प्रयोग होइत अछि, कारण जे गद्य सभक लेल बोधगम्य होइत अछि। सङ्गहि वजवाक लेल सेहो गद्य-वाक्य रचनामे विशेष प्रयासक आवश्यकता नहि रहैत अछि। मुदा लिखवाक समयमे गद्यक स्वरूप बदलि जाइत अछि खास कऽ काव्य रचनाक समय गद्यकेँ सेहो विशेष रूपसँ अलंकृत करवाक परिपाटी

१. व्याकीर्णो मन्दबुद्धीनां जायते मतिविभ्रमः ।

तस्यार्थस्तत्पदैस्तेन संक्षिप्य क्रियतेऽञ्जसा ॥५॥

— मैथिली दशरूपक, प्रथम प्रकाश, श्लोक ५, पृ. ३.

बहुत पुरान अछि । पद्य तँ ओहना विद्वान कविद्वारा विशेष प्रयाससँ छन्द विधान अन्तर्गत रचल जाइत अछि । एकर उद्देश्य भावाभिव्यक्तिसँ आगू काव्यानन्द प्रदान करब थिक स्वभाविक रूपेँ एकरा ओही प्रकारसँ अलंकृत आ रसयुक्त बनाओल जाइत अछि । जहाँ धरि एहि कालक नाटक सभक प्रश्न अछि एहि नाटकसभमे प्रयुक्त गद्यकेँ जटिल वा अलंकृत करवाक प्रयास नहि भेल अछि । एहि गद्यसभमे आडम्बरसँ दूर सामान्य बोलचालक भाषाक निकट छोट छोट वाक्यक प्रयोग भेल अछि । उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत अछि भूपतीन्द्र मल्लक भणितारसँ रचित सम्बरासुरबधोपाख्यान¹ नाटकक कथोपकथनक एक अंश --

इन्द्र - हे प्रिये अपन भवन जाएब चलू ॥

शची - प्राणनाथ विजय करू ॥

इन्द्राणी - हे प्राणनाथ सत्वर विजय करू ॥

इन्द्र - हे प्रियतमा चलू ।

इन्द्र - हे प्रिये क्षण एक विश्राम करब ॥

इन्द्राणी - नाथ समुचित ॥ विश्राम ॥

इन्द्र - प्रियतमा एहाक रूपातिशय देखि मन विकल भेल ते किछु कहव सुनु ॥

इन्द्राणी - प्राणनाथ हमे की करब ।

एहि नाटक सभमे अधिकांश एहि तरहक कथोपकथन आएल अछि तथापि नाटकमे एकटा कथा होइत अछि आ कथा अनुरूप कथोपकथन आगू बढैत अछि स्वभाविक कतहु कतहु एकटा पात्र एके बेरमे दू चारि वाक्य वा किछु पैघो सम्भाषण कयने अछि मुदा पेजक पेज वा भाषण सनक कथोपकथन नहि आएल अछि । सम्भाषण किछु पैघो जतऽ प्रयोग भेल अछि ताहू ठामक भाषाक स्तर मुदा ओहिना सरल सुबोध रूपमे आएल अछि । पद्यक सम्बन्धमे मुदा ई बात लागू नहि अछि । पद्यक भाषा विशेष अलंकृत ओ आह्लादसँ भरल अछि । पद्यक रचना जयदेव ओ विद्यापतिक गीत परम्परामे भेलाक कारणसँ सेहो प्रभावित हुएब सम्भव अछि । लेखनाथ मिश्र कहैत छथि जे एहि नाटक सभमे गद्यक प्रयोग व्यवहारिकता लेल तथा काव्यक लेल पद्यक प्रयोग भेल अछि² ।

1. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या - ४०४

2. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास, पृ. १४६

विविध भाषा भाषी भारतीय पण्डितलोकनि नेपालमे मल्लकालीन राजासभक आश्रयमे रहैत छलाह^१ । मल्ल राजा लोकनिक भाषा सम्बन्धी ई उदारता अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि तथा ई नेपालक परम्परा अनुकूल अछि । नेपालक प्राचीन शिलालेखसभ विशुद्ध संस्कृतमे लिखल गेलाक बावजूदो ओहिमे स्थानीय भाषाक शब्द भेटैत अछि जे भाषा सम्बन्धमे नेपालक राजा लोकनिक उदारताक परिचायक थिक । एहि तरहेँ एक दिस विभिन्न भाषा भाषी विद्वान सभक सङ्गम आ दोसर दिस राजा लोकनिक भाषा प्रति उदार भाव स्वभाविक रूपमे ओहि ठामक नाटकमे अनेको भाषाक प्रयोग भेल । लेखनाथ मिश्र कहैत छथि जे एहि ठामक नाटकक समस्त ठाठ मैथिली भाषाक कोरो वातीसँ ठाठल अछि, हँ, वन्हन कतहु कतहु अन्यान्यो भाषाक पडल छैक^२ ।

अन्यान्य भाषामे वङ्गाली, नेवारी, हिन्दी, ब्रजभाषा आदि मैथिलीसंगे मिश्ररायल अछि मुदा मैथिलीकेँ छोडि कोनो एक भाषा एहन नहि अछि जाहिमे सम्पूर्ण नाटक एतेक अछि ।^३ मैथिलीमे मिश्ररायल वङ्गला भाषाक स्वरूप जितामित्र मल्लक समयमे रचित वरूथिनीहरण नाटकसँ —

राजा — हे मनोरमा महादेव अराधना करिते जायिवो चलो ।

मनोरमा — पिता विजय करो ॥

मनोरमा — हे पिता शीघ्र विजय करो ॥

राजा — पुत्री चलो ॥

राजा — हे पुत्रि मन्दर पर्वत आयिलाँव एषाने महादेवेर अराधना करिवो ॥

मनोरमा — पिता अवश्य ॥

वङ्गला भाषाक मिश्रण भूपतीन्द्र मल्लक समयमे रचित गोपीचन्द्रोपाख्यान^५ नाटकक पद्यमे —

१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. - २२०
२. लेखनाथ मिश्र, मैथिली नाटकक उद्भव अओर विकास, पृ. - १३०
३. उएह, पृ. - १३१
४. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । सूची संख्या - च-६४०
५. एकर पाण्डुलिपि, राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि । पुस्तक सूची संख्या - प्र. ३४५

अनुपम सुन्दर हरगुण वर्णन भूपतीन्द्र नृप गावे ।

वासन हरि विधि ना जानो तुमार गति केमने राखिबो मने भावे ॥

एहि तरहे हिन्दी भाषाक सेहो एहि समयक कोनो कोनो नाटकमे प्रयोग भेल अछि । द्रष्टव्य थिक भूपतीन्द्र मल्लक समयमे रचित कंसवध (कृष्ण चरित) नाटकमे प्रयुक्त हिन्दी भाषाक दोहा —

धरणी पर सारथी रहे एका चक्र रथ जात ।

पवन वेग ते चरत हय पंडित बुझय बात ॥

जितामित्र मल्लक समयमे रचित कालीय-मथनोपाख्यान^१ नाटकमे ब्रजभाषाक पुट केहन अछि, देखू सूत्रधार ओ नटीक वार्तालाप —

सूत्र. — नेपालको अधिपति महाराजाधिराज श्री श्री सुमतिजय-
जितामित्र मल्ल देवको परमेश्वरी प्रीति कामना सबो कृष्ण
— चरित नाच नाचने को आज्ञा भयी हय ॥

नटी — हे नाथ कैसो उह राजा ॥

सूत्र. — सयानि सुनु ॥

नटी — नाथ आज्ञा करिए ॥

स्थानीय जनताक बोलचालक भाषा नेवारी रहल अवस्थामे रचित मैथिली नाटकपर नेवारी भाषाक प्रभाव स्वभाविक छल । विशेषतः नाटकीय निर्देश सभ नेवारी भाषामे अछि । नाटकक अंतमे रहल सम्बन्ध उल्लेखक समय ठाम ठाम नेवारी भाषाक प्रयोग भेल अछि ।

संस्कृत प्राकृत भाषाक मैथिली नाटकमे प्रयोग भाषाक मिश्रण कहव उचित नहि थिक । कारण, मैथिली नाटक लिखवासँ पूर्व संस्कृत प्राकृतमे नाटक लिखल जाइत छल आ मैथिली भाषा गीतक रूपमे ओहिमे प्रवेश कयलक । अपन बोधगम्यताक प्रभावसँ नाटकक सम्पूर्ण कलेवरमे पसरि गेल ।

एहि तरहे भाषाक प्रयोगक दृष्टिकोणसँ मल्लकालीन मैथिली नाटकके पाँच वर्गमे राखल जा सकैत अछि ।

१. ओहन नाटक जाहिमे विशुद्ध मैथिली भाषाक प्रयोग भेल अछि ।

जेना —

कुंजविहार नाटक

मुदितकुवलयाम्र नाटक

प्रभावतीहरण नाटक

नलीय नाटक, आदि ।

१. एकर पाण्डुलिपि राष्ट्रिय अभिलेखालय काठमाण्डूमे सुरक्षित अछि ।

सू. सं. प्र. ४६०

(१२५)

२. ओहन नाटक जाहिमे बङ्गला भाषा मिझरायल अछि ।

जेना - बाल्मीकि-रामायण नाटक

गोपीचन्द्रोपाख्यान नाटक, आदि ।

३. ओहन नाटक जाहिमे नेवारी भाषा मिझरायल अछि ।

जेना - विक्रम चरित नाटक

पृथूपाख्यान नाटक, आदि ।

४. ओहन नाटक जाहिमे ब्रजभाषा मिझरायल अछि ।

जेना - पारिजातहरण (जगत्प्रकाश मल्ल)

कालीयमथनोपाख्यान (जितामित्र मल्ल), आदि ।

५. ओहन नाटक जाहिमे हिन्दी भाषा मिझरायल अछि ।

जेना -

कंसवध वा कृष्ण चरित (भूपतीन्द्र मल्ल) ।

उद्देश्य :-

मल्लकालीन मैथिली नाटकक रचनाक एक मात्र उद्देश्यक उल्लेख भेटैत अछि जे मल्लराजालोकनि अपन इष्ट देवताक प्रसन्नार्थ नाटकक रचना कयलैन्हि आ करौलैन्हि । एहि नाटकसभक अभिनय शुभ अवसरसभपर हएव एहि बातके आओर बल प्रदान लरैत अछि । मैथिली नाटकक रचनासँ पूर्व जहिया संस्कृतमे नाटकक रचना आ अभिनय भेल तहियो ई अभिनयक अवसर ओहने छल । अरिमल्लक शासनकालमे रचित “महीराघदवधनाटक”क उद्देश्यक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे मत्स्येन्द्रनाथक यात्रामे उपस्थित भेल पण्डित तथा अन्य गन्यमान्य महानुभावक समक्ष अभिनय करवाक लेल एहि नाटकक रचना गेल अछि (भगवतः श्री बुद्धेश्वर प्रतिहतप्रतिसरत् यादोत्सव प्रसङ्गे नायातानां प्रमुदित द्विजराजपुत्रादीनां समाजः^१ ।। जयस्थिति मल्लक ज्येष्ठ पुत्र धर्ममल्लक व्रतबन्धक समयमे राघवानन्द नाटकक अभिनय भेल^२ (अविरत सेवमान श्री श्री पशुपति चरणाम्बुजयरागपिञ्जरित शेखरस्य श्री श्री जयस्थितिराजमल्लदेवस्यात्मनो हृदयानन्ददिणः जशार श्री श्री जयधर्ममल्ल देवस्य रवुकुलोचितव्रतवन्दमहोत्सवप्रसङ्गप्रमुदितेन जनसमूहेन नृत्यमानमभिनवराघवानन्द नाटकम् .. ।) जगज्ज्योतिर्मल्ल सूर्यग्रहणक समयमे अपन तुलादान महोत्सवक अवसरपर खेलएवाक

१. सूर्य विक्रम शवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. २२४

२. उएह, पृ. २२६

हेतु हरगौरी विवाह नाटकक रचना कयलनि^१ (इति श्री महाराजाधिराज श्री श्री जगज्योतिर्मल्लकृतं पञ्चपञ्चाशाद्गीतोपवद्धं हरगौरी विवाह नाटकं समाप्तं ॥ ... सन्दत् ४७६ ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या सूर्यग्रासस श्री श्री जगज्योति मल्लदेव प्रभु ठाकुर सन तुलदानस क्षव हर गौरी विवाह प्याखनदयका जुंरं ॥ भादगांवक अन्तिम मल्ल शासक रणजितमल्लक शासनकालमे सबसँ अधिक नाटकक रचना भेल जाहिमे अधिकांश हिनक ईष्टदेवताक प्रीत्यर्थ अभिनीत भेल^२। उपाहरणक अभिनयक हुनक मन्दिरक जीर्णोद्धारक अवसरपर भेल छल । अन्धवासुरवधोपाख्यान हुनक प्रीत्यर्थ अभिनीत भेल । कृष्णचरित्र नाटक हुनक मन्दिरमे छोटका घंटाक स्थानपर बड़का घंटाक स्थापनोत्सव स्मृत्यर्थ भेल आओर कोलासुरवधोपाख्यानक अभिनय हुनक प्रतिमाकेँ नीलकमलसँ अलंकृत करवाक उत्सवकालमे भेल। अन्यान्य नाटक हुनक पारिवारिक शुभकर्मक विभिन्न अवसरपर लिखल गेल आ अभिनीत भेल । काठमाण्डू राज्यशाखाक प्रसिद्ध मल्लवंशीय शासक प्रताप मल्लक राजाश्रय प्राप्त सुप्रसिद्ध नाट्यकार वंशमणि रचित गीतदिगम्बर नाटकक पाण्डुलिपि प्राप्त होइत अछि जकर प्रस्तावना मध्य ओ अपन आश्रयदाताक अत्यधिक प्रशंसा कयने छथि । एहि नाटकक रचना ओ अपन आश्रयदाता प्रताप मल्लक तुलादानक अवसरपर कयलैन्हि । एहि तरहें पाटन राज्यशाखामे सेहो विभिन्न शुभ अवसरपर नाटकक रचना आ अभिनय भेल ।

एहि प्रकारेँ मैथिली नाटकक सम्बन्धमे जे सूचना भेटैछ ताहिमे इएह स्पष्ट उल्लेख अछि जे नाटकक रचना विभिन्न शुभ अवसरपर देवताक प्रीत्यर्थ कएल गेल । मुदा हमरा जनैत नाटक रचनाक ई सम्पूर्ण उद्देश्य नहि अछि । मुसलमानी आक्रमणसँ पराजित महाराज हरिसिंहदेव मिथिला छोड़ि नेपालक उपत्यका भादगांव (भक्तपुर) मे आबि अपन शासन स्थिर कयलनि तखन मिथिलासँ अनेको विद्वान ओतए पहुँचलाह । मैथिल विद्वानसभक आवत-जावत निरन्तर जारी रहल । हुनक पुत्र श्यामसिंहदेव जिनका पुत्र नहि छलैन्हि अपन पुत्रीक विवाह जयभद्रमल्लसँ करौलनि आ अपन उत्तराधिकारी बनौलनि । एहि सम्बन्धक कारण मैथिल विद्वानसभक सम्पर्क बनले रहलैन्हि । जयस्थिति मल्लक समयमे आबि सम्पूर्ण उपत्यकापर एहि वंशक शासन १३८३ ई. मे

१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ. २३१

२. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. १५६

स्थापित भेल । जयस्थिति मल्ल बहुत प्रतापी आ समाजसुधारक शासक छलाह ओ अनेक सामाजिक रीतिरिवाजकेँ व्यवस्थित बयलैन्हि^१ । एहि काजक लेल सम्मति संल्लाह लेवाक हेतु ओ मिथिलाक विभिन्न भागसँ पाँच गोटे पण्डितकेँ बजीने छलाह^२ । ओ पण्डितलोकनि कीर्तिनाथ उपाध्याय, रघुनाथ झा, श्रीनाथ भट्ट, महीनाथ भट्ट आ रमानाथ झा छलैथि । जयस्थिति मल्लक मृत्यु पश्चात् हुनक ज्येष्ठ पुत्र धर्ममल्ल आ धर्ममल्ल पश्चात् जयस्थिति मल्लक माझिल पुत्र आ धर्ममल्लक छोटा भाई ज्योतिमल्ल सिंहासनपर बैसलाह^३ । ज्योति मल्ल पश्चात् हुनक पुत्र यक्षमल्ल सिंहासनारूढ भेलाह^४ । यक्षमल्लक मृत्यु पश्चात् हिनक राज्य भक्तपुर, काठमाण्डू आ बनेपा तीन शाखा मे विभक्त भ गेल^५ । किछु दिनक पश्चात् बनेपा, भक्तपुरमे मिल गेल आ काठमाण्डूक राज्य काठमाण्डू तथा ललितपुर दू भागमे बाँटि गेल जे भक्तपुर, काठमाण्डू आ ललितपुरक राज्य मल्लवंशक अन्तिम समय धरि कायम रहल । मल्लवंशीय सम्पूर्ण शासनकालमे मैथिल विद्वानलोकनि समादृत होइत रहलाह । मैथिली भाषाक माधुर्यसँ आकृष्ट भऽ मल्ल राजालोकनि स्वयं मैथिलीमे गीत ओ नाटकक रचना करए लगलाह तथा राजाश्रित मैथिल विद्वानलोकनिसँ तादृश रचना करावए लगलाह । लगभग दू तीन सय वर्ष धरि ओतए मैथिली साहित्यक हेतु स्वर्ण युग रहल जाहिमे शतशः मैथिली नाटकक रचना भेल^६ । एहि बातसँ ई अनुमान लगैत अछि जे मैथिली भाषाक प्रचार करव सेहो एहि कालक नाटकक रचनाक उद्देश्य छल ।

नेपालमे मैथिली नाट्यकलाक विकसित परम्पराक सूत्रपात जगज्ज्योतिर्मल्लसँ प्रारम्भ होइत अछि^७ । जगज्ज्योतिर्मल्ल कला एवं साहित्यक निष्णात विद्वान छलाह^८ । संगहि शिवक महान भक्त छलाह । जगज्ज्योतिर्मल्ल

-
१. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.— ७८
 २. उएह, पृ.— ७९
 ३. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.— १४८
 ४. सूर्य विक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, पृ.— ८७
 ५. उएह, पृ.— ८९
 ६. उएह, पृ.— ९२
 ७. जयमन्त मिश्र, मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव, पृ.— ५२-५३
 ८. प्रेमशङ्कर सिंह, मैथिली नाटक ओ रंगमञ्च, पृ.— ३४
 ९. उएह ।

सांस्कृतिक साहित्यिक एवं धार्मिक भावनाके सुदृढ बनएवाक हेतु मैथिली नाटकक रचना दिश उन्मुख भेल होथि से सम्भव बुझाईत अछि । एहिसँ पूर्व बङ्गालमे चैतन्य आ असाममे शङ्करदेव मैथिली भाषाक लीलाद्वारा धार्मिक भावना दृढ करवामे सभर्थ भए चुकल छलाह । तकर एक कारण ई छल जे ओहि समय धरि संस्कृत सामान्य जनताक लेल बोधगम्य नहि रहि गेल छल । ओ दोसर भाषाकेँ साहित्यिक मर्यादा प्राप्त नहि भेल छलैक । तेँ ई सम्भव बुझाईत अछि जे साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावना सुदृढ करव सेहो एहि कालक मैथिली नाटक रचनाक उद्देश्य छल ।

मंच निर्देशः—

आलोच्यकालक नाटकसभमे प्रचूर मञ्च-निर्देश भेटैत अछि । भाषा प्रति विचार कएलासँ एहि कालक नाटकसभमे रहल मञ्च-निर्देशमे प्रायः नेवारी भाषाक प्रयोग भेल अछि । यथा—

कैलास पर्वततय महादेवादि तीपदुं ।

— उषाहरण नाटकमे ।

बालिमक, मरीचि, ऋषि अंदोल दबंदुं ।

— जलशायिविष्णवादि सृष्ट्युपाख्यान नाटकमे ।

एहिना 'तीपंदथुदुं', 'तिपंदुं', 'छबेस हलाय', 'तिपनदुहाय' आदि निर्देश नेवारी भाषामे बेर-बेर देल गेल अछि । निर्देशनक हिसाबसँ एहि नाटकसभमे प्रयुक्त मञ्च-निर्देश भिन्न-भिन्न प्रकारक अछि । कतहु-कतहु एहन मञ्च-निर्देश भेटैत अछि जे केवल वाद्य वाजए । ने कण्ठ सङ्गीत होअए ने वार्तालाप आ ने कोनो आने क्रिया । हरगौरी विवाह नाटकमे बीच-बीचमे ई निर्देश देल गेल अछि जे अभिनेतासभ मञ्चक कोन भागमे ठाढ़ भए बाजत, नाचत वा गाओत । एहन मञ्च-निर्देश अन्यान्य नेपालीय मैथिली नाटकसभमे सेहो भेटैत अछि । ई मञ्च-निर्देशसभ एहि बातक प्रमाण अछि जे मञ्चपर नाटकक प्रस्तुतीकरण आओर तकर प्रभावकारिता प्रति नेपाली नाटककारलोकनि बहुत सतर्क रहैत छलाह । एहि प्रकारक मञ्च-निर्देश अधिकांश नेवारी भाषामे अछि मुदा संस्कृत तथा मैथिली भाषाक प्रयोग सेहो अछि ।

गीतः—

आलोच्यकालक नाटक गीत प्रधान अछि । गीतसभ विभिन्न राग-रागिनीमे बान्हल अछि जे रचयिताक सङ्गीतज्ञता सूचित करैत अछि ।

जगज्ज्योतिर्मल्लक हरगौरी विवाह नाटकक पुष्पिका-वाक्यमे कहल गेल अछि-
इति श्री महाराजाधिराज श्री श्री जगज्ज्योतिर्मल्लकृत पञ्चपञ्चाशद्गीतोपद्धं
हरगौरी विवाह नाम नाटकं समाप्तम्^१ । अर्थात् नाटकमे कुल ५५ गोट गीत
समावेश कएल गेल छल । सम्प्रति ४६ टा सँ अधिक गीत उपलब्ध नहि अछि ।
नाटकक प्रत्येक गीतमे राग-तालक निर्देश देल अछि । सभटा मिलाकए २४
गोट राग-रागिणीक उल्लेख अछि । एहिमे शिव आओर पार्वतीक विवाहक
कथासूत्रमे गुम्फित कित निया शैलीक गीत भरल अछि । एहिमे प्रवेश गीत आ
निर्गम गीत सेहो अछि । एहिमे जगज्ज्योतिर्मल्लक भणिता युक्त गीत १७ गोट
अछि । शेष अन्य गीत विद्यापति, विष्णुपुरी, सदानन्द, गोविन्द, करण महेश,
कृष्ण राए, कवि रतन, चतुर चतुरभुज, जगदीश ओ शशिशेखर सिंहक अछि ।

अद्यापि जतेक नाटक प्रकाशमे आएल अछि वा जतेक पाण्डुलिपि
उपलब्ध अछि से देखलासँ ई निष्कर्ष बहराइत अछि जे एहि सभ नाटकमे
गीतक प्रधानता अछि । आलोच्यकालक नाटकमे नान्दी गीत, प्रवेश गीत,
निस्सार गीत, परिचय गीत, राजवर्णना, देशवर्णना, प्रशस्ति गान, आशीर्वाचन
एवं प्रसङ्ग गीतक उल्लेख भेटैछ । एहि कालक प्रायः सभ नाटकक प्रारम्भमे
शिवक स्तुति भेटैछ । गीतक संख्या अधिक भेलासँ सङ्गीत तत्त्व नाटकमे स्वतः
प्रवेश पावि गेल अछि । एहि कारणे सङ्गीत नाटकक प्राण बनि गेल अछि ।
नृत्य ओ सङ्गीतक प्रधानताक कारणे सूर्य चित्रम जदाली मल्लकालीन मैथिली
नाट्य साहित्यक तुलना यूरोपीय ओपेरासँ कयलनि अछि^२ । एहि नाटकसभक
नाट्यकार, सूत्रधारसभके सङ्गीत विशारद रहब अनिवार्य छलनि । वस्तुतः
एहि नाटक एवं पाश्चात्य ओपेरामे सिर्फ एतबे अन्तर अछि जे मैथिली नाटक
काव्य साहित्यक रूपे उच्च कोटिक होइत छल । दुनूक रूपरेखामे अत्यधिक
समानता दृष्टिगत होइछ ।

एहि कालक नाटकक गीतक स्तर बराबर नहि अछि । कतहु उच्च
कोटिक गम्भिर आओर मार्मिक गीत अछि त कतहु साधारण कोटिक । जेना-
जगत् प्रकाश मल्लक नाटकसभमे अधिकांश गीत साधारण कोटिक अछि । कोनो
कोनो गीत गम्भिर आओर मार्मिक अछि । भूपतीन्द्र मल्ल जे बहुविध आ

१. रामदेव झा (सं.), हरगौरी विवाह, पृ०- १८

२. प्रफुल्ल कुमार 'मौन', नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, मैथिली
साहित्य परिषद, विराटनगर, फाल्गुन २०२२ वि. सं., पृ.- २३

बहुतो नाटकक रचना कयलैन्हि हिनका नाटकसभमे गीत बहुत अछि आ एहिमे विविधता सेहो बहुत अछि । जेना— विद्याविलापमे गीत साधारण तथा सूत्रवत् संक्षिप्त आ गूढ अछि । महेशवाणी आदि लोक प्रचलित शैलीक, कतोक गीतमे विलक्षण मौलिकता अछि । विवाहक समय ओहिना कोबर गीत होइत अछि जेना आजुक मिथिलामे । सिद्धिहरसिंहक गीत दिगम्बरक आरम्भमे शिवक स्तुति गीत जेहन सरल आ भव्य अछि से अन्यत्र दुर्लभ ।

एवं प्रकारेँ आलोच्यकालक नाटकमे गीतक जहिना बहुलता अछि तहिना विविधता सेहो । एहि नाटकसभमे टोड़ी, नट, मालकोश, मालव, भैरव, केदार, कामोद, विहाग, परज, दीपक, कल्याण भूपाली विभास, श्रीगौरी, पहड़िया, कान्हरा, असावरी, याजवन्ती, काफी, घनाश्री, इमन-कल्याण, वसन्त, श्रीराग, मारु, सारङ्ग, धुरिया मल्लार, ललित, भैरवी, मरहटी, विलावल, गौड़मालव, कौशिक, नट, मल्लार, मालाश्री, बराड़ी, गुर्जरी, जयत श्री सोरठ, कोराव, कोटाज, जति दण्डक, एकताल, दूताल, तैताल, चौताल आदिक उल्लेख भेटैत अछि । एहि राग तालसभमेसँ दीपक, मरहटी, कोराव तथा कोटाजकेँ छोड़ि अन्य राग ताल एखनहु प्रचलित अछि ।

एहि नाटकसभमे अनेक कविक गीत समावेश कएल गेल अछि त कतहु एकहि गीतमे दू कविक नाम सेहो भेटैत अछि । जेना— हरगौरी विवाहक किछु गीतमे वंशमणि आ जगज्ज्योतिर्मल्ल दुनूक संयुक्त भनिता अछि । तहिना त्रैलोक्यमल्लक आश्रयमे कृष्ण चरितपर लिखल गेल नाटक (जकर खण्डित प्रति उपलब्ध अछि), गीतक भणितामे रामचन्द्र आ वीरनारायण दू कविक नामभेटैत अछि ।

एहि नाटकसभमे गीतक एतेक व्यापक स्थान होयबाक एक मुख्य कारण विद्यापतिक गीत परम्पराक प्रभाव थिक । ओहि समयमे मिथिला कवि-कोकिल विद्यापतिक सुमधुर गान परम्परासँ गुञ्जायमान छल । बङ्गालक विद्वान जे मिथिलामे न्याय तथा स्मृति अध्ययनार्थ अबैत छलाह तिनका माध्यमसँ बङ्गालमे मैथिली भाषाक प्रचार भेल छल तखन नेपालमे मैथिल विद्वान स्वयं ओहि ठामक दरबारसभमे आश्रय पओने छलाह एहन अवस्थामे विद्यापतिक गीत परम्परा विकसित हएव ओहुना स्वभाविक छल । एहि परम्पराक ई प्रभाव थिक जे एहि ठामक नाटक नान्दी-गीतक गीतमय वातावरणमे शुरू होइत छल आ आरती गीतक सङ्गीतमय वातावरणमे समाप्त

होइत छल । सम्पूर्ण दृश्य- विधानक सृष्टि एहि नाटकसभमे गीतमय होइत छल । ई तँ गद्य-पद्यमय नाटकमे । एहि ठाम शायद एहि प्रभावक कारण गीतिनाट्य तथा नृत्यनाट्यक सेहो प्रचुर रचना भेल ।

गद्य:-

गद्य-पद्यक प्रयोगक दृष्टिकोणसँ एहि कालक नाटककेँ तीन श्रेणीमे राखल जा सकैछ-

१. गद्य-पद्य उभयात्मक नाटक । यथा-

क) उषाहरण नाटक

ख) इन्द्रविजय नाटक

ग) नलीय नाटक

घ) माधवानल नाटक

ङ) प्रभावतीहरण नाटक, आदि ।

२. पद्यात्मक नाटक । यथा-

क) कुन्जविहार नाटक

ख) मुदितकुवलययात्र नाटक

ग) नेपाले बाङ्गला नाटकमे प्रकाशित चारु-नाटक, आदि ।

३. नृत्यगीतात्मक नाटक । यथा-

क) मदालसाहरण नाटक, आदि ।

गद्य-पद्य उभयात्मक नाटकमे गीतक बाहुल्य तँ अछि परन्तु गद्यात्मक कथोपकथनकेँ ओ गीत गौण नहि बनबैत अछि^१ । पद्यात्मक आ नृत्यगीतात्मक नाटकमे सेहो सभटा पद्य मात्र नहि अछि । गद्यक प्रयोग ओहूमे भेल अछि मुदा कोनहु ठाम गद्यालाप अछि त अल्प मात्र आ कोनहु ठाम संकेतादिक लेल मात्र गद्यक प्रयोग भेल अछि मुदा गद्य अछि धरिसभमे ।

नाटकमे मैथिली गद्यक प्रयोग सर्वप्रथम रायमल्लक प्रणीत विश्वमल्लक राज्यकालमे लिखल गेल विद्याविलाप^२मे भेल । ओहिसँ पूर्व नाटकक कथोपकथन संस्कृत प्राकृतमे तथा ओहि मध्य मैथिली गीत प्रयोगक त्रिभाषीय परम्परा विद्यापति चलओने छलाह । नेपालमे कथोपकथनमे मैथिली गद्य प्रयोगक परम्परा

१. डा० जयमन्त मिश्र, मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव, पृ.- ५४

२. जयकान्त मिश्र (सं.) विद्याविलाप, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, १ एलनगंज रोड, प्रयाग, प्र. सं. १९६५ ई.

चलल आ क्रमशः संस्कृतक प्रयोग घटैत गेल । नेपालमे रचित नाटकक गद्य कथोपकथन देखलासँ एहि गद्यसभक स्तर आओर स्पष्ट हुएत । प्रस्तुत अछि उपत्यकाक तीनू राज्यशाखामे रचित नाटकक किछु गद्य कथोपकथनक अंश --

भादगाँवमे रचित मैथिली नाटकसँ :-

विद्याविलापमे प्रयुक्त एक गद्यांश -

श्रीमत् श्रीभक्तपतन नगरी सकल गुणजन शोभित

श्री श्री विश्वमल्ल देवस्य सभाके महिमा शुन

श्री भक्तपतननगरे विद्याविलाप नाटक प्रभृत

हैलो, ता देखि निमित्त आक्षे जावो ।

जगज्ज्योतिर्मल्लक मुदितकुवल्याश्व, हरगौरी विवाह एवं कुंजविहार नाटक वड प्रसिद्ध अछि । मुदितकुवल्याश्व संस्कृत मिश्रित नाटक थिक। हरगौरी विवाहमे रागरागिनीवद्ध ५५ गीत समावेश अछि एही कारणेँ सूर्य विक्रम जवाली एकर तुलना युरोपिय ओपेरासँ नयने छथि । किन्तु एतेक पदक समावेश भेलाक बावजूदो एहिमे प्रयुक्त भेल गद्यक स्वरूप विलक्षण अछि । प्रस्तुत अछि हरगौरी विवाह नाटकक एक अंश -

ऋषि - हे नाथ् अपने वड सानन्द स्वरूप देखई छिअ ॥

महा - हे ऋषिराज विस्तार कत कहव् जेहाजे हिमालय पाहि कन्या माँगि दिअओ , हमे विवाह करव ॥

जगज्ज्योतिर्मल्लक बालक नरेन्द्रमल्लक समयक कोनो नाटकक रचनाक सूचना नहि भेटैत अछि । किन्तु हुनक पौत्र जगत्प्रकाश मल्लक कतेको नाटक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि । ताहि मध्यक एक नाटक मदनचरितसँ एक अंश द्रष्टव्य थिक जे ओहि समयक नाटकमे प्रयुक्त गद्यक स्वरूप स्पष्ट करत --

सूत्रधार - हे प्रिये एतय आऊ ।

नटी - हे नाथ, हमर प्रणाम, की आज्ञा करें छिअ ।

सूत्रधार - हे प्रिये श्री श्री जगतजयप्रकाशमल्लदेवक ज्येष्ठ राजकुमार श्री श्री जयजितामित्रमल्लक आज्ञा भेल अछि - ... ।

जगत्प्रकाशमल्लक पुत्र सुमतिजितामित्र सेहो नीक लेखक छलाह । हुनका अपन पितेहि जहाँ मैथिली भाषापर पूर्ण अधिकार छलन्हि । हिनका शासनकालमे रचित महाभारत नाटकक गद्य स्वरूपक एक अंश -

व्यास - हे चित्रकला हमें द्वार प्राप्त भेलाहु राजा सबो निवेदन करू ।
चित्रकला - मुनिराज अवश्य ॥

हे महाराज वेद व्यास द्वार छथि की आज्ञा ।

धृत० - हे चित्रकला तोराज वजाय आनू ॥

चित्र० - महाराज अवश्य ॥

हे मुनिराज राजाक आज्ञा भेल भितर विजय करू ॥

हिनका समयमे रचित वरूथिनीहरण नाटकमे वङ्गला भाषाक प्रभाव

देखू -

राजा - हे मनोरमा महादेव अराधना करिते जायिवो चलो ।

मनोरमा - पिता विजय करो ॥

मनोरमा - हे पिता शीघ्र विजय करो ॥

राजा - पुत्रि चलो ॥

राजा - हे पुत्रि मन्दर पर्वत आयिलाँव एषाने महादेवेर अराधना करिवो ॥

मनोरमा - पिता अवश्य ॥

हिनके समयमे रचित कालीयमथनोपाख्यान नाटकमे ब्रजभाषाक पुट

देखू -

नटी - हे नाथ मेरो परनाम कओन कामको आज्ञा भयी है ।

सूत्र - नेपालको अधिपति महाराजाधिराज श्री श्री सुमतिजय
जितामित्त मल्ल देश को परमेश्वरी प्रीति कामना सबो कृष्ण -
चरित नाच नाचवे को आज्ञा भयी ह्यै ॥

नटी - हे नाथ कैसे उह राजा ॥

सूत्र - सयानि सुनु ॥

नटी - नाथ आज्ञा करिए ॥

सुमतिजितामित्त मल्लक बालक भूपतीन्द्र मल्लक समयमे रचित अनेक
नाटक नेपालक पुस्तकालय सभमे सुरक्षित अछि । ताहि नाटकसभक कथोपकथनमे
मैथिली गद्यक स्वरूप देखू -

विन्नामा - हे माधवानल, ब्राम्हण भय, वेश्या सबो की स्नेह करै छिअ
आन दिव्य स्त्री एहाके देव, विरहिज दुःख तेजु ॥

माधवा - हे महाराज, आन स्त्री तबो एहातह दय होयत तथापि
कामकन्दला सनि स्त्री दय होयत नहि, ते कामकन्दला

आनि दियो ॥

विक्रमा. — हे माधवानल एहाज हठ कयर, हमे की करव कामकन्दलां
सजे मिलाय देव ।

माधवा. — महाराज जे आज्ञा ।

— माधवानल नाटकसँ ।

श्रीदाम — हे श्रीकृष्ण ई कोन वस्तु थी ।

कृष्ण — हे श्रीदाम ई कुम्भकारक चक्र थी ।

कृष्ण — हे श्रीदाम हमे प्रश्न करव ।

श्रीदाम — हे कृष्ण कहू ।

— कंसवध नाटकसँ ।

नटी — अहे नाथ तुमार कृपा हेते महाराज त परिचय हेलो तार देश
वर्णना अमी करिवो ॥

सूत्र. — प्रिये कहो ॥

— गोपीचन्द्रोपाख्यान नाटकसँ ।

भादगाँवक अन्तिम मल्लवंशीय शासक रणजित मल्लक समयमे सवसँ
अधिक नाटकक रचना भेल जे नेपालक पुस्तकालयसभमे सुरक्षित अछि । एहि
समयक नाटकमे प्रयुक्त गद्यक स्वरूप —

शशि — हे प्राणनाथ हमरो विनती शुन ।

अन्ध — प्रियतमा कहू ।

भीमा — हे दानवाधिप हमरो विनती अवधान करू ।

अन्ध — भीमानन्द कहू ।

— अन्धकासुरोपाख्यान नाटकसँ ।

उषा — हे रामा आजि रात्रि अद्भुत स्वप्न देखलहुँ । एक सुन्दर
पुरुष आए वलात्कारे हमर धम्म नष्ट कयल, कुल धर्मो गेल,
पितामाता की कहताह ? आव की करू ।

— उषाहरण नाटकसँ ।

कान्तिपुर (काठमाण्डू) मे रचित मैथिली नाटकसँ :—

एहि राज्यशाखामे नरेन्द्र मल्ल, प्रताप मल्ल, पार्थिवेन्द्र मल्ल, भूपालेन्द्र
मल्ल, भास्कर मल्ल, जगज्जय मल्ल आदिक शासनकालमे मैथिली नाटक
रचनाक जानकारी प्राप्त होइत अछि । एहि राज्य शाखाक भूपालेन्द्र मल्लक
शासनकालमे रचित धर्मदत्त चरित्र नाटकसँ गद्यक एक अंश —

“ -- हे देवलाके अनादि निज स्थान ई क्षण मात्र छाड़ी नहीं एतहि जहा लोकक उत्पत्ति प्रलयादि । एकरे आद्यन्त बहाहुँ पूर्व्वनटी पओले, पुनु मृगा रूप लए एतही छलाहु विसरल की तखनुक बोल । ”

पाटन (ललितपुर) मे रचित मैथिली नाटकसँ :-

सिद्धिनरसिंह मल्लक राज्यकालमे रचित नाटकमे गद्य केहन अछि से हरिश्चन्द्रनृत्यम्मे श्मशानमे राजारानीक निम्नलिखित कथोपकथनक उद्धरण स्पष्ट कए देत --

“राजा -- अहे चोरिणी सुन बतय हरिचन्दके तुअ जाति । कहि गेल अछल हमर किसान ।

रानी -- राम हरिचन्द बेचिय हम गेर । दुनसन्ताप दुख दय गेर एहि बेतवा के कय आस ... अहे महापुरुष हमी राजा हरिश्चन्द्रेर स्त्री मएनावती अछि । हमार अभ्यागते परेर दासिनी हैरो अग्निसंस्कार करिवार पुत्र निया अमी अग्नि अग्निते जायवो ।

(रानी जाव)

राजा -- हरि ३ दैव हमाके बतेक विपती दिये हम जे चण्डारेर दास हैरो । एहि हमार पुत्र रोहिदास अछि । मैनावती अमाके ना चिन्हियो । ”

सिद्धिनरसिंह मल्लक उत्तराधिकारी श्री निवास मल्लक समयमे रचित तारकासुरवधनाटकक अन्तमे लिखल अछि --

“महाराज श्री सिद्धिनरसिंहेर पुत्र श्रीनिवास मल्लके शुभाशीर्वाद करिया परम सुख कैलास जाएव चलो । ”

बतेपांमे रचित मैथिली नाटकसँ :-

जयरणमल्ल देवेनराक्षा कविश्वर अभयराजस्य पुत्र शुभराजद्वारा रचित पाण्डव विजय नाटकक एक उद्धरण जाहि मध्य मिथिलापञ्चशक प्रयोग भेल --

“तरुणीजनस्य सोहृगं दिज्जमि तुम्हाण संमन्ता ।

हेरं-वणाह तुम्ह पहरदु भवकलुसं णिमेसेण ॥ विना ॥

देखि सौभाग्यदायिनी युक्तभुक्तं ते ॥ वश्य ॥ णाह

एसा वस्सदायिणी विज्ञापइस्से । ”

शुभराजक दोसर नाट्य रचना “रूपमञ्जरी - परिणय” जाहि मध्य सूत्रधारक संस्कृतमे एवं नटीक प्राकृत - अपञ्चशमे कथोपकथन अछि --

“नटी— अज्ज उच्च इअन्हि आउदा कस्सि णिओय यं अणुचित्थसि ।

सूत्रधार— प्रिय गुणमति किमप्य पूर्वं नाटकमभिनाय सभासदो मानस-
रञ्जनाय परियत्न करो भवायः ।”

संस्कृत नाटक ह्यासोन्मुख रहल स्थितिमे नेपालमे क्रमशः मैथिली नाटकक अविर्भाव भेल । अतएव प्रारम्भिक अधिकांश नाटकमे संस्कृत प्रवृत्तिक प्रधानता रहल । इएह कारण अछि जे प्रारम्भिक नाटकमे मैथिली गद्यक प्रयोग नहि ए जकाँ भेल । किन्तु पाछू मैथिली गद्यक प्रयोग होअए लागल । भाषाक हिसाबसँ एहि गद्यमे संस्कृत प्राकृत अपभ्रंशक अतिरिक्त कतहु-कतहु नेवारी, वज्जला, आ व्रजभाषाक मिश्रण सेहो भेटैछ । जाहिसँ अनुमान होइत अछि जे विद्वान मल्ल राजालोकनिक दरवारमे वज्जाली आ व्रजभाषी विद्वानलोकनि सेहो आश्रित छलाह । नेवारी तँ स्थानीय भाषा छल तेँ एकर प्रभाव स्वभाविक बुझाईत अछि ।

वर्जित दृश्यः—

नाट्य लक्षणकारसभक कथन छैन्हि जे किछु बात मञ्चपर प्रकट रूपसँ अभिनेय नहि अछि¹ । जेना— दूरक यात्रा, वध, लडाई, राज्य अथवा देशक क्रान्ति (गृहयुद्ध), नगरकेँ घेरि लेव, भोजन, स्नान, सम्भोग, उबटन वा अङ्गलेप लगओनाइ, कपडा पहिरव आदि प्रसङ्ग मञ्चपर साफ-साफ नहि देखएवाक चाही । एहि प्रसङ्गसभक अङ्कक माध्यमसँ योजना एकदम नहि होयवाक चाही । हँ, विष्कम्भक, प्रवेशकादि सूचकद्वारा ई सभ सूचित कयल जा सकैछ । अधिकारी नायकक वधक सूचना प्रवेशकादि सूचकोद्वारा नहि देवाक चाही । हँ, आवश्यक देव-पितृ-कार्यक उपेक्षा नहि होयवाक चाही ।

एहि ठामक नाटकसभमे कतेको ठाम एहि नियमसभक पालन नहि भेल अछि । युद्धक दृश्य कतेको आएल अछि जेना ‘उषाहरण’ नाटक मध्य श्रीकृष्ण शोणितपुरमे पहिने वाणासुरसँ युद्ध करैत छथि पाछू वाणासुरक सहायतार्थ आएल शङ्करसँ युद्ध करैत छथि ।

नाटककार ओ गीतकार भिन्नः—

नेपालक अधिकांश नाटकमे नाटककारक जे नाम उल्लेखित अछि ओही नाटकक गीतक भणितामे दोसर व्यक्तिक नाम अछि । एहि कालमे अन्य

1. डा० देवकान्त झा, मैथिली दशरूपक, तृ० प्रकाश, पृ०— १८६

गीतकारक प्रख्यात गीतसभ समावेश करवाक सेहो परिपाटी छल । हरगौरी विवाह नाटकमे विद्यापति, विष्णुपुरी, सदानन्द, गोविन्द, करण महेश, कृष्ण राए, कवि रतन, चतुर चतुरभुज, जगदीश ओ शशिशेखर आदि कविक गीत समावेश अछि । विश्वमल्लक शासनकालमे कृष्ण विषयक एक खण्डित नाटक भेटैत अछि जाहि मध्य वीरनारायण एवं रामचन्द्र रचित मैथिली गीतक प्रयोग भेल अछि । एहि कालक नाटकक नाटककार प्रायः राजा होइत छलाह तथा नाटकमे प्रयुक्त गीतक गीतकार राज्याश्रित विद्वान होइत छलाह संगहि पूर्ववर्ती कविक गीतक प्रयोग सेहो कएल जाइत छल । एहि तथ्यक स्पष्टीकरणार्थ किछु आओर नाटकक अवलोकन कयल जा सकैछ ।

नाटक		नाटककार		गीतकार
मुदितकुवलाश्रम	—	जगज्ज्योतिर्मल्ल	—	वंशमणि
नलीय नाटक	—	जगत्प्रकाश मल्ल	—	चन्द्रशेखर सिंह
विद्याविलाप	—	भूपतीन्द्र मल्ल	—	काशीनाथ
रामायण नाटकम्	—	रणजीत मल्ल	—	गणेश
पाण्डव विजय	—	जयरण मल्ल	—	शुभराज
महाभारत नाटकम्	—	जितामित्र मल्ल	—	जगत चन्द्र
महाभारत	—	योग नरेन्द्र	—	हरिवंश

नाटकक अन्तः—

मैथिली नाटकक प्रारम्भ संस्कृत नाटक परम्पराक अनुकरणमे भेल । पूर्वमे संस्कृत नाटक मध्य मैथिली गीतक प्रयोग भेल । क्रमशः गद्यालाप सेहो मैथिलीमे होअए लागल । तेँ मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव स्वभाविक थिक । संस्कृत परम्परामे नाटककेँ सुखान्त हएब जरूरी बुझल जाइत अछि¹ । ताही अनुरूप एहि कालक प्रायः सम्पूर्ण नाटक सुखान्त अछि ।

मध्ययुगीन नेपालक मल्लकालीन विशाल मैथिली नाटक परम्पराक विश्लेषणसँ स्पष्ट होइत अछि जे मध्यकालमे तीन गोट धारा सङ्ग-संगे प्रवाहित होइत छल । पहिल, संस्कृत नाटकक परम्पराक आदर्श प्रस्तुत कए रहल छल । जाहिमे कथावस्तु, रसादि निरूपण, नान्दी, प्रस्तावना, रङ्गपूजा, राजदेशादि वर्णन, रङ्गमञ्च निर्देश, प्रवेश, निष्क्रमण, भरतवाक्य आदि संस्कृत परम्परा

1. चन्द्रलाल द्वे, हिन्दी नाटकों का रूप विधान और वस्तु विकास, पृ०-२७

अनुरूप भेल । दोसर, मिथिलाक किर्तनिया नाटकक रङ्ग जमओने छल आ तेसर मिथिला देशीय भाषा-सङ्गीतक धूम मचओने छल । परिणामतः एहिसँ तीन प्रकारक वस्तु बहराएल । पहिल, नियमित वा परम्परागत मैथिली नाटक जाहिमे ढाँचा संस्कृत नाटकक छल किन्तु भाषा किछु ने किछु मैथिली आवि गेल । दोसर एक तरहक अनियमित मैथिली नाटक जाहिमे राम, कृष्ण, महादेव वा अन्य कोनो प्रसिद्ध चरित नायकक जीवन बीच-बीचमे गीत दैत गद्यालापक माध्यमसँ वर्णित रहैत छल आ संस्कृत नाटकक परम्परा चरमराइत सन रहैत छल । तेसर, एक अन्य प्रकारक मैथिली नाटक जे स्वतन्त्र रूपक गीतिनाट्य सदृश होइत छल आ लौकिक जीवन सम्बन्धी गीतसँ गुम्पित होइत छल ।



पंचम् अध्याय

उपसंहार

संस्कृत नाटक परम्परामे मैथिली नाटकक उद्भव ओ क्रमिक विकास भेल अछि । आरम्भमे जे मैथिली नाटक लिखल गेल ओ संस्कृतोक्त नाटक मानल जाइत अछि । ओहिमे संस्कृतक प्राचीन नाटक जकाँ संस्कृत ओ प्राकृतक प्रयोग कथोपकथनमे अछि । ओहिमे मैथिली गीतक नव प्रयोग होयबाक कारणे एहि तरहक नाटककेँ मैथिली नाटक कहल जाइत अछि । एहि कोटिक नाटकमे सबसँ प्राचीन अछि कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर (१२८०-१३४० ई.) क मैथिली धूर्तसमागम । एहिमे प्रसङ्गानुसार मैथिली गीत बीच बीचमे देल गेल अछि । सङ्गीत ओ नृत्य दुनू नाटकक रूपमे मिलल अछि । मैथिलीक गीतमे सेहो कथोपकथन अछि । महाकवि विद्यापति (१३६०-१४४८ ई.) विरचित गोरक्षविजय नाटक एही परम्परामे रहितहुँ भाषा नाटकक दृष्टिसँ विशेष महत्त्व रखैत अछि । संस्कृत-प्राकृतक कथोपकथन सदृश मैथिली गीतक एहिमे स्वतन्त्र अस्तित्व अछि अर्थात् नाटकक ओ अभिन्न अङ्ग अछि । एहि सम्बन्धमे डा० जयकान्त मिश्रक कथन उल्लेखनीय अछि - ई (गोरक्षविजय) भाषा नाटक थिक, संस्कृत नाटक नहि थिक तकर प्रमाण एहिसँ बाढि की भऽ सकैछ जे कवि भाषामे सेहो नान्दी करैत छथि । से मात्र नदीद्वारा गवाओल प्राकृतक मङ्गल गीत नहि अछि । की कोनो संस्कृत नाटकमे प्राकृतक नान्दी संस्कृत नान्दीसँ पूर्व एकदम आरम्भमे भेटैत अछि ? एहि युगक नाटकक ई महान उपलब्धि थिक जे नाटकक क्षेत्रमे मैथिली भाषाक प्रवेश भेल । एहिसँ पूर्व मैथिलीक भाषाक प्रयोग नाटकमे होइत छल से मात्र गीतक रूपमे आ ओहि गीतकेँ नाटकक कथानक, कथोपकथन आ चरित्रचित्रणसँ सम्बन्ध नहि रहैत छल । उहि युगक नाटकसँ मैथिली भाषाक नाटकीय क्षेत्रमे जे प्रवेश भेल से परवर्ती विद्वान लोकनिकेँ मार्गदर्शन कयलक जकर परिणाम स्वरूप मैथिली नाटक आधुनिक युग धरिमे अपन पूर्ण रूपमे आएल अछि । ई एहि युगक नाटकक ।

महान देन अछि। एहि युगक नाटक आधुनिक विशाल मैथिली नाटकक वटवृक्षक बीजक रूपमे काज कयलक ।

मध्ययुगमे आबि मैथिली नाटकक वटवृक्षमे तीन शाखा भेल ।
(१) नेपालमे विकसित मैथिली नाटक (२) असाममे विकसित मैथिली नाटक
(३) मिथिलामे विकसित मैथिली नाटक ।

नेपालमे मैथिली नाटकक प्रचार मध्यकालमे सत्रहम् शताब्दीक आरम्भसँ अठारहम् शताब्दीक द्वितीय चरण धरि रहल । एहि ठाम भाषा नाटकक एक नव प्रणाली विकसित भेल जे संस्कृत नाटककेँ निरस्त कए देलक । क्रमहि संस्कृतक प्रयोग लुप्त होइत गेल मुदा तैओर किछु दिन धरि संस्कृत नाटकक ढव प्रचलित रहल । अन्ततः मैथिलीक स्थान प्रमुख भए गेल ।

नेपालमे मैथिली भाषाक प्रचारक एकटा मुख्य कारण मिथिलापर मुसलमानक आक्रमण थिक । मुसलमानसभक भारतमे आठम् शताब्दीक आरम्भमे प्रवेश भेल छल मुदा ओहि समयमे मुसलमानसभद्वारा भेल सिंधक विजयसँ धार्मिक भावनापर तेहन चोट नहि पड़ल छल । एगारहम् शताब्दीक महमूद गजनीक विजयसँ भारतीय जीवनपर गंभीर असर पड़ल । १३म् शताब्दीक आरम्भमे भारतपर मुसलमानसभक शासन स्थापित भए गेल । हजारो हिन्दू धर्मरक्षार्थ नेपालमे आबि बसि गेल । एही क्रममे कतेको मैथिल विद्वान एवं सङ्गीतज्ञलोकनि सेहो नेपाल आबि शरण लेलनि आ अनेक कारणेँ राजाश्रय पओलनि ।

नेपाल ओ मिथिला दुनूक पारस्परिक सम्बन्ध अतीत कालसँ परम अन्तरङ्ग आ सौहार्दपूर्ण रहल अछि । पहिने नेपालसँ भारत दिस जएवाक मार्ग मिथिले वाटे छलैक । तेँ जतेक बेर मिथिलापर मुसलमानसभक आक्रमण भेल मिथिलाक राजलोकनि नेपालमे शरण लेलनि । राजालोकनिक सङ्ग हुनक आश्रित वा आश्रयक अन्वेषी विद्वानलोकनि सेहो नेपाल गेल करथि ।

पाँजिक प्रसिद्ध व्यवस्थापक म० हरिसिंह देव दिल्लीक मुसलमान बादशाह गयासुद्दीन तुगलकशाहसँ पराजित भए १३२४ ई. मे नेपालमे शरण लेलनि पछाति भक्तपुरक समीप अपन स्वतन्त्र राज्यक स्थापना कयलनि । ई घटना नेपालमे मैथिली भाषाक प्रचारक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण बनल । एकर परिणाम स्वरूप मिथिला आ नेपालक सम्बन्ध आओर सुदृढ बनि गेल । म० हरिसिंह देव काव्यक रसिक छलाह । हुनक दरबारमे मैथिल विद्वानसभक आवागमन सर्वथा स्वभाविक छल ।

म० हरिसिंह देवक देहावसान पश्चात हुनक दूटा बालक महाराज मानसिंह (शक्ति सिंह) ओ महाराज श्यामसिंह देव सत्ताइस वर्ष धरि शासन

कयलनि । हुनका सभक समयमे मैथिल विद्वानसभक सम्पर्क ओहुना स्वभाविक छल, किन्तु तकरबाद स्थापित मल्लवंशीय शासन कालमे सेहो ई सम्पर्क बनल रहल तकर एकटा कारण इहो अछि जे महाराज श्यामसिंह देवक पुत्र नहि छलनि ओ अपन एकमात्र पुत्रीक विवाह नेपालक एक प्राचीन राजपरिवारक एक सम्बन्धीसँ कराए हुनका अपन उत्तराधिकारी बनौलन्हि जे परिवार सम्प्रति मिथिलामे बसैत अछि । एहि सम्बन्धसँ नेपालक राजदरबारमे मैथिलक प्रतिपत्ति खूब बढल आ मैथिली नेपालमे सभ क्षेत्रमे प्रिय भेल एवं प्रतिष्ठा पओलक ।

श्यामसिंह देवक जमाय जयभद्र मल्लक वंशज जयस्थिति मल्ल १३८३ ई. मे सम्पूर्ण नेपाल (काठमाण्डू उपत्यका)क राजा बनलाह । ई अनेक तरहक सुधारक कार्य कयलनि जाहिसँ नेपालक इतिहासमे प्रसिद्ध भेलाह । भूमि, जाति आदि विषयक व्यवस्था करवाक लेल समाजशास्त्रक विशेषज्ञक सम्मति लेब आवश्यक बुझि ई मिथिलासँ पाँच पण्डित कीर्तिनाथ उपाध्याय, रघुनाथ झा, श्री नाथ भट्ट, महिनाथ भट्ट आ रमानाथ झाकेँ आमन्त्रित कयने छलाह । साहित्य आ गान बजानमे सेहो ई खूब रुचि लैत छलाह । ई नाट्यकलाक बड पैघ पृष्ठ पोषक छलाह । अपन ज्येष्ठ पुत्र धर्ममल्लक जन्मोत्सवक शुभअवसरपर रामायण नामक नाटकक अभिनय करौलन्हि । हुनके (धर्ममल्ल) व्रतबन्धक समयमे राघवानन्द नाटक देखाओल गेल । एहिना धर्ममल्लक राज्याभिषेकक अदसरपर सेहो नाटक प्रदर्शनक सूचना भेटैत अछि ।

जयस्थिति मल्लक मृत्यु पश्चात् नेपालक सांस्कृतिक क्रियाकलापमे गतिरोध उत्पन्न भए गेल । एकर कारण ई भऽ सकैत अछि जे ओहि कालमे नेपालक प्रभुसत्ता विषम स्थितिमे छल । हिनक सन्तति यक्ष मल्ल बड प्रतापी राजा भेलाह जे मगध धरि विजयध्वज फहरौने छलाह । हिनक मृत्यु पश्चात् नेपालक राज्य तीन भागमे बाँटि गेल (१) भक्तपुर (२) कान्तिपुर (३) बनेपा । किछु दिनक बाद बनेपाक राजा रणमल्लक एक मात्र पुत्र विजय मल्लक देहान्त हुनक जीवनकालहिमे भए गेलाक बाद भक्तपुरक राजा सुवर्ण मल्ल बनेपाकेँ भक्तपुरमे मिलाए लेलनि । कान्तिपुरक राज्य हरिहरसिंहक समयमे आवि दू भागमे बाँटि गेल — (१) कान्तिपुर (२) ललितपुर । ई तीनू राज्यशाखा मल्लवंशीय शासनक अन्तिम समय धरि कायम रहल । एहि तीनू ठाम मैथिली नाटकक रचना स्वतन्त्र रूपसँ भेल ।

भक्तपुरमे :-

नेपालमे सर्वप्रथम मैथिली नाटकक रचना एहि ठाम भेल विश्वमल्लक शासनकालमे । नेपालक सर्वप्रथम मैथिली नाटक “विद्याविलाप”क ई विशेषता

अछि जे एहिमे मैथिली गद्यक प्रयोग गेल अछि । विश्वमल्लक उत्तराधिकारी तैलोक्य मल्लक आश्रयमे कृष्ण चरितपर लिखल गेल एकटा खण्डित प्रति उपलब्ध होइत अछि जकर भणितामे रामचन्द्र आ वीरनारायणक नामोल्लेख भेटैत अछि । एहि नाटकक गीत जयदेव आ विद्यापतिसँ प्रभावित अछि ।

तैलोक्य मल्लक बालक जगज्ज्योतिर्मल्ल सङ्गीत तथा साहित्यक बड प्रेमी छलाह । ई सङ्गीत विषयक अनेक ग्रन्थक रचना कयलनि । हिनका दरबारमे मैथिली भाषाक पूर्ण चलती छल । वंशमणि नामक मैथिल पण्डित हिनका दरबारमे आश्रय पओने छलाह । हिनक भणितासँ युक्त तीन गोटा नाटक उपलब्ध होइत अछि । वास्तवमे मैथिली नाटकक विकसित परम्पराक शुरुवात हिनकहि समयसँ भेल । एक रकारण इहो भऽ सकैत अछि जे ओ स्वयं पैघ विद्वान छलाह ।

जगज्ज्योतिर्मल्ल पश्चात् हिनक पुत्र नरेन्द्र मल्लक राज्यकालमे कोनो नाटकक सूचना नहि भेटैत अछि किन्तु नरेन्द्र मल्लक उत्तराधिकारी गन्धर्व विद्यागुरु नामे प्रख्यात जगत्प्रकाश मल्ल जे स्वयं सुकवि आ नाटककार छलाह हुनका समयमे मैथिलीक बड उन्नति भेल । ई अनेक नाटकक रचना कयलनि । हिनका कवितामे बड रुचि छलैन्हि आ अपनाकेँ कवि सम्राट कहैत छलाह । “पद्य समुच्चय” तथा नानार्थ-देव-देवी गीतसंग्रह नामक गीतसंग्रह हिनका भणितासँ उपलब्ध होइत अछि ।

जगत्प्रकाशमल्लक पश्चात् हुनक ज्येष्ठ बालक जितामित्रमल्ल राज्यक उत्तराधिकारी भेलाह । हिनका नामक शुरुमे सुमति जोडल गेलाक हिसावेँ ई

1. (क) नेपालक कतेको इतिहासमे हिनकर नाम नरेश मल्ल कहल गेल अछि ।

— इतिहास, [कक्षा ६-१०] जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र,
११ म् संस्करण, पृ. - ३८

(ख) सूर्य विक्रम शवाली स्पष्टशब्दमे जगत्प्रकाश मल्लकेँ जगज्ज्योतिर्मल्लक पुत्र कहलनि अछि । हुनक कहव छैन्हि जे प्रतापमल्लक ने० सं० ७६६ सन् १६४६ ई.क हुनुमान ढोकाक शिलालेखमे रहल निम्न पदसँ नरेश मल्ल राजा होयवाक भ्रम भेल अछि मुदा एहि पदमे भक्तपुरकेँ भक्त ग्राम कहि हेय दृष्टि राखल गेल अछि आ ग्राम नरेश कहि अवहेलना कएल गेल अछि भक्त ग्राम नरेश आ मल्लनृपति अलग अलग अर्थ लगौलासँ नरेश मल्ल नामे नहि रहैत अछि ।

“भक्तग्रामनरेश मल्लनृपतिदं त्वेभमेनं भिया ।”

बहुत बुद्धिमान छलाह से अनुमान होइत अछि । इहो वड़ उत्साही लेखक छलाह । हिनको समयमे अनेक नाटकक रचना भेल । हिनक नाटकसभमे अनेक शिष्ट भाषा प्रति उदार भाव राखल गेल अछि । पूर्वक आख्यानसभकेँ वड़ सहज एवं प्रवाहमय तरीकासँ प्रस्तुत कयने छथि ।

सुमतिजितामित्रमल्लक उत्तराधिकारी भूपतीन्द्र मल्ल सफल राजनीतिज्ञ छलाह । भक्तपुरक राजालोकनिमे हिनकर विशेष स्थान अछि । हिनका द्वारा निर्माण कएल गेल पंचपन खिड़कीयुक्त दरबार आ पंचमहला (न्यातपोल) मन्दिर एखनहु अद्वितीय अछि । हिनका द्वारा रचित मैथिली भाषाक एक सय गीतक एकटा संग्रह वीर पुस्तकालयमे सुरक्षित अछि । हिनका शासनकालमे अनेक नाटकक रचना भेल जाहिमे गीतक प्रधानता अछि आ एहि नाटक सभमे जे विविधता अछि से पूर्वक नाटक सभमे दुर्लभ अछि ।

भूपतीन्द्र मल्लक बालक भक्तपुरक अन्तिम मल्लवंशीय शासक रणजीत मल्ल अपन पिता समान कलाप्रेमी तथा साहित्यिक प्रतिभा सम्पन्न छलाह । हिनक दीर्घ शासनकालमे सबसँ अधिक नाटकक रचना भेल जाहिमेसँ राम चरित तथा माधव-कामकन्दला प्रकाशित अछि । हिनका समयक नाटकसभमे अन्य भाषा सभक सेहो प्रभाव पड़ल अछि ।

काठमाण्डूमे

यक्षमल्लक पुत्र रत्नमल्लद्वारा स्थापित एहि राज्यशाखाक राजा नरेन्द्रमल्लक समयसँ मैथिली नाटकक रचना उपलब्ध होइत अछि । ई कला - संस्कृतिक वड़ प्रेमी छलाह । ई सात प्रकारक नृत्य चलीलनि । हिनका समयक “रामायण” आ “महाभारत” नाटक भेटैत अछि । हिनक उत्तराधिकारीक समयमे नाटक रचनाक कोनो सूचना नहि भेटैत अछि ।

एहि ठामक नरेश लक्ष्मीनरसिंह मल्लक बालक प्रताप मल्ल बहुत प्रतापी राजा भेलाह । ई स्वयं अनेक शास्त्र ओ भाषाक ज्ञाता छलाह । हिनक मैथिली पद्यसभ जे मैथिली अभिलेख गीतमालामे प्रकाशित भेल अछि से हिनक कवित्व शक्तिक परिचायक थिक । ई अपन मुद्रापर ‘कविन्द्र’ उपाधि अङ्कित करौलैन्हि । हिनका समयक मैथिलीक दू गोटा नाटक गीतदिगम्बर आ मुदित-मदालसा भेटैत अछि जाहिमे मुदितमदालसाक अधिकांश भाग संस्कृत - प्राकृतमे अछि ।

एकर बाद पार्थिवेन्द्र मल्लक शासनकालमे रचित ‘पञ्चराक्ष’ नामक एकटा नाटकक सूचना भेटैत अछि आ पार्थिवेन्द्र मल्लक बालक भूपालेन्द्र मल्लक शासनकालक धर्मदत्त चरित आ नल चरित दूटा नाटक भेटैत अछि । भूपालेन्द्र

मल्लक बालक भास्कर मल्लदेव एकटा गीतमय नाटकक रचना कयलनि । एकर बाद जगज्जयमल्लक शासनकालमे अभिनव प्रबोध चन्द्रोदय आ विद्याविनोद नाटकक रचना भेल ।

ललितपुरमे:—

एहि शाखाक संस्थापक सिद्धिनरसिंह मल्ल मैथिली नाटकक प्रथम प्रणेता भेलाह । ई बहुत धार्मिक प्रवृत्तिक राजा छलाह । अनेको मन्दिर, धारा (पनिघट) तथा पोखरिक निर्माण करौलैन्हि हिनकाद्वारा निर्माण कएल गेल पाटनक कृष्ण मन्दिर नेपालमे एखनहु कारीगरीक एकटा नमूना अछि । हिनका साहित्यक सेहो ओहने सौख छलैन्हि । हिनका समयमे हरिश्चन्द्रनृत्यम् आ गोपीचन्द्र नामक मैथिली नाटकक रचना भेल । हिनक पुत्र श्रीनिवास मल्लक समयमे ललितकुवलययात्रा आ तारकासुरवध नाटकक रचना भेल । एकर बाद योगनरेन्द्रमल्लक समयमे 'महाभारत' नामक नाटकक रचना भेल तथा योगनरेन्द्र पश्चात् हुनक उत्तराधिकारी (दौहित्र) विष्णुमल्लक समयमे उषाहरण (कृष्णचरित नाटक) नाटकक रचना भेल ।

बनेपामे:—

एहि राज्य शाखाक संस्थापक यक्षमल्लक पुत्र रणमल्ल छलाह । ई ओहि ठाम २१ वर्ष धरि शासन कयलनि मुदा हिनक जीवन कालहिमे एक मात्र पुत्रक निधन भए गेलाक बाद ई राज्य शाखा भक्तपुरमे मिलाए लेल गेल । एतबा थोड़ समयमे सेहो एहि ठाम 'पाण्डव-विजय' आ 'रूपमञ्जरी-परिणय' नामक दूटा नाटकक रचना भेल ।

नेपालक मैथिली नाटककारकेँ संस्कृत साहित्यक सम्यक ज्ञान छलैन्हि जकर परिणामस्वरूप नाटकक लक्षणकारलोकनि नाटकक जे उपकरण वतौने छथि एहि कालक नाटकसभमे ओहि उपकरणसभक समावेश भेल अछि मुदा सम्पूर्ण रूपमे अक्षरशः तकर पालन नहि भेल अछि । कतहु-कतहु ओहिमे सामान्य हेरफेर सेहो भेल अछि ।

एहि कालक जतेक नाटक उपलब्ध होइत अछि अधिकांश नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । रामायण, महाभारत, पुराण आदि कथाक स्रोत रहल अछि । एकर अतिरिक्त प्रसिद्ध कथापर आधारित नाटक सेहो भेटैत अछि । जेना— विद्याविलाप आ माधवानल-कामकन्दला प्रसिद्ध कथापर आधारित नाटक अछि । मुदा एहि तरहक नाटकक संख्या बहुत कम अछि । एहि नाटकसभक कथावस्तुमे शृङ्गार रस मुख्य रूपमे आएल अछि मुदा अन्यान्य रससभक सेहो सन्तुलित प्रयोग कएल गेल अछि जे पाठक वा दर्शकक अभिरुचि सतत

बनौने रहैत अछि । पौराणिक नाटकसभक प्रमुख पात्र दैवी वा अवतारी पुरुष रहल छथि मुदा प्रख्यात कथापर आधारित नाटकमे नायक अवतारी पुरुषक वदला सामान्य पुरुष छथि। विद्याविलापमे नायक सुन्दर काञ्चीदेशक राजकुमार छथि आ नायिका उज्जैनक राजा वीरसिंहक बेटी राजकुमारी विद्यावती । माधवानल-कामकन्दलामे नायक माधवानल पुष्पापतीक राजा गोविन्द चन्द्रक दरबारमे रहएवला एक युवक ब्राह्मण छथि आ नायिका कामकन्दला वेश्या । एहि कालमे पात्र संख्या सिमित नहि छल । किछु नाटकमे पात्र संख्या कम अवश्य छल मुदा अधिकांश नाटकमे पात्र संख्या बहुत-बहुत छल । उपवनमे आनन्दोत्सव तथा युद्ध प्रकरणमे अनेक पात्र नाटकमे भाग लेथि । स्त्री पात्रक संख्या बहुत कम रहैत छल । नायिकाक सहचरी किछु स्त्री पात्रक अलावा नाटकमे अन्य स्त्री पात्रक भूमिका नहि जकाँ छल ।

एहि कालक नाटकक रचना अभिनयक हेतु होइत छल तेँ मञ्चनक समय ओहिमे कोनो हेरफेर करवाक आवश्यकता नहि छलैक । नाटकक कथोपकथन गद्य-पद्यमय होइत छल । एहि नाटकसभमे गीतक संख्या अधिक अछि तथापि गद्यालाप सेहो बड़ परिष्कृत । एहि कालमे रचित गीतिनाट्य-सभमे सेहो कथावस्तु आगू वढ़एवाक हेतु गद्यालापक प्रयोग भेटैत अछि ।

एहि समयक प्रत्येक नाटकक आरम्भमे 'श्री नृत्यनाथाय नमः', 'ॐ नमः श्री नृत्यनाथाभ्याम्', 'ॐ नमः श्री नटेश्वराय' कहैत आरम्भिक मञ्जल कएल गेल अछि । तकर बाद नान्दी श्लोक आ नान्दी गीत अछि जाहिमे मुख्यतः शिव पार्वतीक स्तुति कएल गेल अछि । नान्दी गीतक सङ्ग प्रायः अष्टमञ्जल आओर पुष्पाञ्जली सेहो भेल अछि । सूत्रधारक प्रवेश गीत पश्चात् नाटकक प्रस्तावना होइत अछि जाहिमे पूर्वक नाटकमे संस्कृत प्राकृतक प्रयोग भेल अछि मुदा पाछू मैथिलीक प्रयोग सेहो भेल अछि । प्रस्तावनाक क्रममे सूत्रधार राज-वर्णना आ नटी देशवर्णना प्रस्तुत करैत अछि ।

नाटकक विभाजन अङ्कमे भेल अछि मुदा ई विभाजन सामान्यतः एक दिनमे सम्पन्न होयबाक योग्य अंशक आधारपर कएल गेल अछि । अङ्क विभाजनमे एक रूपता नहि अछि । कोनो एक अङ्क नाटक अछि त कोनो ४३ अङ्कक । अङ्ककेँ पुनः दृश्यमे विभाजन करवाक चेष्टा नहि कएल गेल अछि । एहि नाटकसभमे मुख्य रूपसँ संस्कृत एवं मैथिली भाषाक प्रयोग अछि । किछु नाटकमे कतहु-कतहु प्राकृतक प्रयोग सेहो अछि । मैथिलीक प्राचीन आ आधुनिक दुनू रूप भेटैत अछि एकर अतिरिक्त वज्जला, नेवारी, ब्रजभाषाक मिश्रण सेहो भेटैत अछि ।

एहि नाटकसभक रचनाक उद्देश्य देवी-देवताक प्रित्यर्थ कहल गेल अछि मुदा हमरा जनैत मैथिली भाषाक प्रचार आ साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावना सुदृढ करव सेहो एहि कालक मैथिली नाटक रचनाक उद्देश्य छल । एहि नाटकमे मञ्च-निर्देश चित्र-भिन्न प्रकारक अछि । कतहु एहन मञ्च-निर्देश अछि जे केवल बाद्य वाजए ने कण्ठ सङ्गीत हुअए ने वार्तालाप आ ने कोनो आने क्रिया । हरगौरी विवाहमे बीच-बीचमे एहन निर्देश देल गेल अछि जे अभिनेता मञ्चक कोन भागमे ठाढ़ भए बाजत, नाचत ओ गाओत । एहि निर्देशसँ ई अनुमान लगैत अछि जे नाटककार नाटकक प्रभावकारिताक लेल सचेष्ट रहैत छलाह ।

एहि नाटकक गीतसभ विभिन्न राग-रागिनीमे बान्हल अछि जे रचयिताक सङ्गीतज्ञताक परिचायक थिक । सङ्गहि एहि कालक नाटकमे अन्य गीतकारक प्रसिद्ध गीत सेहो प्रयोग कएल गेल अछि । गीतक प्रधानता रहल एहि नाटकसभमे विविध प्रकारक गीत अछि तहिना स्तरमे सेहो विविधता अछि । एहि कालक गद्यमे भाषाक स्तरक हिसावसँ विविधता त अछिए अन्य भाषा जेना- वङ्गला, नेवारी, ब्रजभाषाक मिश्रण सेहो कतहु-कतहु भेटैत अछि ।

एहि नाटकसभक नाटककारक रूपमे प्रायः राजाक नामोल्लेख भेटैत अछि मुदा नाटकक गीतसभक भणितामे राजाश्रित कविक नाम भेटैत अछि । नाट्य लक्षणकार नाटकमे जे दृश्य वर्जित कएने छथि एहि नाटकसभमे तकर पूर्ण रूपेण पालन नहि भेल अछि । एहि कालक नाटक संस्कृत नाटकक परम्परा अनुकूल सुखान्त अछि ।



सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

(मैथिली)

- इन्दिरा झा — आधुनिक मैथिली नाटकमे चरित्र सृष्टि, स्याती प्रकाशन, पटना, १९८७ ई. ।
- कृष्णकान्त मिश्र — मैथिली साहित्यक इतिहास, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, प्र. सं., १९५५ ई. ।
- जयकान्त मिश्र — मैथिली साहित्यक इतिहास, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, प्र. सं. १९८८ ई. ।
- ” (संपादक) — विद्याविलाप, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, प्रयाग, प्र. सं. १९६५ ई. ।
- जयकान्त मिश्र — मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव, मैथिली अकादमी, पटना, प्र. सं. १९७८ ई. ।
- दुर्गानाथ झा ‘श्रीष’ — मैथिली साहित्यक इतिहास, भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, परिवर्द्धित नवीन संस्करण, १९८३ ई. ।
- देवकान्त झा — मैथिली दशरूपक, मैथिली अकादमी, पटना, प्र. सं., १९७९ ई. ।
- प्रफुल्ल कुमार ‘मौन’ — नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, मैथिली साहित्य परिषद, विराटनगर, नेपाल, २०२२ वि. सं. ।
- प्रेम शङ्कर सिंह — मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, प्र. सं., १९८१ ई. ।
- ” — मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्च, मैथिली अकादमी, पटना ।

- बालगोविन्द झा 'व्यथित' — मैथिली साहित्यक इतिहास, भारती भवन, पटना, प्र. सं., १९६१ ई. ।
- विद्यापति — कीर्तिलता, डा. बाबूराम सक्सेनाद्वारा संपादित, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्र. सं. ।
- रामदेव झा (सं.) — जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत हरगौरी विवाह नाटक, नूतन पुस्तक भवन, दरभङ्गा, तृ० सं०, १९६८ ई. ।
- लेखनाथ मिश्र — मैथिली नाटकक उद्भव अग्रे विकास, आशुतोष मिश्रद्वारा प्रकाशित, प्र० सं०, १९७८ ई. ।
- सुरेन्द्र झा 'सुमन' — मैथिली काव्यपर संस्कृतक प्रभाव, मैथिली अकादमी, पटना, प्र. सं., १९७७ ई. ।

(नेपाली)

- इतिहास — जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र, भक्तपुर, एघारौं संस्करण, २०५० वि. सं. ।
- (कक्षा ६-१०)
- नेपाल परिचय — पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, त्रि. वि., काठमाण्डू, प्रथम संस्करण, २०४१ वि. सं. ।
- पिताम्बरलाल यादव — नेपालको राजनैतिक इतिहास, आठौं संस्करण, राजविराज, २०५० वि. सं. ।
- बालचन्द्र शर्मा — नेपालको ऐतिहासिक रूपरेखा, चतुर्थ संस्करण, विजया, २०३३ वि. सं. ।
- सूर्य विक्रम ज्ञवाली — नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास, रायल नेपाल एकेडमी, काठमाण्डू, प्र.सं. २०११ वि.सं. ।

(हिन्दी)

- उदयभानु सिंह (भाषांतरकार) — संस्कृत नाटक, मोतीलाल बनारसीदास, प्रथम रूपान्तर, १९६५ ई. ।
- गोविन्द चातक — रङ्गमञ्चः कला और दृष्टि, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं., १९७६ ई. ।
- चन्द्रलाल द्वे — हिन्दी नाटकों का रूप विधान और वस्तु विकास, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली ।

- दशरथ ओझा — हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, २०११ वि. सं. ।
- दशरथ झा एवं गुरुप्रसाद कपूर — हिन्दी नाटक की रूपरेखा, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली, १९६२ ई. ।
- बाबुराम सक्सेना (सं) — कीर्तिलता, नागरि प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण ।
- भोलाशङ्कर व्यास (सं) — हिन्दी दशरूपक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, १९६७ ई. ।
- मनहर गोपाल भार्गव एवं श्री राकेश — रस-दोष-छन्द-अलंकार-निरूपण, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ, सप्तम् संस्करण ।
- वाचस्पति गेरोला — भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनय दर्पण, संवर्तिका प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९६७ ई. ।
- शिवप्रसाद सिंह — कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९५५ ई. ।
- सुरेन्द्र नाथ दिक्षित — भरत और भारतीय नाट्यकला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९७० ई. ।

(संस्कृत)

- ब्रजरत्न दास (सं) — भारतेन्दु ग्रन्थावली (भाग - १), प्र. सं. वि. सं. २००७
- मनमोहन घोष (सं) — नाट्यशास्त्र, मनीषा ग्रन्थालय, कलकत्ता, प्र. सं. १९६७ ई.
- रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर [टी] — मालती - माधव, मुम्बा पुरवर्ती राजकीय ग्रन्थशालाधिकारिणी, प्रथम संस्करण ।
- राम प्रताप त्रिपाठी (सं) — मालविकाग्निमित्रम्, कालिदास ग्रन्थावली, द्वितीय खण्ड, वि. ताव महल प्रा० लि०, इलाहाबाद, वि. सं. २०२२
- विश्वनाथ — साहित्यदर्पण, पं शालिग्रामद्वारा सम्पादित, मोतीलाल बनारसी दास, १९५६ ई.
- सीताराम चतुर्वेदी — अभिनव नाट्यशास्त्र, विक्रम परिषद्, काशी, १९५१ ई. ।

(English)

- A. R. Macdonell — History of Sanskrit Literature,
D. Appleton and company,
London, 1929.
- A. B. Keith — The Sanskrit Drama, oxford
University Press, 1924.
- A. Weber — The History of Indian
Literature, Translated from
The 2nd German Edition by
John Mann and Theodor
Zachariac, popular edition,
London, 1940.
- D. Wright — History of Nepal, University
Press, London, 1877.
- D. R. Regmi — Ancient and Medieval Nepal,
Kathmandu, 1952.
- Ramlal Kanhaiyalal yajnik — The Indian Theatre, G. Allen
Unwin Ltd. London, 1933
- S. N. Das Gupta & — A History of Sanskrit Literature
S. K. Dey. University of Calcutta, 2nd
Edition, 1962.



डा. चन्देश्वर शाह

जन्ममिति

२८ जनवरी १९४२ ई.

शिक्षा

विद्यावारिधि

वर्तमान ठेगाना

जनकपुर न.पा. - ८ (दशरथनगर) जि. धनुषा, नेपाल ।

